

KĀVYĀDARŚA

EDITED BY
ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A.



UNIVERSITY OF CALCUTTA
1939

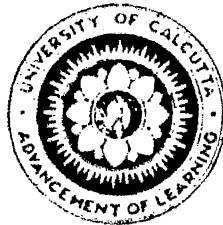
KĀVYĀDARŚA

SANSKRIT AND TIBETAN TEXT

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A

CALCUTTA UNIVERSITY



PUBLISHED BY THE
UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

CONTENTS

Preface xi

CHAPTER I

Ślo

मङ्गलाचरण (मङ्गलार्चनम्)	...
वाक्प्रशंसा (वक्त्रप्रशंसा)	...
काव्यप्रशंसा (काव्यप्रशंसा)	...
दृष्टकाव्यनिन्दा (दृष्टकाव्यनिन्दा)	...
काव्यलक्षण (काव्यलक्षणम्)	...
काव्यभेद (काव्यभेदः)	...
महाकाव्यलक्षण (महाकाव्यलक्षणम्)	...
गद्यकाव्यभेद (गद्यकाव्यभेदः)	...
मिश्रकाव्यभेद (मिश्रकाव्यभेदः)	...
श्लेषगुण (श्लेषगुणः)	...
श्लेषगुणलक्षण (श्लेषगुणलक्षणम्)	...
प्रसादगुणलक्षण (प्रसादगुणलक्षणम्)	...
समतागुणलक्षण (समतागुणलक्षणम्)	...

	Sloka
चटूपमा (षट्संघर्षे ऽपि)	... 35
तत्त्वाख्यानोपमा (देहेन संवेद्यं संघर्षे ऽपि)	... 36
असाधारणोपमा (अक्षरं संघर्षे ऽपि)	... 37
अभूतोपमा (भूतं संघर्षे ऽपि)	... 58
असम्भावितोपमा (अक्षरं संघर्षे ऽपि)	... 39
बहूपमा (षट्संघर्षे ऽपि)	... 40
विक्रियोपमा (कृष्णं दृष्ट्वा ऽपि)	... 41
मालोपमा (श्वेतं संघर्षे ऽपि)	... 42
वाक्यार्थोपमा (वाक्यं संघर्षे ऽपि)	... 43
प्रतिवस्तूपमा (अक्षरं संघर्षे ऽपि)	... 46
तुल्ययोगोपमा (अक्षरं संघर्षे ऽपि)	... 48
हेतूपमा (भूतं संघर्षे)	... 50
उपमादोषविचार (संघर्षेऽपि संघर्षेऽपि संघर्षेऽपि)	... 51
उपमाबोधकशब्द (संघर्षेऽपि संघर्षेऽपि संघर्षेऽपि)	... 57
रूपकलक्षण (वाक्यार्थोपमा)	... 65
समस्तरूपक (वाक्यार्थोपमा)	... 65
व्यस्तरूपक (वाक्यार्थोपमा)	... 66

xi

2

	Sloka
दीपक (गणन-पुन)	96
मालादीपक (पुन-पुन- गणन-पुन)	106
विरुद्धार्थदीपक (गणन-पुन- पुन-पुन- गणन-पुन)	108
एकार्थदीपक (पुन-पुन-पुन-पुन-पुन)	110
स्तिष्ठार्थदीपक (पुन-पुन- पुन-पुन- गणन-पुन)	112
आवृत्तिभेद (पुन-पुन- पुन-पुन)	115
आक्षेपभेद (पुन-पुन-पुन-पुन)	119
धर्माक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	127
धर्म्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	128
कारणाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	130
कार्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	133
अनुज्ञाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	134
प्रभुत्वाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	136
अनादराक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	138
आशीर्वचनाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	140
परुषाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	142
साचिष्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	144

CONTENTS

xi

	Sloka
यत्नाक्षेप (२२८'२२९' २३०'२३१')	... 146
परवशाक्षेप (२३२'२३३' २३४'२३५')	... 148
उपायाक्षेप (२३६'२३७' २३८'२३९')	... 150
रोषाक्षेप (२४०'२४१' २४२'२४३')	... 152
अनुक्रोशाक्षेप (२४४'२४५' २४६'२४७')	... 154
अनुशयाक्षेप (२४८'२४९' २५०'२५१')	... 156
संशयाक्षेप (२५२'२५३' २५४'२५५')	... 158
श्लिष्टाक्षेप (२५६'२५७' २५८'२५९')	... 160
अर्थान्तराक्षेप (२६०'२६१' २६२'२६३')	... 162
हेत्वाक्षेप (२६४'२६५' २६६'२६७')	... 164
अर्थान्तरन्यास (२६८'२६९' २७०'२७१')	... 166
अर्थान्तरन्यासभेद (२७२'२७३' २७४'२७५' २७६'२७७')	... 167
व्यतिरेक (२७८'२७९' २८०'२८१')	... 177
एकव्यतिरेक (२८२'२८३' २८४'२८५')	... 178
उभयव्यतिरेक (२८६'२८७' २८८'२८९')	... 180
सश्लेषव्यतिरेक (२९०'२९१' २९२'२९३')	... 182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (२९४'२९५' २९६'२९७' २९८'२९९')	... 183

प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (རྟོགས་པར་གྱུར་པ་མཚུངས་པ་ ལྷོག་པ་ཅན)	...	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद (མཚུངས་པའི་ ལྷོག་པ་ཅན་གྱི་ དབྱེ་བ)	...	189
विभावना (ལྷིད་པ་ཅན)	...	196
समासोक्ति (བསྐྱས་པ་བཟོད་པ)	...	202
समासोक्तिभेद (བསྐྱས་པ་བཟོད་པའི་ དབྱེ་བ)	...	205
अपूर्वसमासोक्ति (སྒོན་མེད་བསྐྱས་པར་བཟོད་པ)	...	210
अतिशयोक्ति (སྤལ་དུ་གྱུར་བར་བཟོད་པ)	...	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा (སྤལ་དུ་གྱུར་བར་བཟོད་པའི་ བསྐྱགས་པ)	...	217
उत्प्रेक्षा (རབ་རྟོག་པ)	...	218
उत्प्रेक्षಾವ्यञ्जकशब्द (རབ་བདགས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ ལྷ)	...	231
हेतुभेद (ལྷཱིའི་ དབྱེ་བ)	...	232
सूक्ष्म (ལྷ་མོ)	...	257
लेश (ཏ)	...	262
क्रम (རིས་པ)	...	270
प्रेयरसवदूर्जखिलक्षण (དགའ་བ་ཉམས་ལྷན་གཟི་བཟིན་གྱི་ མཚན་མ)	...	272
पर्यायोक्त (རྣམ་གྱངས་བཟོད་པ)	..	292

CONTENTS

xiii

Sloka

समाहित (गुरुन्तुषकं)	...	295
उदात्त (गुंके)	...	297
अपहृति (वङ्गिन्नेर)	...	301
श्लेष (सुनं)	...	306
श्लेषभेद (सुनंमरिं नुमेन)	...	311
विशेषोक्ति (रुनंननंमहेनं)	...	320
तुल्ययोगिता (मरुन्मनंनंमहेनं)	...	327
विरोध (नमनं)	...	330
अप्रस्तुतप्रशंसा (सुनंमनंनंमहेनं)	...	337
व्याजस्तुति (मेनंमनंनंमहेनं)	...	340
निदर्शन (मेनंनंनंमहेनं)	...	345
सहोक्ति (रुनंनंनंमहेनं)	...	348
परिवृत्ति (मेनंनंनंमहेनं)	...	348
आशिसु (नैनंनंनंमहेनं)	...	354
संरुष्टि (मेनंनं)	...	356
संरुष्टिभेद (मेनंनंनंनंनंनंनं)	...	357

		Sloka
भाविक (दशोदस'प'तक)	...	360
भाविकभेद (दशोदस'प'तक'प्री' दशे'प)	...	361

CHAPTER III

यमक (त्रु'द'त')	...	1
गोमुत्रिका (प'प'द'प'त')	...	78
अर्द्धभ्रम (धु'द'प'त')	...	80
सर्वतोभद्र (गुरु'द'प'त')	...	80
स्वरस्थानवर्णनियम (दशु'द'स'प'त')	...	83
प्रहेलिका (प'प'त')	...	96
प्रहेलिकास्थान (प'प'त')	...	97
समागता प्रहेलिका (गुरु'द'प'त')	...	91
वञ्चिता प्रहेलिका (प'प'त')	...	91
व्युत्क्रान्ता, (त'प')	...	99
प्रमुषिता (प'प'त')	...	99
समानरूपा (त'प')	...	100
परुषा (त'प')	...	100
संख्याता (प'प'त')	...	101

CONTENTS

· xv

	Sloka
• प्रकल्पिता (२५'५६'१४'३९)	... 101
नामान्तरिता (३८'२०'२७'४५'५९)	... 102
निवृत्ता (५३'५४'५५)	... 102
समानशब्द (७५'५५'५५)	... 103
संमूढ (७६'५५'५५)	... 103
परिहारिका (७८'५५'५५)	... 104
एकच्छन्ना (७९'५५'५५)	... 104
उभयच्छन्ना (८०'५५'५५)	... 105
संकीर्णा (८१'५५'५५)	... 105
दोषविभाग (८२'५५'५५)	... 125
अपार्थ (८३'५५'५५)	... 128
व्यर्थ (८४'५५'५५)	... 131
एकार्थ (८५'५५'५५)	... 135
ससंशय (८६'५५'५५)	... 139
अपक्रम (८७'५५'५५)	... 144
शब्दहीन (८८'५५'५५)	... 148
यतिभ्रष्ट (८९'५५'५५)	... 152

	Sloka
वृत्तभङ्ग (स्त्रेव'स्त्रु'र'भ'स'व)	... 156
विसन्धि (स'ह'स'स'स्त्रु'र'व'व)	... 159
देशकालकलालोकन्यायागमविरोध (य्नु'व'द'दु'स'द'स'स'उ'व'द'द'द'व')	... 162
देशविरोधोदाहरण (य्नु'व'द'द'व'व'व'द'द')	... 165, 166
कालविरोधोदाहरण (दु'स'द'द'व'व'व'द'द')	... 167, 168
कलाविरोधोदाहरण (स'स'उ'व'द'द'व'व'व'द'द')	... 170
लोकविरोधोदाहरण (द'द'व'द'द'द'व'व'व'द'द')	... 172
न्यायविरोधोदाहरण (द'व'स'द'द'व'व'व'द'द')	... 174, 175
आगमविरोधोदाहरण (व'द'द'द'व'व'व'द'द')	... 177, 178
देशविरोधगुण (य्नु'व'द'द'व'व'व'द'द')	... 180
कालविरोधगुण (दु'स'द'द'व'व'व'द'द')	... 181
कलाविरोधगुण (स'स'उ'व'द'द'व'व'व'द'द')	... 182
लोकविरोधगुण (द'द'व'द'द'द'व'व'व'द'द')	... 183
न्यायविरोधगुण (द'व'स'द'द'व'व'व'द'द')	... 184
आगमविरोधगुण (व'द'द'द'व'व'व'द'द')	... 185

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyaḍarśa* of Daṇḍin . It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai Sarat Chandra Das Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize Das's manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyaḍarśa* was translated into Tibetan by Śrīlakṣmīkara and Śoṇ . ston . Lo . tsā . ba and others in the great Sa-skyia monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition; Cordier, III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by Mi . pham . dge . legs . rnam . rgyal . As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyaḍarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand; so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled; e.g., I. 95 उद्गीरणं ; 103 मार्गः, II. 9 वरणं, 10 धूरिर्णतेक्षणः ; etc. Though such 'doubling' of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me; e.g.

Chap. I. 30^a श्रुि for श्रुिः ; 42^a एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^a बध्नन्त्योजखिनीगिरः ; for बध्नन्त्योजखिनीगिरः 90^a °पातधौत for °पातःधौत.

Chap. II. 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो ; 6^a व्याज for व्यज ; 11^a बध्नन्नङ्गेषु for बध्नन्नङ्गेषु ; 14^a प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं ; 20^a पद्मन्तावत् for षड्मन्तावत् ; 24^{a-b} पद्मं सुभु for पद्मसुद्धू ; 27^a निर्णयोपमा for निर्ल्लयोपमा ; 28^b षड्मन्तावत् for षड्मन्तावत् ; 38^a प्रभासारः for प्रभासारं ; 47^a पारिजातस्य for परिजातः ; 49^a रक्षायै for राक्षायै ; 49^a सावलेषा for सावलेषा ; 54^a सौभाग्यं for सौभग्यं ; 58^a संवादि for सम्बादि ; 81^a षड्मन्तावत् for षड्मन्तावत् ; 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं ; 100^a दैवतार्थयः for दैवतार्थयः ; 120^a पुष्पैः for पौष्पैः ; 152^a अयतापि for अयातापि ; 156^a सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^b किंवा for किम्बा ; 158^a °संवादि for °सम्बादि ; 165^a दिशान्येपि for दिशान्येपि ; 188^a त्रैलोक्यं for त्रैलोक्यं ; 234^a उद्दिष्टं for हृष्टं ; 274^b वृत्तिः for वृत्तिः ; 281^a सत्यं for सत्यं ; 302^a मृगाक्षीणां for मृगाक्षीणान्.

Chap. III. 8^a किन्निवदं for कीन्निदं ; 23^a दशां for देशां ; 118^a कलभाषिणि for कलभाषिणी ; 134^a श्रुि for श्रुिः ; 174^{a-b} संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षिताहिवै ; 176^{a-b} गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमल्यं—which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text. 176°-¹ अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः—which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दीर्घं for नित्यं ; 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य ; 10^b अलंकारः for अलंकाराः ; 12° विविचूणां for तितीर्षूणां ; 13° अंश for अंग ; 15° आयत्तं for उपेतं ; 19^a सर्गान्तैः for वृत्तान्तैः ; 19^b रञ्जनं for रञ्जकं ; 20^b वर्ज्यते for दुष्यति ; 22^d कथनं for वर्णनं ; 25^d कारणं for लक्षणं ; 26^b साश्वासत्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27^d आश्वासः for उच्छ्वासः ; 29¹ न ते for नैते ; 32^d आप्ताः for आर्याः ; 36^b स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आसारादीनि ; 38^a कथादि for कथाहि ; 38^b पठ्यते for वध्यते ; 38° त्वाहुः for प्राहुः ; 39^a शाम्भ्यादि for शल्यादि ; 42^d लक्ष्यते for दृश्यते ; 49¹ आननं for मुखं ; 50° ववृते for ववृधे ; 51^b स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि ; 53° तदा for ततः ; 54^d ईप्सितं for इष्यते ; 57^d कर्तुं for हन्तुं ; 63¹ वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते ; 67^a परं for खरं ; 69° हि for तु ; 71^d मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः 78° अन्यच्च for अन्यत् ; 85^d विद्यते for दृश्यते ; 89^d यथा for जनाः ; 97^d मतो for स्मृतो ; 99° इह for इमे ; 99¹ अन्यत् for अप्यत्.

Chap. II. 2° प्रतिसंस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम् ; 3^d अद्य for अन्यत् ; 6^a श्लिष्ट for श्लेष ; 7^b संसृष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिक्षिप्य for परिभ्रम्य ; 14^d प्रदर्श्यते

for निदर्शयते ; 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् ; 17^a त्वद् for तव ; 28^d मता for स्मृता ; 30ⁱ मता for स्मृता ; 31^d इष्यते for उच्यते ; 33^d उदिता for मता ; 40^d प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42^d एव सा for मता ; 48^a समाह्व्य for समीकृत्य ; 50^d स्मृता for मता ; 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादौ ; 54^c च for एव ; 56^b त्वत् for तत् ; 60^b अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः ; 62^a संरुन्धे for सन्धते ; 64^d सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः ; 65^b इष्यते for उच्यते ; 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः ; 74^o मुग्धे for मुग्धः ; 75^b च for अपि ; 82^d पश्यति for कल्पते ; 97^o नवाय च नताङ्गीनां for स एवावनताङ्गीनां ; 100^d देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105^a वर्णात्पलं for नीलोत्पलं ; 113^b अपि for तथा ; 114^o अनुगति for अवगति ; 115^b इत्यपि for एव च ; 116^b कुटजोक्षमाः for कुटजद्रुमाः ; 117^b वर्गं for वृन्दं ; 117^o अद्य for एष ; 118^a अद्य for अत्र ; 128^d तत् नाश्रयः for न तदाश्रयः ; 129^o अत्र for एव and तद् for यद् ; 132ⁱ न्वहं for न्विदं ; 137^a प्रत्याचक्षाण्या for इत्या-
चक्षाण्या ; 137^b विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137^d ईदृशः for उच्यते ; 144^d प्रतिबन्धिनः for परिपन्धिनः ; 145^d एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या ; 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149^d उपसूचनात् for उप-
दर्शनात् ; 153^d निवार्यते for निषिध्यते ; 154^d जीर्णं for नीलं ; 161^o दर्श-
यित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162^b तृप्यति for शाम्यति ; 163^b अयं निवर्त्यते for
यन्निवार्यते ; 172^a आह्लादयति for आनन्दयति ; 180^d च्छविः for युतिः ; 182^o
इयता for अयन्तु ; 182^d जलात्मा for जडात्मा ; 186^d सोनुविधीयते for
सोप्यभिधीयते ; 190^d लोलदृष्टि for लोलनेत्रं ; 192^b वियदम्भसोः for चन्द्र-
हंसयोः ; 192^d चन्द्रहंसयोः for वियदम्भसोः ; 195^d अदर्शयत् for अदर्शि यत् ;
197^o सूक्ष्म for शुद्ध ; 199^b हेतुकं for हेतुजं ; 207^o सच्छायः for सुच्छायः ;

215^c अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते ; 215^d स्थितेः for स्थितिः ; 219^d उत्सुकः for उद्यतः ; 222^c चैवन्तु for वेत्येवं ; 222^d कथ्यते for वर्यते ; 224^b जन्यते for जायते ; 226^d अनुन्मत्तो for उन्मत्तो ; 230^d उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां ; 236^d मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे ; 240^b कृतां for स्थितां ; 243^d व्याक्रियन्ते for व्याह्रियन्ते ; 245^d आश्रये for आश्रमे ; 260^a त्वदर्पित for मदर्पित ; 266^a एव for एष ; 276^d अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277^c सैवावन्ती for सैषा तन्वी ; 283^c देवी for तन्वी ; 291^a इति मुक्तः for एवमुक्त्वा ; 295^b दैवबलात् for दैववशात् ; 296^a तस्याः for अस्याः ; 296^b नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300^c अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302^d शीता किल for मयि शीता ; 304^b नाम नो for नामतो ; 311^c वा for च ; 323^d कुलं for बलं ; 325^d जगन्नयं for नभस्तलं ; 326^d कल्प्यते for कल्पने ; 327^d स्मृता for मता ; 329^b अपि for च ; 335^d लोचनम् for लोचने ; 337^d अप्रक्रान्तेप्सिता for अभ्रक्रान्तेषु या ; 344^d प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346^a एव for एष ; 348^a सह-भावस्य for सहभावेन ; 348^d यथा for स्मृता ; 349^c पाण्डराः for पाण्डुराः ; 350^d अश्रुभिः for असुभिः ; 352^d निरूपणं for निदर्शनं ; 353^d पाण्डरं for पाण्डुरं ; 355^d कीर्तितं for दर्शितं ; 356^d संसृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते ; 360^d यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6^b साम्प्रतं for सत्पतिं ; 8^d किन्निवदं for किलु ते ; 21^c वा for च ; 38^b ईप्सिताः for ईहिताः ; 41^c आमोद for आनन्द ; 41^d न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55^d तापनेन for तायनेन ; 63^d पिष्टपस्य for विष्टपस्य ; 80^a आहुः for प्राहुः ; 111^d तायवो for वायवो ; 117^a जनं for नरं ; 119^b रषा for क्रुधा ; 127^b च for वा ; 129^{a-b} सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि ; 129^d ऐरावतः for ऐरावणः ; 132^a कुलं for बलं ; 132^c न च ते कोपि for तव नैकोऽपि ; 137^d

अलङ्कृतिः for अलङ्किया ; 145^b अजाः for अमी ; 146^d न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषणं ; 153^d एष for एवं ; 156^c यत्र for तत्र ; 158^a विमुक्ता for विमुक्ता ; 158^c मदनबाणा for स्मरस्य बाणा ; 158^d मृगेक्षणा for वामेक्षणा ; 160^d अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि ; 161^d न्यक्तं for न्यस्तं ; 165^a अस्पर्शा for अमर्श ; 174^{a-b} सुगतैः संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176^d प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते ; 184^b सकलः for सफलः and निष्कलः for निष्फलः ; 185^b कन्यका for पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of Dr. F. W. Thomas (JRAS., 1903, pp. 349-354) are noted below for comparison:—

Chap. I. 12^o विविच्छूणां for तितीर्षूणां ; 13^o अंश for अंग ; 20^o उपात्तेषु सम्पत्तिः for उपात्तार्थसम्पत्तिः ; 60^b नियच्छति for निगच्छति ; 62^o एनं for एतं ; 80^b एतद् for तद्.

Chap. II. 2^o प्रतिसंस्कृतं for परिसंस्कृतं ; 10^o परिक्षिप्य for परिवृत्य ; 62^a संरुन्धे for सन्धते ; 64^d सूचिनः for सूचकः ; 82^d पश्यति for यस्यति ; 134^c यातव्यं for याहि त्वं ; 142^d रन्ध्रावेक्षणा for रन्ध्रान्वेषण ; 148^o त्वं for ते ; 149^d अस्त्यार्थस्य for तस्त्यार्थस्यैव ; 155^b सानुकोशमिवोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182^c इयता for अयं तु ; 197^o सूक्ष्माम्बु for शुद्धाम्बु ; 255^d रागबालातपः for रविबालातपः ; 300^o अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता ; 350^o अश्रुभिः for असुभिः ; 364^a एष for एव.

Chap. III. 38^d वर्यन्ते for वक्ष्यन्ते ; 41^o आमोद for आनन्द ; 70^o तस्यापि for तत्रापि ; 158^c मदनबाणा for स्मरस्य बाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones; as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोद्गमाः for कुटजद्रुम. It seems that *uṅgama* in *Kuṭajongama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *puṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaṅgarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script; it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939.

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚA

༄༅ ། ། སྒྲིབ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཇེད་པའི་
སྙན་ངག་མེ་ལོང་མ་ ཞེས་བྱ་བ་
སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་
བཞུགས་སོ །

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

[1b] नम आद्यर्ममञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞིན་ནུར་གྱིར་བཤུག་འཆལ་ལོ།

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्म्मम ।
मानसे रमतां दीर्घं सर्वशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་གདོང་གི་བད་ཆལ་གྱི།
ངང་བའི་བྱ་མོ་ཐམས་ཅད་དཀར།
དབྱངས་ཅན་མ་ནི་ཁི་ཁི་ཡི།
ཡིད་ལ་རིང་དུ་གནས་པར་མཛོད། ॥ १

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।
यथासामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྟན་བཅོས་སྒྲ་མ་ནམས་བསྟན་ཡིང་།
སྟོར་བ་ནམས་ཀྱང་ཉར་མཛོད་དེ།

ཇི་ལྟར་ནས་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །
 ལྟན་ངག་ དག་གི་ མཚན་ཉིད་བྱ ། ༢

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।
 वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་ཏུ་ མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་ །
 ཇིས་སུ་བཟུན་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང་ །
 ཆོག་རྣམས་ཉིད་ ཀྱི་ རིན་གྱིས་ ནི །
 འཇིག་རྟེན་ལུགས་ལ་ འཇུག་བར་བྱེད་ ॥ ༣

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।
 यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

གལ་ཏེ་ ལྷས་བོད་ ལྷང་བ་ཡིས་ །
 འཁོར་བ་ གསལ་བར་མ་བྱས་ན །
 འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །
 ལྷག་ཅམ་ལྷན་བ་ཉིད་ཏུ་འགྱུར་ ॥ ༤

आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥५॥

ཨོན་གྱི་ཀླུ་པོ་ བྲག་ས་པའི་གཞུག་ས།
ངག་གི་རང་བཞིན་ མི་ལོང་ ཐོབ།
དེ་དག་ཉི་པར་མི་གནས་ ཀྲང་།
རང་ཉིད་ ཉམས་པ་མེད་ལ་ ཁྲོས་ ॥ ५

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुधप्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ ཡང་དག་ རབ་སྐྱར་བའི།
ངག་ནི་ འདོད་འཇོའི་ བ་རུ་ བཤད།
དེ་ཉིད་ ཉམས་པར་སྐྱར་ ན་ སྒྲར།
སྐྱར་པོ་ བ་ལང་ཉིད་ བཟོད་བྱེད་ ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्मगं ॥७॥

དེ་ཕྱིར་ སྒྲན་ངག་ དག་ལ་ སྒྲོན།

ཅུང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྟར།

བཤང་སྒྲོམས་མི་བྱ་ ལུས་མཛེས་ཀྱང།

སྒྲོན་གཅིག་གིས་ནི་ སྐལ་ངན་འགྱུར། ༥

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः ।

किमन्धस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

སྒྲེ་པོ་ བསྐྱན་བཅོས་ མི་ཤེས་བས།

ཡོན་ཏན་ སྒྲོན་དག་ ཅི་ལྟར་དབྱེ།

གཟུགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་སྐབས།

ཡོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི། ༩

अतः प्रजानां व्युत्पत्तिमभिसन्धाय सूरयः ।

वाचां विचित्रमार्गाणां निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་སྒྲེ་དག་ནམས།

བྱེ་བྲག་རྟོགས་ལ་ མངོན་དགོངས་ནས།

ཀླུ་བླ་ལམ་ལྷན་ ཆོག་ཀླུ་སྐྱོ །

བྱ་བའི་ཆོག་ ཇེས་པར་སྤྱར ། ༡

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ རྒྱན་ ཡང་ རབ་བྱ་བལྟན །

ལུས་ ནི་ རེ་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་ཀླུ་བཅད་ ཆོག་གི་ སྤེང་ ། ༡༠

पद्यं गद्यञ्च मिश्रञ्च तन्निश्चैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཆོགས་བཅད་ ལྷུག་པ་ དང་ །

སྤེལ་མ་ ཀླུ་བལྟན་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཆོགས་བཅད་ ཀླང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

ལྷོ་ རྒྱ་ ཞེས་ ཀླུ་བལྟན ། ༡༡

छन्दोविचित्रां स[2b]कलस्तद्व्यपञ्चो निदर्शितः ।
सा विद्या नौर्विविक्षूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

दे'यि'सू'स'प' स'प'२'५'ग'३' ।
सू'स'सू'र' ग'३'५' दे'स'प'२'५'ग'३' ।
दे'य'३' ३'३'५' ग'३'५' ३'३'५' ।
३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ॥ १२

मुक्तकं कुलकङ्कषः संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वादनुक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥

सू'स'प' ३'३'५' दे'य'३' ३'३'५' ३'३'५' ।
३'३'५' ३'३'५' दे'य'३' ३'३'५' ।
३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ।
३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ३'३'५' ॥ १३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སཀྱས་ བཅིངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ །

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཛོད་པར་བྱ །

ཤིས་ བཛོད་ རྒྱག་བྱ་ དངོས་པོ་ནི །

ངེས་པར་ བསྟན་པའང་ དེ་ཡི་སྒྲོ ༥ ༡༥

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं ।

चतुर्वर्गफलप्राप्तं चतुरोदात्तनायकं ॥१५॥

སྟོན་བྱང་གདམ་ ལས་ བྱུང་པའམ ༥

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བདེན་པ །

སྒྲེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་བྱུང་ དང་ །

མཁས་ཤིང་ བྱ་ཆེའི་ འདྲིན་པ་ཅན ༥ ༡༥

नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྲིར་ བྱ་མཚོ་ རི་དང་ རྒྱས །

ཉི་མུ་འཆར་བའི་ བསྟགས་པ་ དང་ །

སྒྲིལ་ཆལ་ཆུ་ཡི་ རོལ་ཅེད་ དང་ ।

ཆང་འཐུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་མ་ དང་ ।

གཞོན་ནུ་སྒྲི་ དང་ འཕེལ་བ་ དང་ ।

གྲོས་ དང་ སོ་ཉ་ བགྲོད་བ་དང་ ।

གཡུལ་དང་ འདྲིན་བ་ དར་བས་ ཀྱང་ । १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་བར་གྱུར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ ।

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གདམས་ ॥ २०

སག་ཤིན་དུ་ བྱ་ཆེ་ མིན་ ।

མཉན་འོས་ གྲིད་ ལེགས་མཚམས་སྦྱར་ ॥ २१

सर्वत्र भित्तसर्गान्तै[3a]रूपेतं लोकः रञ्जनं ।

काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१६॥

गुण'दु' सङ्ग'दमा'गी' सप्र' ।

प्र'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द' ।

सङ्ग'दमा' द'द'द'द'द'द'द' ।

सङ्ग'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द'द' ॥ १८

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगैः काव्यं नः वज्यते ।

यद्युपात्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

मा'द'द'द'द'द'द'द'd' ।

मा'द'द' सङ्ग'द'द'द' ।

द'द'द' सङ्ग'द'द' ।

द'द'द' सङ्ग'द'द' । ॥ २०

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषां ।

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

ཐོག་མར་ འདྲན་པ་ ཡོན་དན་ གྲིས།

ཉེ་བར་ བཞོད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི།

དག་ལ་ བཞོད་པ་བྱེད་ ཅེས་པའི།

ལས་འདི་ རང་བཞིན་ མཛོས་པ་ ཡོན། ॥ ४१

वंशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयान्नायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བཙོན་འགྲུས་ ཐོས་ སོགས་གྲིས།

དག་བོ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་བྱས་ནས།

དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲན་པ་ ནི།

བྱད་འཕགས་ བཙོན་པ་འང་ བདག་ དགའ་སྐྱེས། ॥ ४२

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रमेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

ཀང་པ་མེད་པའི་ ཚོག་རྒྱན་ ནི།

ལྷག་པ་ བཙོན་པ་ དག་ དང་ བཞུས།

ཞེས་པ་ རེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས།

དེ་ལ་འདྲིན་པ་ ཉིད་གྱིས་ རི། ॥ ३३

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरैर्वा ।

स्वगुणाविक्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བཟོད་པར་བྱ་བ་ བཟོད་པ་ལ།

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་འཇམ་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་།

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱབས་ སྒྲོན་ འདིར།

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱབས་ སྤྱིར་ ཡོད་མིན་ ॥ ३४

अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृशवा भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང་ ཇེས་པ་ མ་མཐོང་སྟེ།

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བཟོད་པའི་སྤྱིར།

གཞན་གྱིས་བཟོད་ རེ་ རང་གིས་ ཞེས།

དབྱེ་བའི་ཐུ་ རི་ ཅི་འདྲ་ཞིག ॥ ३५

वक्त्रञ्चापरवक्त्रञ्च साश्वासत्वञ्च भेदकं ।
चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

मा०५० ॥ ५८ ॥ मा०५० ॥ ५८ ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥

आर्यादिवत्प्रवेशः किं न वक्त्रापरवक्त्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भादिगश्वासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥
५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥ ५८मा० ॥

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाङ्किता ।
तत्रैवान्तर्भव्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གཏམ་ དང་ བཟློག་པ་ ཞེས།
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན།
 ལྷག་ས་ བཟློག་པའི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ བང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༢༥

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।

सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ བློ།
 བསྐྱུ་བ་ དར་བ་ ལ་སོགས་པ།
 སྐྱུ་ས་བཅིངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ བྱད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ མིན། ॥ ༢༦

कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।

मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁུ་གྱི་ བསམ་བྱས་ དྲགས།
 གཞན་དུ་ དང་ བློ་ ལྷན་མི་ འགྱུར།

འདོད་དོན་ གྲུབ་པ་ མཐོང་ ཉི །

མཁས་པ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྲུང་ ॥ ༣༠

मिश्राणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।

गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྒྲེལ་མ་ ལྷོས་གར་ལ་སྟོགས་ཏེ།

དེ་དག་ རྣམས་ནི་ བཞུག་ན་ རྒྱས་ !

ལྷག་པ་ ཚིགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་ །

ཙ་མེད་མེད་ བཤེས་པ་མ་ཤོད་པ་ བཤོད་ ॥ 37

तदेतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्प्राकृतन्तथा ।

[4a]अपभ्रंशश्च मिश्रश्चत्याहुराप्ताश्चतुर्विधं ॥३२॥

ངག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ གྲུང་།

ལེགས་སྐྱར་ རི་བཞིན་ རང་བཞིན་ དང་།

ལྷན་ཆག་ འདྲིས་མ་ ཞེས་བྱ་བ།

ནམ་པ་བཞི་ཙུ་ རཤས་པས་ གསུངས། ॥ ༢༤

संस्कृतं नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।

तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

ལེགས་སྦྱར་ ཞེས་ཀྱི་ ལྷ་ཡི་ བློ་ །

སྒྲུང་དུ་ རང་སྤྱོད་ ཆེན་པོས་ གསུངས་ །

དེ་སྦྱོར་ དེ་མཚུངས་ ཡུལ་ཅན་ ཞེས་ །

དུ་མ་ རང་བཞིན་ དག་གི་ རིས་ ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृष्टम्प्राकृतं विदुः ।

सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

ཡུལ་འཁོར་ཆེན་པོ་ ལ་ བཞིན་ སྒྲུང་ །

ལེགས་བཞེད་ རིན་ཆེན་ དག་གི་ མཚོ་ །

སེ་དུས་ བཅིངས་ སྤོགས་ རང་བཞིན་ གང་ །

རང་བཞིན་ མཚོག་དུ་ གུར་པར་ རིག་ ॥ ३ॣ

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।

याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निधिं ॥ ३५॥

ས་ར་ས་རྒྱ་གོ་ར་དང་ ।

ལ་རྒྱ་གཞན་ཡང་དེ་འདྲ་ཡི་ ।

སྐད་ནི་རང་བཞིན་ཉིད་ཅེས་བུའི་ ।

ཐ་སྐད་ནམས་ལ་ཉེ་བར་འགྱུར་ ॥ ३ॡ

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

བ་ཡང་རྒྱ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་ ।

སྐད་ངག་ལ་རྒྱར་ཆག་ཅེས་གནས་ ।

བསྐད་བཅོས་ནམས་ལས་ལོགས་སྐར་ལས་ ।

གཞན་པ་རྒྱར་ཆག་ཉིད་དུ་བརྗོད་ ॥ ३७

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादिः*यत् ।

ओसरादन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལོགས་སྐར་སྐད་སྐད་བཅོས་ལ་སོགས་ ।

རང་བཞིན་སྐད་ཀ་སོགས་དང་ ।

རྒྱུ་ཆག་ མོ་ས་ར་ སོགས་དེ །

སྒྲིམ་གར་ ལ་སོགས་ འདྲིས་པའོ ॥ ३५

कथादि सर्वभाषाभिः संस्कृतेन च ष्यते ।

भूतभाषामयीं त्वाहुरद्भुतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གདམ་ སོགས་ སྐད་ རྣམས་ བསམ་ཅད་དང་ །

ལོགས་སྤྱར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་པ་སྟེ །

སྐད་བྱུང་ རོན་ཅན་ གྱུ་ཆེན་གདམ །

འབྱུང་པོའི་སྐད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བཟོད་ ॥ ३७

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्ष्यार्थमितरत्पुनः ।

अव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྒྲིག་ དང་ རོལ་ དང་ སྤབས་ ལ་སོགས །

ལྷ་བའི་རོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་ །

སཉན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་པ །

འདི་ཡང་ ལྷགས་གཉིས་ དག་ཏུ་ བཟོད་ ॥ ३८

अस्त्यनेको गिरां मार्गाः सूक्ष्मभेदः परस्परं ।
तत्र वैदर्भगौडीयौ वर्ण्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

यव'ऊव' द्रु'व' ध'ख'ऊव ।
ऊ'व'वी'ल'व' वी' द्रु'व' ध'व' ।
दे'ल' वे' द्रु'व' द्रु'व' ।
वी'त'व' द्रु'व' व'ल'व' व'व' ॥ ८०

श्लेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजःकान्तिसमाध्रयः ॥४१॥

सु'व' व' व'व'द'व' व'व' व'व' ।
सु'व' व' व'व'द'व' व'व' व'व' ।
व'व' व'व' व'व' व'व' व'व' ।
व'व' व'व' व'व' व'व' व'व' ॥ ८१

इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्मृताः ।
एषां विपर्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडघर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བེ་དཀྱིའི།

ལས་གྱི་ སློག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན།

འདི་དག་ སལ་ཆེར་ བརྒྱུག་བས་ ནི།

གོ་ཏེ་ལས་ དག་ མཚོན་པ་ ཡིན། ॥ ༧༢

श्लिष्टमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरं ।

शिशिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྐྱུར་བ་ རྩོད་བས་ མ་ རིག་པའོ།

སློག་ཆུང་ ཡི་གེ་ མང་བ་ ནི།

རྩོད་པ་ ལྷ་ལ་རྒྱི་ ལྷ་ལ།

ལ་ལ་ལི་ཀ་ལི་ལྷ་ འདོད། ॥ ༧༣

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्टं बन्धगोरवात् ।

वंदमैर्मालतीदाम लंघितं भ्रमरैरिति ॥४४॥

གོ་ཏེ་བ་ ཡིས་ རིས་ཁྲིད་རྩོས།

དེ་ འདོད་ ལྷ་ལ་རྒྱི་ ལྷ་མ།

ཡི་གླིང་གྲུ་མ་རིེ་ཞེས།

མེ་དཀྱི་ཡིས་སྤྱོད་ལྟེ་བྱེད། ༥༥

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरश्रुति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྷན་པ་གྲགས་དོན་ཅན།

ཟླ་བའི་མཚན་ས་ཤུལ་གྱི།

འོད་ཀྱིས་མཛེས་པ་གྲུས་ཅེས་པ།

རྟོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ལྷན་པའི་ཚོག་། ༥༦

व्युत्पन्नमिति गौडीयैर्नातिरूढमपीष्यते ।

यथानत्यर्जुनाब्जन्मस[5a]दृक्षाङ्को बलश्रुतः ॥४६॥

ངེས་ཚོག་འོད་ལྱིར་གོ་ར་བ།

ཤིན་ཏུ་གྲགས་པ་མིན་ལང་འདོད།

ཤིན་ཏུ་དཀར་མིན་ཅུ་ལས་སྤྱིས།

དེ་འདྲས་མཚན་པ་འོད་དཀར་ཅན། ༥༧

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिश्रवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

म॒रु॒त॒व॒ श्रु॒त॒व॒ मी॒म॒रु॒त॒ ३५ ।

दे॒वि॒ र॒त्न॒त॒तु॒व॒ व॒र॒त॒ ३६ ।

श्रु॒त॒व॒ र॒त्न॒त॒तु॒व॒ व॒र॒त॒ ३७ ।

यि॒मो॒व॒र्णो॒र॒व॒रि॒श्रु॒त॒म॒रु॒त॒ ३८ ॥

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्भरामःकणोक्षितः ॥४८॥

म॒म॒म॒म॒ त॒त॒त॒त॒ ३९ ।

म॒म॒म॒म॒ व॒र॒त॒ ४० ।

म॒म॒म॒म॒ र॒त्न॒त॒तु॒व॒ ४१ ।

तु॒तु॒तु॒तु॒ ४२ ॥

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।

स्पर्द्धते रुद्धमद्धैर्यो वररामाननानिलः ॥४९॥

ཅན་གྱིས་ བསྐྱོས་ རི་ རྩང་ ཞིང་ །

འཇམ་པ་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་ །

བདག་གི་ བརྟན་ འགོག་ དགའ་མ་ བློ །

མཆོག་གི་ ཁ་ཡི་ རྒྱང་ དང་ འགྲན་ ॥ ༥༠

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।

अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞིས་པ་ མི་མཉམ་ མ་བརྟགས་པར་ །

བོན་གྱི་ གྲན་ དང་ ཆོགས་ དག་ ལ་ །

རྟོས་ནས་ ཤར་ཕྱོགས་པ་ དག་ ལ་ །

སྟན་ངག་ ལམ་ བློ་ རྒྱང་བར་གྱུར་ ॥ ༥༠

मधुरं रसवद्भावि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।

येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रताः ॥५१॥

སྟན་པ་ ཉམས་ལྡན་ ཆོག་ དང་ བློ །

དངོས་པོ་ ལ་ ལང་ ཉམས་ གནས་པ་ །

སྒྲུང་ཅི་ སྒྲོད་པ་ སྒྲུང་ཅིས་ བཞིན།
གང་གིས་ གློ་ལྷན་ དགའ་བྱེད་པའོ། ॥ ५०

यथा कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
*तद्रूपादिपदासत्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

སྒྲུ་ བློ་ གང་ དང་ ཅི་ཡིས་ ཀྱང་།
གང་གིས་ བཟུངས་པར་ ཉམས་སྒྱུང་པ།
དེ་ཡི་ བརྒྱགས་ མོགས་ ཆོག་ཉེ་པ།
ཇིས་སུ་ བྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྷན་ ॥ ५१

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཆོ་ བླམ་ཟེ་ དགའ་བ་ཡི།
རྒྱལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དཔལ་ཐོབ་གྱུར།
དེ་ནས་བརྒྱང་སྟེ་ ཆོས་ཀྱི་ བློ།
དགའ་སྟོན་ འདི་ག་དེན་ འདི་ཅ་ བྱུང་ ॥ ५२

इतीदं *नाहतं गौडैरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।

अनुप्रासादपि प्रायो वेदभैरिदमीप्सितं ॥५४॥

उ० ३५० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।

पूर्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यद्वरता ॥५५॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

चन्द्रे शरन्निशोत्तंसे कुन्दस्तवकविभ्रमे ।

इन्द्रनोलनिभं लक्ष्म सन्दधात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

སྟོན་མཚན་ དབུ་གྱུན་ རྩ་བ་ ཉི །
 ཀུན་འི་ ཐོན་པོར་ འབྲུལ་བ་ ལ །
 མཚན་མ་ ཡིན་ནི་ལ་ མཚུངས །
 བྱང་བའི་ དཔལ་ ཉི ཡང་དག་ འཛིན ॥ ༥༩

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
 मन्मनो मन्मथाक्रान्तं निर्दयं *कतुमुद्यतं ॥५९॥

མཛོས་མ་ མཁའ་ལ་ རྩ་བ་ཡི །
 དཀྱིལ་འཁོར་ མཛོས་བས་ བདག་གི་ཡིད །
 ཡིད་སྒྲུབ་ ཀྱིས་ མནན་ བརྟེ་མེད་དུ །
 འཛོམས་བར་ བརྟེན་བ་ འདི་ ལ་ ལྟོས ॥ ༦༠

इत्यनुयासमिच्छन्ति नातिदूरान्तरश्रुतिम् ।
 न तु रामामुखाम्भोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥६०॥

ཅེས་བ་ ཡིན་དུ་ མི་རིང་བར །
 ཐོས་བ་ དག་ ཉི་ ཇེས་ཁྲིད་ འདོད །

དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཚུ་སྒྲིམ་ དང་ །

མཚུངས་པ་ ལྷ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད་ ॥ ༥༧

स्मरः खरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।

च्युतो मानोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥५८॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྲོ་བ་ ལྷ་ །

འདོད་པ་ ཚུ་བ་ ཅིང་ མཚུངས་པ་ །

ཁེངས་པ་ ཉམས་ ཤིང་ ཆགས་པ་ སྒྲིམ་ །

མེངས་པ་ སྒྲིམ་ དེ་ སྒོ་ག་ ཉམས་ མེང་ ॥ ༥༩

इत्यादि बन्धपारुष्यं शैथिल्यञ्च नियच्छति ।

अतो नैव[6a]मनुप्रासं दाक्षिणात्याः प्रयुज्जते ॥६०॥

ཅེས་སྒྲིམ་ སྒྲོང་བ་ ཚུ་བ་ དང་ །

གྲོ་ལ་བ་ ཡང་ནི་ ལྷ་བ་ བར་བྱེད་ །

དེ་ལྱིར་ དེ་ལྱིར་ ལྷ་བ་ སྒྲིམ་ ཉི་ །

དེ་ལྱིར་ ལྷ་བ་ དག་ མི་སྒྲོང་ རེ་ ॥ ༦༠

आवृत्तिमेव संघातगोचरं यमकम्बिदुः ।

तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कौमल्यं चरितं सुन्दरं च वृद्धिः ।

विशेषः चरितं च वृद्धिः ।

देवः चरितं च वृद्धिः ।

देवः चरितं च वृद्धिः ॥ ७०

कामं सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।

तथाप्यग्राभ्यतेवै नम्भारम्बहति भूयसा ॥६२॥

देवः चरितं सुन्दरं च वृद्धिः ।

देवः चरितं सुन्दरं च वृद्धिः ।

देवः चरितं सुन्दरं च वृद्धिः ।

देवः चरितं सुन्दरं च वृद्धिः ॥ ७३

कन्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।

इति ग्राम्योयमर्थात्मा वेरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞིན་ནུ་མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་དོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད། ॥ ༤༢

कामं कन्दर्पचण्डालो मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो दिष्ट्येत्यग्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གཏུམ་པོ་ནི།
 དེས་པར་ བདག་ལ་ བརྟེ་བ་མེད།
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ།
 གྲོང་པའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ༤༣

शब्देपि ग्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྒྲ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ།
 དེ་ནི་ ལེགས་པའི་ ཅིག་ཤོས་ བྲགས།

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བཟོད་པ་ལ།
 ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སོགས་བཞིན ༥ ༤༦

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।
 दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཆོག་གི་མཆས་ས་སྟོར་གྱིས་ ལྷགས་ དང་།
 སྟོར་ཡང་ ངག་རོན་དག་གིས་ ཀྱང་།
 ཉིས་པར་རྟོགས་བྱེད་ གོང་བ་སྟེ།
 ཡ་ སྟ་བ་དེ་ གི་ཡ་ བཞིན ༥ ༤༧

परं प्रहृत्य विश्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।
 एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྟེས་བྱ་ བྱི།
 གི་ལྟ་ལྟར་བའི་ གི་ལྟ་བུ་།
 དེ་ལྟ་བུ་ སོགས་ ལས་དག་ བྱི།
 གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་མ་ཡིན ༥ ༤༨

भगिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।

विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

झं'वा'व'रुं' झं'वा'रुं ।

वे'स'स'स' ग'र'र'स'स'स'स' ।

रे'र'र' र'र'र' र'र'र' ।

वे'र'र'र'र'र'र' र'र'र'र'र' ॥ ७८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।

बन्धशैथिल्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

रु'र'र'र'र'र'र' र' ।

वे'र'र'र'र'r'र'r' र' ।

वा'र'र' र'र'र'र'r'r'r' र' ।

र'र'r'r'r'r'r'r'r' ॥ ७९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगोतिभिः ।

कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

སྒྲིན་གྱི་སྒྲིང་བ་ལྟན་ ཏུས་སུ །
 སྒྲིན་པར་སྒྲོགས་པའི་མཁྱིན་ལྟན་པ །
 མ་བྱ་ཡི་ ནི་ མཐུག་མ་དག །
 རྒྱུ་མེད་བྱས་ནས་ བར་བྱེད་དོ ॥ ༧༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་གྱིས་ཉིད་མ་ཡིན །
 བྱན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མེད་དེ །
 ཤིན་ཏུ་གཞོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དམ་པ་ནམས་ཀྱི་ ཁ་ ན་ བཞས་ ॥ ༧༡

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

བསལ་ སྒྲིང་ བཞན་དག་ སལ་ཆེར་ ནི །
 བརྗོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྒྲིང་ །

ཀྱུལ་རིགས་ནམས་ཀྱི་ རྩོགས་མཐའ་དག །
སྐད་ཅིག་གིས་ བློ་ ཉམས་པར་བྱས ། ༥༢

अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।
भूः खुरश्रुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །
འཛོགས་བྱེད་ཀྱིས་ བློ་ ས་གཞི་དག །
མིག་པས་ བཅད་པའི་སྒྲ་བྲག་གིས །
དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏེར་ ལས་ཕྱུང་ ། ༥༣

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।
इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

ཕག་བ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །
རྩ་གཏེར་དམར་པོ་དག་ལས་ཕྱུང་ །
ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་པ་ནི །
བར་འགྲོའི་བྲག་ བློ་ བདག་དགོས་ཉིད ། ༥༤

नेदृशम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।
न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལས་ ཉི་ གཉིས་ཀ་ དག་ལ་ ཡང་ །
 རྟོགས་པའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྷན་ ཞིང་ །
 སྐྱ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གྱུར་པ་ །
 འདི་འདྲ་ སལ་ཆེར་ བཞིན་ས་ཡིན ༥ ༥༥

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्ते यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराह्वयं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་ འགའ་ཞིག་ བཞིན་པ་ལ་ །
 བྱད་འཕགས་ལྷན་པའི་ཡིན་ཏན་རྟོགས་ །
 དེ་ནི་ སྐྱ་ཆེར་བཞིན་དེ་ དེས་ །
 སྐྱན་ངག་ལས་གྱུན་ མགོན་དང་བཅས་ ༥ ༥༦

अर्थिनां कृपणा दृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སྐྱོང་བ་ནམས་ གྱི་ བཀྱིན་པའི་མིག་ །
 ལན་ཅིག་ བྱིད་ གདོང་ལ་ ལྷུང་བ་ །

ལྷ་ཅིག་གནས་སྐབས་དེ་ཡིས་སྤར།
གཞན་གྱི་གདོང་ལ་ལྷ་མ་ཡིན། ॥ ७७

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་འདི་ལ།
གདོང་བ་བྱད་འཕགས་ལེགས་པ་མཆོན།
ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དག་ཀྱང་།
རིགས་པ་མཚུངས་པས་དབག་བར་བྱ། ॥ ७८

श्लाघ्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिदिध्यते ।
यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྐྱབས་པར་འོས་པའི་བྱད་པར་དང་།
ལྷ་པ་གྱུ་ཆེར་འབའ་ཞིག་འདོད།
མོལ་པའི་ཚུ་སྤྱིས་ཅེ་དགའི་མཆོ།
གསེར་གྱི་གྲན་ལ་སོགས་པ་བཞིན། ॥ ७९

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।

पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकस्मरायणम् ॥८०॥

བཟིན་པ་ ཆོག་ སྤྱད་ མང་པོ་ ཉིད་ །

འདི་ནི་ ལྷུག་པ་ རྟག་གི་ གསལ་སྤྱོད་ །

ཆོག་སྤྱོད་བཅད་ལ་ ཡང་ ལྷོ་སྤྱོད་གས་པ་ །

མེན་པ་ འདི་ཉིད་ གཅིག་སྤྱོད་ བཞེད་ ॥ ༨༠

तद्गुरुणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।

उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ་ ལྷོ་ དང་ ཡང་པ་ རྟག་སྤྱོད་ །

མང་ དང་ ཉུང་པ་ཉིད་ སྤྱོད་པ་ །

མཐོ་དམན་གྱི་ རི་ རྟག་པ་ དེ་ །

བཟིན་པ་ལ་སྤྱོད་གས་རྟག་སྤྱོད་ལ་མཐོང་ ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।

पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

རྩལ་གྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་སྟན་ཅན།
 མཁའ་གསལ་བའི་རྩལ་ ལ་ གནས་བའི།
 གོས་ དམར་ མཛེས་ བཞིན་ རྩལ་སྟན་མ། ॥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बभ्रन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥
 ཅེས་པ་ བཟློན་དང་ལྷན་བའི་ཆོག།
 ཆོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ སྟུར།
 གཞན་དག་ འབྲུགས་མིན་ མཛེས་བ་ཡི།
 ཆོག་རྣམས་ བཟློན་པར་ འདོད་དེ་ དཔེར། ॥ ༤༣

पयोधरतटोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ॥८४॥
 རྩལ་འཛིན་ངོས་གྱི་ སང་ ན་ གནས།
 མཚན་སྟེ་ ཉི་འོད་ གོས་དང་ལྷན།

ཐུ་ཐུན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཟེར་བར་བྱེད་མི་འགྱུར། ॥ ༥༡

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཇོས་པ་ འཛིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཇོས་པའོ།

དེ་ཡང་ གཏས་གྱི་མཛོན་བཛོད་ དང་།

བསྐྲུགས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལའང་ *སྦྱར། ॥ ༥༢

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवाद्भूशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀའ་ཐུབ་པར་བོ་ བྱིད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྒྱལ་ རི་ གཙང་ས་ དག།

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁྱིལ་ ངེས་པར་ བྱིས། ॥ ༥༣

འཇིག་རྟེན་ འདས་ བཞིན་ བཟློན་ འདོད་ ཀྱིས །

དོན་གང་ ཤིན་ཏུ་ བཞེད་ གྱུར་པ །

དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཤིན་ཏུ་ བློ་ །

ཆོས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ༥ ༥༠

देवधिष्ण्ययमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।

युष्मत्पादरजःपातधौतनिःशेषकिल्बिषम् ॥ ६० ॥

དེང་ནས་བརྒྱུད་སྟེ་ བདག་གི་བྱིས །

ལྷ་ཡི་བྱིས་ བཞིན་ བཟློན་པར་ འོས །

བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་རྒྱལ་ ལྷུང་བ་ ཡིས །

ཉེས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྱས ༥ ༥༡

अल्पश्रिमितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।

इदमेवंविधम्भावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥ ६१ ॥

བྱིད་ཀྱི་ ལུ་ས་ འདི་ལྷ་བྱུར །

ནས་པར་སྐྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི །

ངེས་པར་མ་བཟློགས་ བྱིད་པོ་ ཡིས །

ནས་མཁའ་ དག་ནི་ ལྷུང་རུར་ ལྷུལ ༥ ༥༢

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्रौडोपलालितं ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

२२३३ ५३८८ २३३३ २३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ॥ ७३

अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ।

२३३३ २३३३ २३३३ २३३३ २३३३ ॥ ७३

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लङ्घ्या [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

ཀྱ་མུ་དྲ་ནི་མིག་འཇུག་ཞིང་།

བདུ་དག་ཀྱང་མིག་འཇུད་ཅེས།

མིག་གི་བྱ་བ་བཀོད་པ་ལས།

དེ་ཡི་བཟོད་བྱིད་སྒྲ་དག་ཐོབ། ॥ १८

निष्ठूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयं ।

अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

ནཱི་དྲ་དང་ཡུའི་ཆོ།

སྒྲུགས་སོགས་བདུགས་པའི་འཇུག་བརྟེན་པ།

ཤིན་དུ་མཛོས་དེ་གཞན་དུ་ནི།

གོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྷས་པ་བརྟེན། ॥ १९

पञ्चान्यर्कांशुनिष्ठूताः पीत्वा पावकविप्रुषः ।

भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

བདུས་ཉི་ཟེར་སྒྲུགས་པ་ནས་ས།

འཕྱངས་ནས་རྟུལ་དམར་སྒྲུགས་པ་ཡི།

ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ཟེར་མ་ དག །
 འིན་དུ་སྐྱགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ॥ ༩༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठीवति बधूरिति ।
 युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛོས་དེ་ མི་མཛོས་པ་ །
 རྒྱུ་མ་ སྐྱགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ་ །
 ཅིག་ཅར་ ཉིད་དུ་ ཆོས་ དུ་མ་ །
 བཞིན་པ་ དག་ གྲང་ འདོད་དེ་ དཔེར ॥ ༡༠༠

गुरुगर्मभराक्लान्ताः स्तन्यो^{र्}मेधपङ्क्तयः ।
 अत्रलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिशेते ॥६८॥

སྐྱི་བའི་མང་ལ་ ཁར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །
 འཁུན་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྤང་ །
 འདི་དག་ གཡོ་མེད་སྤིང་གི་ རི་ །
 སང་བ་དག་དུ་ ཡང་དག་ཉལ ॥ ༡༠༡

उत्संगशयनं सख्याः स्तननं गौरवक्लृप्तमः ।

इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दर्शिताः ॥६६॥

सोमस'भेदे' स'स' ३'स' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ॥ ७७

तदेतत्काव्यसर्वस्वं समाधिर्नाम यो गुणः ।

कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ॥ १००

इति मार्गद्वयं भिन्नं तत्त्वज्ञानात् ।

तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्रुम्प[9a]तिकवि स्थिताः ॥१०१॥

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

५' ५' ५' ५' ५' ५' ।

དེ་དག་ རྟེན་པ་ ལྷན་ངག་མཁན།

སོ་སོ་ལ་ གནས་ བརྗོད་ མི་ནས། ॥ १०१

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।

तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བྱར་ཤིང་འོ་མ་ བྱར་སོགས་ ཀྱི།

མངར་བ་ཉིད་ རི་ བྱར་བར་ཆེ།

དེ་ལྟ་མོད་ ཀྱི་ དེ་བརྗོད་བར།

དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ ལྷས་མཁྱེན། ॥ १०३

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।

अमन्दश्चाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ གྱིས་གྲུབ་ སློབས་པ་ རང་།

མང་ཏུ་སློབ་པ་ རི་མོད་ རང་།

མངོན་བར་ སློབ་བ་མི་དམན་བ།

ལྷན་ངག་ ཕན་སྤུས་ཆོགས་པའི་གྱི། ॥ १०३

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतं ।
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

གལ་ཏེ་ སྒྲོན་གྱི་ བག་ཆགས་ ཡོན་དན་ གྱིས།
ཆེས་འབྲེལ་ སྒྲོབས་པ་ མེད་བྱང་ མེད་པ་ལའང།
ཐོས་ དང་ འབད་པ་ དག་གིས་ ངག་ བདེན་ ན།
ཇི་ཞིག་ལྟར་ ཡང་ ཇེས་པར་ ཆེས་འཛིན་བྱེད། ॥ ༡༠༤

तदस्ततन्द्रैरनिशं सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।
कृशे कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

དེ་ཕྱིར་ བླགས་འདོད་ནམས་ གྱིས་ དྲག་ཏུ་ བློ།
སྒྲོབས་ལས་ མེད་པར་ རིམ་པས་ དབྱངས་ཅན་ བདེན།
སྒྲན་ངག་ རྒྱང་བྱ་ལ་ ཡང་ ངལ་བྱས་ མི།
སྐམས་པའི་འདུན་ས་དག་ཏུ་ འདུག་ལ་ དབང་ ॥ ༡༠༥

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ བྱས་པའི་ སྒྲན་ངག་མེ་ལོང་ལས་ ལས་ རྣམ་པར་
སྒྱུ་བའི་ རྣམ་པར་བཅད་པ་ ལྟེ་ དང་པོའོ ॥

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कालसन्धेन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

झङ्ग'दवा' खड्डे'स'वर'मुदे'स'प्ये ।

के'स' कस'स' सु'र' जे'स' र'व'दु' वडे'र ।

दे'के' र'दु'अ'द' कस'दु'वा' छे ।

दे'द'वा' स'सु'स' सु'स' अ'रु'द' दु'स ॥ २

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

दे'र'गु'द' कस'दु'वा' स'वे'र' के ।

झु'र'गु'झु'व'र'वे'र'कस'स'गु'स' वझु'र ।

दे'डे'र' र'व'दु'अ'वा'स'सु'र' सु'र ।

अ'द'स'सु'द'वा' अ'दे' व'द'वा'वी'दे ॥ ३

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।

साधारणमलंकारजातमद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ལམ་ བློ་ རྣམ་པར་དབྱེ་དོན་དུ །
 གྱུན་ འགའ་ཞིག་ནི་ སྤར་ ཡང་ བརྟན །
 བྱུན་མེད་དག་དུ་ གྱུན་ གྱི་ བློ །
 རྩོགས་ འདི་ རབ་དུ་ བརྟན་པར་བྱ ། ३

स्वभावाख्यानमुपमा रूपकं दीपकावृत्ति ।
 आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

རང་བཞིན་ བཟོད་ དང་ དཔེ་ དང་ བློ །
 གཞུགས་ཅན་ གསལ་བྱེད་ བསྐྱོར་བ་ དང་ །
 འགོག་ དང་ དོན་གཞན་བཞོད་བ་ དང་ །
 རྩོག་བ་ཅན་ དང་ སྤྱིད་བ་ཅན ། ८

समासातिशयोक्त्येक्षा हेतुः सूक्ष्मो लवः क्रमः ।
 प्रेयो रसवदूज्जंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

བསྐྱུས་ དང་ བྱལ་བྱུང་ རབ་བརྟན་དང་ །
 གྱི་ དང་ སྤྱི་མོ་ ཅ་ དང་ རིམ །

དགའ་ དང་ ཉམས་ལྷན་ གཞི་བཟིན་ཅན།
 རྣམ་གྲངས་ བཟོད་ དང་ ཀྱན་དུ་ བན ॥ ༥

उदात्तापह्नुतिश्छिद्यविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

ཀྱི་ཆེ་ བཟློན་དོར་ སྦྱར་བ་ དང་།
 བྱད་པར་ བཟོད་ས་པར་ སྦྱོར་བ་ དང་།
 འགལ་ དང་ སྐབས་མིན་ བཟློད་པ་ དང་།
 རྩེ་བཟློད་ ཇེས་པར་ བཟླན་བ་ དང་ ॥ ༦

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संसृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

ལྷན་ཅིག་ བཟོད་ དང་ ཡོངས་བཟེས་ ཤིས།
 རབ་སྦྱེལ་ རེ་ནས་ དགོངས་པ་ཅན།
 འདི་དག་ ཆོག་རྣམས་དག་གི་ རི།
 ཀྱན་དུ་ སྦྱོན་གྱི་མཁས་པས་ བཟླན ॥ ༧

नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विचृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृत्यर्थथा ॥८॥

དངེས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ དང་ ।

གནས་སྐབས་ ལྷ་ཚོགས་ དངེས་གསལ་བྱེད་ ।

དེ་ རི་ རང་བཞིན་བརྗོད་པ་ དང་ ।

ཇིགས་ ཞེས་ དང་པོའི་ཀླན་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༤

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिमिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

མུ་ རི་ དམར་ ཞིང་ ལྷག་པ་ དང་ ।

གཤོག་པ་ ལྷང་ ཞིང་ མཉེན་པ་ དང་ ।

མགྲིན་པ་ ཁ་དོག་ གསུམ་འཕྲེང་ཅན་ ।

ནི་ཙྰ་ འདི་དག་ ཚོག་འཇམ་ལྷན་ ॥ ༥

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ སྒྲན་སྒྲོགས་ ཡིང་ །

མིག་ བྱི་ ཀླན་དུ་ འཕྲུལ་བ་ ཡི །

ཕག་རོན་ ཅེ་འདོད་ དགའ་མ་ལ །

ཡོངས་སུ་བསྐོར་ནས་ མཆུ་དག་སྒྲོར་ ॥ ༡༠

वध्नन्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृतिं ।

नेत्रे चामीलयन्नेष प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་མ་ཡི་ བྱི་ རིག་པ་ འདི །

ལུས་ལ་ སྒྲ་ཡོང་ སྒྲིས་པ་དང་ །

ཡིད་ བྱི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང་ །

མིག་དག་ རུས་པར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག ॥ ༡༡

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।

जटाभिः स्निग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྒྲོན་ ལག་ན་ཐོད་པ་བྱི །

གསལ་བ་རྒྱ་བའི་ཚོད་པན་དང་ །

ལྷ་མ་ ཞིང་ རྣམ་པའི་ རལ་པ་ཅན།
 སྤྱུ་མཆོག་ སྤྱལ་མཆོན་ གསལ་བར་གྱུར། ॥ 23

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं कान्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་ རང་ སྤྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྣམ།
 རང་བཞིན་ བཟོད་པ་ འདི་འདྲ་ འདི།
 བསྐྱན་བཅོས་རྣམས་ལ་ སྤྱལ་སྤྱིད་ཉིད།
 ལྷན་ངག་རྣམས་ལ་ སྤྱལ་སྤྱིད་ཉིད། ॥ 23

यथा कथंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं प्रदर्शयते ॥१४॥

རི་ལྷར་ཅི་ཞིག་ལྷར་ མཆོངས་པར།
 གསལ་བ་ གང་ཏུ་ རྟོགས་བྱེད་པ།
 དེ་ རི་ དབེ་ ཞེས་བྱ་ ཞེ་ དེའི།
 ལྷས་པ་ འདི་ནི་ རབ་བཤད་བྱ། ॥ 24

अम्भोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।

इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

अदोसःसः सुदःगुः दमःसवेयः ॥ १॥

कुम्भेसःसवेयः सुदःसवेयः ॥

उसःसः कुसःसवेयः सुदःसवेयः ॥ १॥

सकुम्भेसःसवेयः कुसःसवेयः सुदःसवेयः ॥ १॥

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव ।

इति प्रतीयमानेकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

सुदःगुःसवेयः सुदःगुःसवेयः ॥

सुदःगुःसवेयः सुदःगुःसवेयः ॥

सुदःगुःसवेयः सुदःगुःसवेयः ॥

सुदःगुःसवेयः सुदःगुःसवेयः ॥ १७॥

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति ।

सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेव्यते ॥१७॥

ཁྱིེ་ཀྱི་གདོང་བཞིན་པ་དུ་ནི།
 རྣམ་པར་གྱུས་པར་གྱུར་ཅེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྗོད་པའི་ཕྱིར།
 བརྗོད་པའི་དཔེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ ༡༧

तवाननमिवाम्मोजमम्मोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱིེ་ཀྱི་གདོང་བཞིན་ཅུ་སྒྲིམ་དེ།
 ཅུ་སྒྲིམ་བཞིན་དུ་ཁྱིེ་ཀྱི་ཞལ།
 ཞེས་པ་པན་ཚུན་ཁྱད་འཕགས་ནི།
 བརྗོད་པར་བྱེད་འདི་པན་ཚུན་དཔེ། ॥ ༡༨

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱིེ་ཞལ་པ་དུ་ཉིད་དང་མཚུངས།
 ལེགས་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ བཞན་ བརྗེག་ ཡིན།
 འདི་ནི་ ཇེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ། ॥ ༡༥

पद्मन्तावत्तवान्वेति मुखमन्यच्च तादृशं ।
 अस्ति चेदस्तु तत्कारीत्यसावनियमोपमा ॥२०॥

རེ་ཞིག་ ཁྱིད་ བཞོང་ བརྗེ་ཡི།
 ཇེས་འགྲོ་ བཞན་ཡང་ དེ་འདྲ་བ།
 བཤད་ཅི་ ཡོད་ན་ དེ་ ཁྱིད་འགྲུར།
 ཞེས་པ་ འདི་ནི་ ཇེས་མེད་དཔེ། ॥ ༡༦

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्येव मुखन्तय ।
 ह्लादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमितीदृशी ॥२१॥

ཁྱིད་ བཞོང་ མཇེས་པ་ ཁོ་ན་ཡིས།
 རྗེ་བའི་ ཇེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ དེ།
 དགའ་སྦྱིད་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་པ།
 འདི་འདྲ་ བཟུས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད། ॥ ༡༧

त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इत्येव भिदा[11a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ॥ ३३

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्दोर्विकथनैः ।
पद्मेपि सा यदस्त्येत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ।
सुदंशुं नमः ३ सुदंशुं नमः ॥ ३३

यदि किञ्चिद्वेत्यग्रं सुप्तं विभ्रान्तलोचनं ।
तस्मै मुखश्रियन्धत्तमित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

གལ་ཏི་བརྒྱ་འགའ་ཞིག་ ལ །
 མྱིན་ལོགས་ རྣམ་འབྲུལ་ མིག་ལྔ་ན་ ར །
 ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ་ འཛིན་ ཏི །
 ཞེས་པ་ འདི་ རི་ མཛད་བྱང་དཔེ ༥ ༤༠

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखन्तघन्मुखाशया ।
 इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་སྤྱ་ ཁྱོད་ གནོང་ རི་བོང་ཅན །
 ཞེས་ བདགས་ ཁྱོད་ གནོང་ བསམ་པ་ ཡོས །
 རྒྱ་བ་ཡི་ ཡང་ རྩེས་སྤྱ་བསྐྱེགས །
 ཞེས་ འདི་ མྱོངས་པའི་དཔེ་རྩ་ བཤད ༥ ༤༡

किम्पयः प्रभ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुख ।
 मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

བད་ནང་ བྱང་པ་ འཁོར་རམ་ ཏི །
 ཁྱོད་ གནོང་ ལ་ མིག་ གཡོ་ འམ་ ཏི །

བདག་གི་སེམས་ནི་ནམ་པར་གཡོ།
 ཞེས་པ་ འདི་ནི་ བོ་ཚོས་དཔེ ༥ ༢༩

न पद्मस्येन्दुनिग्राहस्येन्दुलज्जाकरी द्युतिः ।
 अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ཆེ་བ་ སྒྲེངས་ཤེད་ བཟོས་པ་ འདི།
 ཆེ་བས་ ཚད་གཏོད་ བསྐྱ་ མིན།
 དེ་ཤིས་ ཁྱིད་ཀྱི་ གདོང་ ཉིད་དོ།
 ཞེས་པ་ འདི་ནི་ དེས་པའི་དཔེ ༥ ༣༠

शिशिरांशुप्रतिबुद्धि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।
 अम्मोजमिय ते धक्कमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསེལ་ཆེར་ཅན་གྱི་ དགུ་ཆུང་དང་།
 དཔལ་དང་ལྷན་ དང་ དེ་བཟང་གིས།
 ཁྱིད་ཀྱི་གདོང་ ནི་ ཅུ་སྒྲིས་བཞིན།
 ཞེས་པ་ སྐུར་བའི་དཔེ་ཅ་ བཤད ༥ ༣༡

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

མཚུངས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ བཟོད་བྱའི་ རྩེར །

མཉམ་ཉིད་དཔེ་ ལྟ་ ཇི་ལྟར་ ན །

སྒྲིད་ཆལ་སྒྲིང་ འདི་ རྩེ་སྒྲ་ བཞིན །

མཇོས་ལྟ་ སྒྲ་ལ་ཀྱ་ན་ན ། २०

पद्मं बहुरजश्चन्द्रः क्षयीं ताप्यान्तषाननम् ।

समानमपि सौत्सेकमिति निन्दोपमा मता ॥३०॥

པདྨ་ རྩེ་ལ་ མང་ ལྷ་བ་ འཇོར །

དེ་དག་ ལས་ ཉི་ ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན །

མཚུངས་པ་ ལ་ ལང་ ཁྱད་བར་བཅས །

ཞེས་པ་ སྒྲིད་པའི་ དཔེ་ཅུ་ འདོད ། २०

ब्रह्मणोऽप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमेव्यते ॥३१॥

བདུས་ མཛས་པ་དག་ཀྱང་སྒྲིད།
 རྩ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཛིན།
 དེ་དག་ ཁྱིད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 དེ་ རི་ བསྐྱལ་ས་པའི་དཔེར་ བཛྲོད་ རོ ॥ 32

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དན་ཐུན་ ཉས་ སྒྲོན་ འབྱུར་ ཡང་།
 ཁྱིད་གདོང་ རྩ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 བཛྲོད་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད།
 ཉེས་པ་ བཛྲོད་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རིག་ ॥ 32

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བཟུ་པ་ དང་ སྒྲོན་རྩ་ དང་།
 ཁྱིད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ གསུམ་པོ་ རི།

མན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ།

དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བཟོད་དོ ॥ २२

न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम् ।

कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དེ་མ་ཐུན་ ཞིང་ རྒྱན་གུར་པ།

ཁྲོད་ བཟོད་ སང་ བ།

འགལ་བའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ མེད།

ཅེས་པ་ དགག་བའི་དཔེ་ ཉིད་དོ ॥ २३

मृगक्षणाङ्कत्त्वद्वक्त्रमृगोणैर्वाङ्कितः शशी ।

तथापि सम एवास्मै नोत्कर्षीति अद्वयमा ॥३५॥

ཁྲོད་ བཟོད་ རི་དྲགས་མིག་གིས་མཚན།

ཁྲོད་ རི་དྲགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན།

དེ་ཐུན་ ཡང་ འདི་ མཚའས་ཉིད།

ཁྲོད་འཕགས་ མིག་ ཞེས་ མཇོས་བའི་དཔེ ॥ २४

न पद्मं मुक्कमेवेवं न भृङ्गौ चञ्चुपी[12a] इमे ।
इति यिस्यष्टसाहस्रयास्तत्वाख्यानोपमैव सा ॥३६॥

ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॥ ३७

चन्द्रारश्मिन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनेशमयस्तुत्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ।
ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॥ ३८

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव कवित् ।
त्वदाननं विभातोति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

བསྐྱ་མཛེས་པའི་སྒྲིང་པོ་ཀུན།
 འགའ་ཞིག་དག་ཏུ་བསྐྱས་པ་བཞིན།
 ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་ནི་ནམ་མཛེས་ཞེས།
 དེ་ནི་བྱང་མིན་དཔེ་ཞེས་རིག། ༢༤

इन्दुविम्बादिव विषं चन्दनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३६॥

རྩ་བའི་གཟུགས་ལས་དྲག་བཞིན་དང་།
 ཅན་ལས་ནི་མེ་བཞིན་དུ།
 ཞལ་འདི་ལས་ནི་ཕྱབ་མའི་ཆོག།
 ཅས་པ་སྤྲོད་པ་མིན་པའི་དཔེ།

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशयः* प्रथयन्ती बहूपमा ॥४०॥

ཅན་མུ་ཆུ་དང་རྩ་འོད་དང་།
 རྩ་ཤེལ་སོགས་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱི་ནི།

ཇེག་པ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱད་པར་ དག །
གསལ་བར་བྱེད་པ་ མང་བའི་དཔེ ༥ ༥༠

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वाङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལྷས་སྤ་ བྱོད་ གདོང་ བཞིན་རས་ བློ
ཟླ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན་ །
བསྐྱའི་ བང་ནས་ སྤྱང་བ་ བཞིན་ །
ཞེས་པ་ འདི་ བློ་ བློ་འགྱུར་དཔེ ༥ ༥༡

पुष्पयातप इवाह्नीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यधालक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འདྲ་གྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་ས་ ཡིས་ །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན་ །
རྣམ་པར་གཞོན་པས་ བྱོད་ལ་ དབལ་ །
འཛོན་ ཞེས་ དེ་བློ་ སྤྱང་བའི་དཔེ ༥ ༥༢

वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।

एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

वाक्यार्थः एकः द्वयः द्वयः द्वयः ॥ १ ॥

वाक्यार्थः एकः द्वयः द्वयः द्वयः ॥ २ ॥

वाक्यार्थः एकः द्वयः द्वयः द्वयः ॥ ३ ॥

वाक्यार्थः एकः द्वयः द्वयः द्वयः ॥ ४ ॥

त्वदाननमधोराक्षमाविर्दानदीधिति ।

भ्रमद्भ्रमिवाल्क्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

भ्रमद्भ्रमिवाल्क्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥ १ ॥

भ्रमद्भ्रमिवाल्क्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥ २ ॥

भ्रमद्भ्रमिवाल्क्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥ ३ ॥

भ्रमद्भ्रमिवाल्क्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥ ४ ॥

नलिन्या इव तन्वद्भ्रयास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।

मया मधुवतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

བསྒྲུ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་སྒྲུ་མ །

བསྒྲུ་ བཞིན་དུ་ རེ་ཡི་ གཏོང་ །

སྒྲུང་ཅི་ སྒྲོད་བས་ བཞིན་དུ་ བློ །

བདག་གེས་ འབྲུངས་ཤིང་ འབྲུངས་ཤིང་ཅིས ༥ ༧༥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।

साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉིང་བཀོད་ནས །

རེ་ཡི་ཆོས་ མཐུན་ རབ་བཀོད་བ །

མཉམ་བ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་བ་ཅན །

ཟླ་པོ་ དངོས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར ༥ ༧༦

नैकोपि त्वाद्दृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।

ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

སྐུལ་པོ་ནསས་ བློ་ སྒྲིས་སྐུར་ ཀྱང་ །

ད་མ་ ཁྱོད་ འདྲ་ གཅིག་ ཀྱང་ མེད །

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀྱང་འབྱུང་ནི །
གཉིས་པ་ རེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན ༥ ༧༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यद्भवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ཉུག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །
ཆོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱས་ནས །
གང་ ལྷན་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །
སྒྲིང་བའི་དཔེ་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ༥ ༧༨

दिवो जागर्ति रक्षायै पुलोमारिर्भुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

དུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མཐོ་རིས་ དང་ །
བྱིད་ནི་ ས་སྤང་ མེལ་ཆེ་བྱེད །
དེ་ཡིས་ དྲིགས་ལྷན་ ལྷ་མེན་ དང་ །
བྱིད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛོམས ༥ ༧༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धाम्ना सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।
राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

शुभ्रं चो महेसं वसं ह्वं च नृप ।
महिं प्रीतिं प्रीतिं किं प्रीतिं नृप ।
महिं वसं शुभ्रं चो महेसं ह्वं च नृप ।
तेन च नृप किं शुभ्रं चो महेसं नृप ॥ ५०

न लिङ्गवचने भिन्ने न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

ह्वं चो महेसं वसं ह्वं च नृप ।
महिं वसं नृप चो महेसं वसं नृप ।
महिं वसं नृप चो महेसं वसं नृप ।
महिं वसं नृप चो महेसं वसं नृप ॥ ५१

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तव्येषा स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयस्मै विद्या धनमिवार्जिता ॥५२॥

མ་ནིང་ འདི་འགྲོ་ བྱད་མེད་ བཞིན།
 བྱད་མེད་ འདི་ སྒྲ་ སྒྲེས་པ་ བཞིན།
 བདག་གི་ གོ་གས་ འདི་ སྒོ་ག་ནམས་ བཞིན།
 རིག་པ་ ནམས་ བསྐྱབས་ རོར་བཞིན་ནོ། ॥ १२

भवानिव महीपाल देवराजो विराजते ।
 अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྒྲོང་པ་ བྱོད་ བཞིན་དུ།
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ ནམ་པར་མཛོལ།
 ཚ་ཟེར་ཅན་གྱི་ ནམ་པ་ལ།
 མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་ནུས། ॥ १३

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च कचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞེས་པ་ དེ་ལྷ་བྱ་ ལ་སོགས།
 སྐལ་བཟང་ ནམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད།

སྒྲིང་བ་ འགའ་ལ་ འག་རིག་ རྣམས་ ।

མི་དགེས་པ་ ཡོད་ རི་ལྟར་ན ॥ ༡༥

हंसीव धवलश्चन्द्रः सरांसीवामलं नभः ।

भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५५॥

ངང་མོ་ བཞིན་དུ་ རྒྱ་བ་ དྲཀར་ ।

མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁའ་རི་མེད་ ।

བྱི་ བཞིན་ དཔའ་བོ་ རི་ལ་ སྤུས་ ।

ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མི་བྱིར་ གསལ་ ॥ ༡༦

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारणं त्वत्र चिन्त्यताम् ।

इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་འདྲ་ སྤངས་ཏེ་ མཁའ་ས་རྣམས་ གྱིས་ ।

སྤྱི་ ཡང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་པར་བྱོས་ ।

བཞིན་ལྟར་ལྟ་བུ་རི་ལྟར་སྤྱི་ ।

མཐུན་མཚུངས་ཡང་དག་མཚུངས་ དང་ མཉམ་ ॥ ༡༧

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।

प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་པར་གསལ །

རབ་གསལ་གཞུགས་ཀྱི་ཆེ་པོ་དང་ །

གཉེན་པོ་དང་ནི་དག་ཆེ་དང་ །

སོ་སོར་རྟོག་དང་འགལ་དང་འདྲ ॥ ༥༧ ॥

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।

प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བརྟ་བཅས་དང་ནི་བསྐྱུ་བ་དང་ །

རིགས་མཐུན་ཆེས་སུ་སྐྱུ་བ་དང་ །

གཞུགས་བརྟན་དང་ནི་སོ་སོར་སྟེན །

གཞུགས་མཆུངས་མཉམ་དང་ཡང་དག་འཇལ ॥

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।

कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་སྒྲིགས་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་ཉིད།
 དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སྒྲིགས་དང་།
 རབ་དུ་སྒྲི་དང་སོ་སོར་བསྒྲིག། ॥ ४०

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥
 རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྒྲི་དག་དང་།
 གང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་ཆོག།
 འབྲུ་མང་པོ་ཡི་ཆོག་སྒྲིད་དང་།
 རི་བོང་མཚན་མའི་གདོང་ཅན་སྒྲིགས། ॥ ६०

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འབྲན་དང་བྱུལ་དང་སྤང་བ་དང་།
 འཁྲུ་དང་མི་མཐུན་སྒྲིགས་པ་དང་།

འཕག་པ་ ནང་ བེ་ འཕྱ་པ་ ནང་ །

སྒྲ་འཕེབས་བྱེད་ ནང་ སྒྲོན་པ་ ནང་ ॥ ༩།

विडम्बयति संरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।

तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ཙ་འདྲི་པ་ ནང་ འགོག་པ་ ནང་ །

གོད་ ནང་ ལྷག་དོག་ མི་བཟོད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ སྒྲ་པ་བཟང་ འཕྱོག་བྱེད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ མཛོས་པ་ རྩས་བྱེད་ ནང་ ॥ ༩༢

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]।4a]धिरोहति ।

तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

དེ་ནང་ འགྲན་ ལས་ ཚར་གཅོད་ ནང་ །

དེ་ནང་མཚུངས་ ལས་ ལྷག་པར་འཇགས་ །

དེ་ཡི་རྩིས་སྒྲ་ ཀང་འཛོག་ ནང་ །

དེ་ཡི་ནུས་པ་ ལ་ འཛོག་ ནང་ ॥ ༩༣

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिनः ॥६४॥

दे'यी'हेस'अग्ने' हेस'सु'अकै' ।

दे'यी'ए'अ'कु'दे'अ'गो'रा' ए' ।

दे'यी'हेस'सु'गु'उ'उ'स'ए' ।

अ' क'स' अ'कु'ए'स'ए' रा'स'गु'ए'यी' ॥ ७८

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

अ'ए' अ'अ'अ'अ'अ' ।

अ'अ'अ' अ' अ' अ' अ' अ' ।

अ'अ'अ' अ' अ' अ' अ' ।

अ'अ'अ' अ' अ' अ' अ' ॥ ७९

अंगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिषः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་པའི་འབྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ རྣམས་ །
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་འོད་ཟེར་ ནི་ །
 མེ་ཏོག་ཏུ་གྱུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དབལ་ །
 ཁྱོད་ནི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱི་ ॥ ༤༩

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितमुखे-दोऽर्ज्योत्सनेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥६१॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྐྱུགས་ཏེ་ །
 སྤྲུམ་ བསྐྱུས་པའི་གཟུགས་ཅན་ལོ་ །
 བཞིན་ རྩ་ འཇུག་པའི་རྩ་འོད་ཅེས་ །
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱུས་ དང་ མ་བསྐྱུས་པའོ་ ॥ ༥༡

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कजं ॥६८॥

སོར་མོ་དམར་པའི་ འདབ་ཐེང་དང་ །
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན་ །

ཁྱིེ་གྱི་ ཉམས་གྱི་ ཅུ་སྒྲིམ་ནི །

ས་སྒྲིེང་ནམས་གྱི་ སྒྱི་པོར་ འཛིན ། ༩༮

अंगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्यताम् ।

तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་ སོགས་ དང་ །

ཀང་བས་ པརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས །

དེ་འོས་ གནས་སྒྲུ་ རྣམ་བཀོད་པ །

འདི་ནི་ མཐའ་དག་ གཟུགས་ཅན་ཉིད ། ༩༩

[14b] अकस्मादेव ते चण्डि स्फुरिताधरपल्लवम् ।

मुखं मुक्तारुचो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरीः ॥७०॥

གདུམ་མོ་ སྒོ་བུར་ ཉིད་དུ་ནི །

ཁྱིེ་གཤོང་ མཆུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ གཡོ་ །

རྒྱལ་གྱི་ཅུ་ཡི་ཐོག་པ་ཡི །

དོག་པ་ སྒྲིེག་ འོད་ཅན་ འཛིན ། ༡༠

मञ्जरीकृत्य घर्मायु पल्लवीकृत्य चाधरं ।

नान्यथा कृतमत्रः पद्योदयद्वयकम् ॥७१॥

अदिरं विं द्रुमं कुं रं विं वरं वृष ।

मकुं वरं वरं अदिरं विं वृषं वृ ।

वदिरं विं वरं वरं वरं वरं वृष ।

दं वृषं वरं वरं वरं वरं वरं ॥ ७२

वलितम्बु गलद्वर्मजलमालोहितेक्षणम् ।

विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७३॥

वदिरं वरं अदिरं वरं वरं वरं वरं वरं ।

द्रुमं वृषं वरं वरं वरं वरं वरं ।

वृषं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।

वृषं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ॥ ७४

अविकृत्य मुखाङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।

आसीद्वर्णितमत्रेदमलोक्यविरूपकम् ॥७५॥

འདིར་ནི་ གདོང་པའི་ཆ་ཤས་དག།
 རྣམ་འགྱུར་ མ་བྱས་ གདོང་པ་ཉིད།
 བསྐྱར་ བཞོད་བྱས་ དེས་ན་ འདི།
 ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ བཟུགས་ཅན་ནོ༥ ༥༢

मदपाटलगण्डेन रक्तनेत्रोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

བཟོས་མ་ ཟུང་པའི་ འཁྱར་ཆོས་དམར།
 མིག་གི་ ཞུའྲལ་ དམར་པོ་ཅན།
 བྱོད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ ཟུ་བོ་ནི།
 འདི་ཡང་ དམར་པའི་ རང་བཞིན་ བྱས༥ ༥༣

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ मिदाकरो ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ མོགས་ཀྱི།
 ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ བསལ་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན།

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དད་བྱེད། ॥ 214

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७६॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་པའི་ མེ་ཏོག་འབར།

གཡོ་པའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན།

ཞེས་པ་ མེ་ཏོག་ བྱང་བ་ དག།

འགྲོགས་པས་ལྷན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནི། ॥ 215

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं स्निग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तञ्चाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་ གཡེར་ རླེང་དང་།

སྒྲུག་པའི་ མིག་གི་ བྱུང་ལ་ཅན།

རླེང་ བྱུང་ལ་ མི་འོས་པས།

འོས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནི། ॥ 216

དྲི་སྒྲུ

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।

रूपकं विषमं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས་ ཡན་ལག་ རྣམས་ ।

གཟུགས་བྱས་ གཟུགས་སྤྱོད་མ་བྱས་ལ་ ।

བརྟན་པ་ མི་མཉམ་པ་ ཞིས་པའི་ ।

གཟུགས་ཅན་ མཛེས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར་ ॥ ७८

मदरक्तपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।

नर्तिते भ्रूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

སྤྱོད་པའི་ སྐུར་རྩྱུ་རྩེ་རལ་ དཔེར་ཞིང་ ।

སྤྱོད་པའི་འཁྲི་ཤིང་ གར་བྱེད་པ་ ।

ཁྱེད་ གཤོང་ རྩེ་པས་ ཡིད་སྤྲུབ་ཀྱིས་ ।

འཛིག་རྟོན་ གསུམ་པོ་ གཞིས་པར་རྩུས་ ॥ ७९

हरिपादः शिरोलम्बनजहुकन्याजलांशुकः ।

जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥ •

ཐོ་རྒྱའི་བྱ་མེད་ཅུ་གོ་ས་ ཉི །

འཕྲོག་བྱེད་ ཀང་བའི་ཕེར་ལྷན་བ །

ལྷ་མེན་ རོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི །

དགའ་ཕྱོག་སྐལ་མཚན་ སྐལ་གྱུར་ཅིག ༥ ༥

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।

पादै तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥

གང་ཞིག་ བྱེད་བར་ཆོག་ས་བ་ཡི །

གཞུགས་ཀྱི་སྐལ་མཚན་ འདི་འདྲ་བ །

དེ་ནི་ ཀང་བ་ ལ་ བཞོད་ དེ །

བྱེད་བར་དང་བཅས་གཞུགས་ཅན་ནི ༥ ༥

न मील्यति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।

त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणार्थेव प [15b] श्यति ॥८२॥

བདེ་ནམས་ནི་ མི་ལྷན་ ཞིང་ །

ནམ་མཁའ་ལ་ ཡང་ མི་འགྲོ་བ །

ཁྱོད་གདོང་ཟླ་བས་ བདག་གི་ནི །
 སྒྲིག་ནས་ས་ འཕྲོག་བ་ ཉིད་དུ་ བཅུ ༥ ༤༢

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धत्वात् रूपकं ॥८३॥

ཟླ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །
 བཞན་ བྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིར་ །
 ཡང་དག་ བཅུན་ ཉི་ ཉི་ ཡི་ སྒྲིར་ །
 འགལ་བ་ ཞེས་བྱའི་ གཞུགས་ཅན་ནི ༥ ༤༣

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱོད་ནི་ ཟབ་བས་བྱ་མཚོ་དང་ །
 བརྒྱུང་བ་ ཉིད་ ཀྲིས་ རི་བོ་ ཡིན་ །
 འཇིག་རྟེན་ རྣམས་ལ་ འདོད་བ་ནི །
 སྒྲིར་ སྒྲིར་ དགག་ བསམ་ཀླང་འཁྱུང་ངོ་ ༥ ༤༤

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।

कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

འདིར་ནི་ ཟབ་པ་ལ་སོགས་པའི།

སྐུ་ནམས་ དག་གིས་ སྐུ་མཆོ་ རི།

དཔག་ བསམ་གྱིང་ ཡང་ བྱེད་པས་ན།

འདི་ནི་ སྐུ་ཡི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८५

राजहंसापभोगार्हं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।

सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति स्मिष्टरूपकं ॥८६॥

གོགས་མོ་ བྱེད་ཀྱི་ གདོང་ པད་འདི།

རུ་ཚཱི་སྐྱེ་སྐྱེས་ ཉེར་སྐྱེད་འོས།

རི་ཞིས་ བྱང་བས་དོན་ གཉེར་འོས།

ཞེས་པ་ སྐྱེར་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८६

इष्टं साधर्म्यवैधर्म्यदर्शनाद्वौणमुख्ययोः ।

उपमान्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་དང་ནི་པལ་བ་ལ །

ཆོས་མཐུན་ ཆོས་མི་མཐུན་ བཤོང་བས །

དཔེ་དང་ རྩོག་པ་ཅན་ ཞེས་པའི །

གཟུགས་ཅན་ རྣམ་པ་གཉིས་ འདྲོད་ དཔེར ༥ ༥༦

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमाः ।

सन्नद्धोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

ཁྱེས་པས་ ཀུན་ཏུ་ དམར་བ་ ཡིས །

བཀའ་བ་ བཞིན་ གྱི་ རྩ་བ་ འདི །

འཆར་ཀའི་ དམར་བ་ པན་ཆོགས་པའི །

རྩ་བ་ལ་ནི་ རབ་ཏུ་འབྲན ༥ ༥༧

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।

असमग्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་ རྣམས་ ཀྱིས་ བྱི་ རྩ་བ་ འཐུངས །

བདག་གིས་ ཁྱོད་གདོང་རྩ་བ་ འཐུངས །

འདི་ནི་གང་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །
འདི་ནི་ ཉག་ཏུ་ དཀྱིལ་འཁོར་ རྩོགས་ ॥ ༤༠

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

མཛེས་མ་ ཁྱིད་ གདོང་ རྩ་བ་ནི་ །
འདི་ལྟར་ གཞན་ དག་ གདུང་ཁྱིད་བས་ །
རྩ་བ་ཉིད་ཏུ་ བཛོད་མིན་ ཞེས་ །
དེ་ནི་ སྒྲན་བའི་ གཞུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༤༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।
भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

གདུམ་མོ་ ཁྱིད་ གདོང་ རྩ་བས་ ཀྱང་ །
བརྩེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྒྲིག་བ་ །
བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ རྩོན་ །
ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ གཞུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༤༡

གདོང་ ལ་སོགས་པ་ཉིད་ བསྐྱོག་སྟེ །
 བད་ ལ་སོགས་ གཞུགས་བྱས་པས །
 ཡོན་ཏན་ བྱད་འཕགས་ གསལ་བྱེད་པ །
 དེ་ཉིད་ བསྐྱོན་དོར་ གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ༧༯

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शितं धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥६५॥

གཞུགས་ཅན་དཔེ་ཡི་ རྣམ་རྟོག་ རྣམས་ །
 མཐའ་ཡོད་མ་ཡིན་ དེ་ཡི་ཕྱིར །
 རྫོང་ལྷན་ རྣམས་ཀྱི་ རྟོགས་ཅན་ བསྟན །
 མ་བརྟོད་ རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ ། ༧༠

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना ।
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥६६॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྗེས །
 རྟོག་ གཞུགས་ ལ་ནི་ གནས་པ་ ཡིས །

གལ་ཏེ་ ངག་ ཀྱན་ལ་ བཅ་ན།

དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བཞེད་ དཔེར ༥ ༡༩

पवनो दक्षिणः पर्णं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।

नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ལྷོ་ཡི་རྒྱང་ གིས་ འཁྲི་ཤིང་གི།

འདབ་མ་རྩིང་བ་ ལྷགས་པར་བྱད།

དུད་པའི་ལུས་ཅན་མ་རྣམས་ཀྱི།

ཁིངས་པ་ གསར་དུ་ འཛོམས་པར་བྱེད ༥ ༢༠

चरन्ति चतुस्त्रयोविधे लोद्यानेषु दन्तिनः ।

चक्रवालाद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

སྐྱུ་འོ་ རུ་གཏེར་ བཞི་ ངོགས་ཀྱི།

སྐྱེད་མེས་ཚལ་དུ་ སོ་ཅན་དེ།

ཁོར་ཡུག་ རི་བོའི་ ཁོངས་སུ་ ཡང་།

ཁྱེད་ཀྱི་ ཡན་དན་ ཀྱུ་རྩི་ འོད ༥ ༢༡

ཅན་གྱི་པ་ལྟ་བུ་ཡང་།

མཆོག་ལྟ་བུ་འབྱུངས་པ་རྣམས་ལའོ། ༥༥

जलं जलधरोद्गीर्णकुलङ्गहशिखण्डिनां ।

चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ཐུ་འཛིན་གྱིས་ནི་རབ་གདོང་ཐུ།

ཁྱིམ་གྱི་གཞུག་པུད་ལྟ་བུ་ལའི་ཆོག་ལ།

སྒྲིག་གི་ཐག་པ་གཡོ་བ་ཡང་།

མེདོག་གཞུ་ཅན་དག་གི་དབྱང་། ༥༦

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणास्त्रं शरत्सने ।

मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

ཁྱིེད་གྱིས་ཨུཏུལ་ན་བ་ལ།

འདོད་པས་མདའ་ནི་མདའ་ལྟ་བུ་ལ།

ངས་ཀྱང་སེམས་ནི་འཆི་བ་ལ།

གསུམ་པོ་འདི་ནི་མཉམ་དུ་བྱས་། ༥༧

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूनां रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

དགར་ཤོགས་ཀྱིས་ བློ་འདྲ་དགར་ཅན།

འཕྲིལ་བྱེད་ དེ་ཡིས་ མདའ་ལྔ་པ།

དེས་ ཀྱང་ ཆགས་ མདངས་ ཆགས་མདངས་ཀྱིས།

ན་རྒྱུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དཔལ། ॥ ༡༠༦

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्वपूर्वव्यपेक्षिणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

ཞེས་ སོགས་ གསལ་བྱེད་ ཡིན་ མེད་ ཀྱང་།

སྔ་མ་སྔ་མ་ལ་ ཁྱོས་བའི།

ངག་གི་ སྤང་བ་ རབ་ལྡན་ ཡིར།

དེ་ནི་ སྤང་བའི་གསལ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༠༧

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।

कर्शयन्ति तु धर्मस्य मासुतोद्धतशीकराः ॥१०८॥

ལྷོང་གིས་ གཞུགས་པའི་ཆུ་ཕྱིགས་ཅན་ །

སྒྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ ཉི་ །

ཨ་བ་ལེ་བ་ འཕེལ་བར་བྱེད་ །

རྒྱལ་གྱི་ དག་ཉི་ སེལ་བར་བྱེད་ ॥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ནི་ སྒྲིན་གྱི་ཆོག་དག་ དང་ །

ཨ་བ་ལེ་བའི་ ཆོག་དག་གིས་ །

བྱ་བ་ འགལ་བར་ཐུན་བ་ དེ་ །

འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ་ ॥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཆུ་འཛོན་ དག་གི་ སྤོང་བ་ འདིས་ །

ཕྱོགས་རྣམས་ཀྱི་ ཉི་ གོ་སྐབས་ འཕྲོག་ །

སྐར་མ་ ཡི་ ཉི་ ཚོགས་ རྣམས་ འཛིན་ ।
 དེང་ཡང་ བདག་གི་སྒོག་ རྣམས་ ལེན ॥ ११०

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकाग्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

གང་ཕྱིར་ཅུ་ འཛིན་ སྒྲེང་བ་ཡི་ ।
 བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་བྱེད་ འདིར་ ।
 ཏུ་མའི་ སྒྲ་ཡིས་ ཉིར་སྒྲངས་བ་ ।
 དེ་ཕྱིར་ དོན་གཅིག་གསལ་བྱེད་དོ ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་བཞེན་བ་ ཡིད་འོང་ མཐོ་ ।
 སྒྲོ་བསངས་ ཏུ་སྒྲ་ལ་ཡི་འོད་ ।
 སྒྲིན་ ཉི་ མཁའ་ལ་ སྒྱུ་བྱེད་ དེ་ ।
 སྒྲང་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिज्ञानामभ्राणां दन्तिनामपि ।

भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति श्लिष्टार्थदीपकं ॥११३॥

२६२० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ११३ ॥

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।

विकल्पानामनुगतिविधातव्या विचक्षणैः ॥११४॥

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ११४ ॥

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

བསལ་བྱེད་ཀྱི་ བོ་ བཞས་ཉིད་དུ །
 རོན་བསྐྱོར་ རང་ བོ་ ཆོག་བསྐྱོར་ རང་ །
 བཞིས་ཀ་ བསྐྱོར་བ་ ཅེས་བ་ ཡི །
 བྱེད་ བསུམ་པོ་དག་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ ॥ ११४

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

ཀ་དུས་ བོ་ བས་བར་བྱས །
 ཀ་ཏ་རྫོག་མ་ རབ་བསལ །
 ཀ་ལྷ་པོ་ རབ་དུ་ བྱེ །
 ཀ་ཀྱ་ལྷ་ ཡང་ བྱས་བར་བྱུར ༥ ॥ ११५

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्गलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྤྲིན་གྱི་ སྤེང་བ་ དག་གིས་ བོ །
 མ་བྱུང་ ཆོགས་ བསམ་ སྤྲོས་བྱེད །

ཅུ་མིན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ གྲིས་ དེང་ །

ན་ཅུང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྷན་བྱེད་ ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनैः ।

विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिवं गतः ॥११८॥

ཀྱན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ ཁྱོད་ །

བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ །

ཁྱོད་ཀྱི་དབྲ་སྡེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །

ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपस्त्रैकात्म्यापेक्षया त्रिधा ।

अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་བ་ བརྗོད་བ་ འགོག་བ་ ལྟེ་ །

དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་བ་ གསུམ་ །

ཅེ་སྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི་ །

དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ལྷིར་ མཐའ་ཡས་ ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चभिः पुष्पैर्विश्वं व्यजयतेषुभिः ।

इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

ལུས་མེད་ཀྱི་ནི་མེད་ཀྱི་གྱི།

མདའ་ལྷས་ ཀྱུ་ལས་སྐྱལ་བར་གྱུར།

ཅེས་པ་ མི་སྤྱིད་ ཡང་ན་ནི།

དངོས་པོའི་ནས་པ་ ནས་པར་བྱ། ॥ १२०

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।

प्रवृत्तैवं यदाक्षिप्ता वृत्ताक्षेपस्तदीदृशः ॥१२१॥

ཞེས་པ་ འདིར་ནི་ སྐྱུ་སྤྱོད་ས་ ཀྱིས།

ལུས་མེད་ སྐྱལ་བར་མི་རིགས་ གྲོ།

དེ་ལྟར་ གྱུར་ བླག་ བང་གི་ སྤྱིར།

གྱུར་པ་ འགོག་པ་ དེ་ འདི་འདྲ། ॥ १२१

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।

किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

ཉྱུ་མཆོག་ས་མ་ རག་ ཅི་ཡི་ཕྱིར །

ན་བ་ལ་ནི་ ཡུལ་ འཇུག །

ལས་ འདི་ལ་ ཉི་ ཟུར་མིག་རག །

ཡོངས་ཆོག་ས་ མིན་པར་ མེས་ས་སམ་ ཅི ༥ ॥ १३३

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।

कर्णं काचित्प्रियेणैवं चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

འགའ་ཞིག་ རྟེན་མིན་ ཡུལ་ །

ན་བར་འཇུག་ལ་ མཛོལ་བོ་ཡིས །

དེ་ཟུར་ བསྟོད་པས་ མཛོས་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ མཛོན་གུར་ འགོག་པ་འོ ༥ ॥ १३३

सत्यं ब्रवीमि न त्वस्मान्द्रष्टुं बल्लभ लप्स्यसे ।

अन्यक्षुम्बनसंक्रान्तलाक्षारक्तेन चक्षुषा ॥१२४॥

ཇོ་བོ་ བདེན་པར་ སྒྲ་འོ་ བདག །

གཞན་ དང་ཚུས་ནས་ འཕྲོས་པའི །

शुभ्रिगसःशुभ्रिगःदसः शिवाःशिसःके ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शिवाःदसःदसः शिवाःशिसः ॥ २३८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शिवाःदसःदसः शिवाःशिसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ॥ २३९

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।

यदि सत्यम्मुदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ।

शिवाःशिसः शिवाःशिसः शिवाःशिसः दसः ॥ २४०

धर्माक्षिपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दवं ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

मार्त्तुः र्देष्टुः अर्द्धः श्रुः ।
देः र्दः अर्द्धः अर्द्धः श्रुः ॥ १२७
श्रुः श्रुः श्रुः अर्द्धः अर्द्धः र्दः ।
अर्द्धः अर्द्धः श्रुः श्रुः अर्द्धः ।

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

देः श्रुः अर्द्धः अर्द्धः श्रुः ।
श्रुः अर्द्धः अर्द्धः श्रुः ।
देः श्रुः अर्द्धः अर्द्धः श्रुः ।
अर्द्धः अर्द्धः श्रुः श्रुः ॥ १२८

धर्म्याक्षिपोयमाक्षितो धर्मो धर्मं प्रभाह्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्चर्यं विवक्षता ॥१२९॥

གང་ འདིར་ གཟུགས་ཅན་ས་ རོ་མཚར་ ।
 བཛྲོད་པར་ འདོད་པས་ འོད་ཅས་པའི་ ।
 ཚོས་ འདི་ ཁས་སྒྲངས་ ཚོས་ཅན་ དག་ ।
 འགོག་འདི་ ཁས་སྒྲངས་ ཚོས་ཅན་ དག་ ॥ ༡༣༠

चञ्चुषी [19a] तव रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 भ्रुवौ च भ्रुमे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥

བྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ དམར་གྱུར་ ཅིང་ ।
 མཚུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ ।
 སྒྲིན་ས་ འབྱོག་མེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ ।
 ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས་ ॥ ༡༣༠

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पटीयसा ॥१३१॥

1- གང་གྱིར་ མཇོང་བོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ ।
 ༥ འདི་དག་ འདིར་ནི་ གྱུ་ འགོག་པའོ་ ।

ཕྱི་འཇིགས་པ་ ཡིན་ གྱུ་ཡི་གཙོ།
 ཕྱི་རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ། ॥ 232

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
 दृष्टाश्च फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཇོའ་པོ་ དག་ བྱི་ རིང་ན་ གནས།
 རྒྱ་འཇིན་ བགོད་ལྷན་ འདི་ནི་ འོངས།
 བྱི་ཚུ་ལ་ ཡང་ གྱུས་པར་ མཐོང་།
 བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག། ॥ 233

कार्याक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
 तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་གྱུ་རྒྱ་འཇིན་ བགོད་པ་ བྱི།
 མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བགོད་ བས།
 འབྲས་བྱ་ འཆི་བ་ བརྗོག་བའི་ཕྱིར།
 དེ་ནི་ འབྲས་བྱ་ འགོག་པ་འོ། ॥ 234

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

གལ་ནི་ གཤེགས་ན་ གཤེགས་པར་ བཟོད་ །

བྱིད་ཀྱི་ བགྲོད་པས་ བདག་ལ་ བློ་ །

གཏུང་བ་ ཡུན་རིང་ འགྲུང་མི་འགྲུང་ །

འདི་ལ་ བྱིད་ནི་ དོགས་མི་འཚལ་ ॥ १३८

इत्यनुज्ञामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।

मरणं सूचयन्त्येव सोऽनुज्ञाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ཞེས་པ་ འཆི་བ་ གསལ་བྱེད་པས་ །

ཇེས་གནང་ ཉིད་ཀྱི་ སྒོ་ནས་ བློ་ །

མཛོལ་བའི་ བགྲོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ །

འདི་ནི་ ཇེས་གནང་ འགོག་པར་ བཟོད་ ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणसं [19b] देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥

མོར་ནི་ མང་པོ་ རྟེན་ འགུར་ ཞིང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དག།
 བདག་སྒྲིག་ལ་ ཡང་ བེ་ཚོམ་མེད།
 འོན་ཀྱང་ མཛའ་པོ་ འགྲོ་མི་བྱ། ॥ 225

प्रत्याचक्ष्णया हेतून् प्रिययात्राविवन्धिनः ।
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཛའ་པོ་ འགྲོ་བར་ སྦྱོར་བ་ ཡི།
 གྱུ་ རྣམས་ དག་ རི་ རབ་བཤད་ནས།
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ དེ་ འགྲོག་པ།
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགྲོག་པ་འོ། ॥ 226

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་དེ་ སྦྱོབས་དང་ལྡན།
 མོར་གྱི་ བསམ་པ་ སྦྱོབས་ལྡན་མིན།

མཛེའ་བོ་ གཤེགས་ སམ་ བཞུགས་ལགས་སམ །
རང་གི་ གནས་སྐབས་ སྒྲིམ་པ་ ལགས ༥ ॥ १३५

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।
प्रियप्रयाणं रुन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३६॥

གང་སྤྱིར་ འདིར་ནི་ ཆགས་ལྡན་སམ །
མཛེའ་བོའི་ བསྐྱོད་པ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་ །
མ་གུས་བཞིན་དུ་ ཚོག་ སྒྲིམ་པ་ །
འདི་ནི་ མ་གུས་པས་ འགོག་བའོ ॥ १३७

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।
ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

མཛེའ་བོ་ གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ བཞུད་ །
ཁྱོད་ཀྱི་ ལམ་ནི་ ཤེས་གུར་ཅིག །
གང་དུ་ ཁྱོད་ནི་ གཤེགས་པ་ དེར་ །
བདག་ ཀྱང་ སྒྲིམ་ ཅིང་ གུར་ཅིག ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।

स्वावस्थां सूचयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे'ङ्ग'र' शै'स' वङ्गे'र' 'ल'स' श्रु'स' व'द' ।

र'द'स' श्रु'स' व'द'स' व'द'स' व'द'स' ।

स'द'स' व'द'स' व'द'स' व'द'स' ।

र'द'स' शै'स' वङ्गे'र' श्रु'स' व'द'स' ॥ १४१ ॥

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।

अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

व'द'स' श्रु'स' व'द'स' व'द'स' ।

श्रु'स' श्रु'स' व'द'स' व'द'स' ।

व'द'स' श्रु'स' व'द'स' व'द'स' ।

दे'ङ्ग'र' शै'स' वङ्गे'र' श्रु'स' व'द'स' ॥ १४२ ॥

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिम्नया ॥१४३॥

གང་ཕྱིར་ མཛེའ་བའི་ དབང་གུར་མས། །

མཛེའ་བའི་ བཞོད་བ་འགོག་བྱེད་བ། །

ཆོག་ཅུབ་ ཡི་གེ་ སློན་འགོ་ཅན། །

འདི་ནི་ ཅུབ་ མོས་ འགོག་བ་འོ། ॥ ༡༦༣

गन्ता चेद्गच्छ तूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।

आर्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ ཟུར་དུ་ བཞུད། །

ཕྱི་ནས་ གཉིན་ འདུན་ འབྲུགས་བའི་ཁས། །

བསྐྱགས་བའི་ཆ་ངེ་ འགོ་བ་ ཡི། །

གོགས་གུར་ ཁྱོད་ཀྱི་ ན་བར་ འོང་། ॥ ༡༦༤

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिबिध्यते ।

प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཅིག་དུ། །

ཆགས་མས་ གོས་ཉིད་ བྱེད་བ་ ཡིས། །

མཇེའ་བའི་བཟོད་པ་ འགོག་པ་ འདི །

གྲོས་ཉིད་ ཀྱིས་ནི་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༥

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।

निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཟུད་ཅེས་ བྱིད་དགེས་ བཟོད་ འདོད་ཀྱང་ །

བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཆོག །

མ་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི །

བྱུང་བར་ བྱུང་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད ༥ ༡༥

यत्नाक्षेपस्त यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।

विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས །

འབས་བྱ་ སྤྱན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས །

དོན་མེད་ ཉི་བར་ བསྐྱེད་པའི་ སྤྱིར །

དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༥

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्षमस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्त्वं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

མྱེད་ཅིག་ལྷ་བའི་ བོགས་བྱེད་བའི་ ।

རྩི་མ་ བསྐྱོད་བ་ལ་ ཁྱོད་བ་ ।

ཁྱོད་ཀྱིས་ མཇེའ་བར་ འགོ་བ་ ལྷོས་ ।

བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་བ་ འདོད་ ॥ १४८

अयं परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निबिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

གང་ཕྱིར་ མཇེའ་བའི་ བཞན་དབང་མ་ ।

དེ་ཡིས་ བསྐྱོད་བ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་ ।

དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱེད་ ཕྱིར་ ।

འདི་ནི་ བཞན་དབང་ འགོག་བ་འོ་ ॥ १४९

सहिष्ये विरहं नाथ देह्यदृश्याञ्जनं मम ।

यदक्तनेत्राङ्गन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བཟོད་པར་ བགྱི །
 བཀང་གེས་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ལ་ནི །
 འདོད་པས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི །
 མཐོང་མིན་ མིག་སྐྱུན་ བདག་ལ་ སྦྱོལ ॥ 270

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
 पत्युः प्रस्थानमित्याहुरुपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཚོ་བའི་ཐབས་ ནི་ དཀའ་བ་དག །
 ཉི་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི །
 འགྲོ་བ་ འགོག་པར་བྱེད་པའི་ ཕྱིར །
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགོག་པར་བཟོད ॥ 271

प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखात् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ བྱོད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཚོག །
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་པ་ རེས་པར་བྱུང་ །

མཛེའ་བ་ དམན་བ་ ཁྱིད་ཀྱིས་ ན།

མ་སྤྱོན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ॥ ༡༣

रोषाक्षेपोयमुद्रितस्नेहनिर्यन्त्रणात्मया ।

संरन्धया प्रियारब्धं प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

མཛེའ་བ་ རྒྱས་བས་ མ་བསྐྱམས་བའི།

བདག་ཉིད་ ཁྱོ་བས་ མཛེའ་བོ་ཡི།

འགྲོ་བ་ ཅེས་བ་ བསྐྱོག་བ་ གང་།

འདི་ནི་ ཁྱོ་བས་ འགྲོག་བ་འོ ॥ ༡༣

नाघ्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।

त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णञ्जीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྐྱམས་ བུ་མའི་ན་བ་ལ།

མ་བུས་ ཆང་ལ་ མ་བདབ་བར།

ཁྱིད་ཀྱི་ དག་ཡི་ ཆིང་ ཉིད་ཏུ།

ཡུལ་ སྤོན་པ་ ཟེགས་བར་གྱུར ॥ ༡༤

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।

व्यावर्त्य कर्म तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

झीरंहेरं वठसं वळीरं ज्ञान्नां ।

देरं देसं नासंवे वळ्ळीगं गुसं वस ।

भुंरं वदेसं वदेरं न्नवसं वुंरं वुंर ।

अदेरंवे झीरंहेसं अर्गोवं वदे ॥ १५५ ॥

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचितं किंचिद्रतश्च सकलं वयः ॥१५६॥

देरंवे अगाअं वदं ज्ञेवसं वं गुस ।

देगां वं अगाअं वदं वं वळ्ळीवसं वेरं ।

देगाअं वुवं अगाअं वदं वं वसवसं वद ।

वेरंवे वसवदं देगां वेरं वदं वुंर ॥ १५६ ॥

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अथार्जुनादेव्यावृत्तिर्दर्शितेह गतायुषा ॥१५७॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སོང་བས། །
 དོན་སྐྱབ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི། །
 འགྱོད་པ་ གཙོ་བོར་ ལྷོན་བྱེད་པ། །
 འདི་ནི་ འགྱོད་པས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ३१७

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतघ्नपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

ཅི་འདི་ ལྷོན་གྱི་ཚུ་འཛིན་ ནས། །
 ཡང་ན་ ངང་པའི་ཆོགས་སམ་ཅི། །
 སྐྱ་ནི་ ཀང་གདུབ་གྱི་ འདྲ་བ། །
 བོས་པས་ དེ་ནི་ ཚུ་འཛིན་ མིན། ॥ १५८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टघनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་པ་ལ་ ཡོད་ཅིང་། །
 ལྷོན་གྱི་ རིགས་ལ་ མ་རིག་པས། །

གང་ཞིག་ བེ་ཆོས་ རྒྱུ་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ བེ་ཆོས་ འགོག་པ་ལོ། ༡༧༦

अमृतात्मनि पद्मानां द्वेष्टरि स्निग्धतारके ।

मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་རྩི་འི་ བདག་ ཉིད་ བརྒྱ་ལ།

སྤང་ ཞིང་ རྒྱུ་མ་པའི་ ཏུ་ར་ག།

ཁྱེད་ གདོང་ རྒྱ་བ་ འདི་ ཡོད་ བཞིན།

རྒྱ་བ་ གཞན་གྱིས་ ཅི་ཞིག་ བྱ། ༡༥༠

इति मुख्येन्दुराक्षितो गुणान्गौणेन्दुवर्त्तिनः ।

तत्समानदर्शयित्वेति श्लिष्टाक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

པལ་པའི་རྒྱ་བ་ལ་ བདེན་པ།

དེ་ མཚུངས་ ཡོན་ཏན་ བཟུན་བྱས་ནས།

གཙོ་བོའི་རྒྱ་བ་ འགོག་བྱེད་པ།

ནས་པ་ དེ་ལྟར་ སྤང་བས་ འགོག། ༡༥༡

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरुदीर्णस्य हविर्भु[21b]जः ॥१६२॥

ཐམས་ཅད་མཁན་ ཡང་ ཁྱོད་ཀྱི་ནི །

ནྟམ་གཞོན་ ཆོས་པ་ མེད་པ་ མཚར་ །

ཡང་ན་ བསྐྱེག་ཟ་ འབར་བ་ལ །

ཆོས་པ་དག་ ནི་ ནྟམ་ཞིག་ མཐོང་ ॥ १६३

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोयं निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ རོན་ གཞན་དག །

དེ་ཡི་ ཆོས་ མཚུངས་ བསྐྱེག་བྱས་ནས །

ཡ་མཚན་ ཆོས་པ་ འགོག་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ རོན་ གཞན་ འགོག་པ་འི་ ॥ १६४

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं ददासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्धनमर्थिनः ॥१६४॥

སྒྲིན་པ་པོ་ ཞེས་ རྣམ་ཡང་ བློ།
 མི་དབང་ ཁྱོད་ལ་ མི་བསྐྱོད་དེ།
 བཤང་སྒྲིང་ སྒྲོང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ལོར།
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན། ॥ १७८

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི།
 ལྷུས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ།
 ཕྱོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ རྣམ་པར་རྟོག།
 བཞུན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་རྒྱས། ॥ १७९

शेषः सौथान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः । १६६॥

བཤང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཞོད་ནས།
 དེ་ཡི་ སྒྲུབ་མེད་ རྣམ་པ་ཅན།

དངོས་པོ་ གཞན་དག་ འགོད་པ་དེ །

དོན་གཞན་ བཀོད་པར་ ཤེས་པར་བྱ ༥ ༡༩༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्लेषाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །

སྐྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འོས་བྱེད་ དང་ འོས་པའི་བདག །

འོས་དང་ མི་འོས་ བརྗོད་པ་འོ ༥ ༡༩༧

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्त्यै निदर्श्यते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྐབས་ །

སྐྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཚོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་སྤྱིར །

དཔེར་ བརྗོད་ སྤང་བ་ བཟླས་པར་བྱ ༥ ༡༩༨

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घ्यते ॥१६६॥

ལེགས་ལྷན་ འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་སྐུ།

ཉི་མ་ དང་ནི་ རྒྱ་བ་ ཡང་།

ནུབ་པར་གྱུར་བ་ ཉིད་ལ་ ལྟོས།

ངེས་པ་ལ་ བློ་སྤྲོས་ འགྲོངས། ॥ १७०

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ལྷ་འཛོན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ གྱི།

ཡོངས་སྤྲོ་གདུང་བ་ འཕྲོག་པར་བྱེད།

ཆེན་པོ་རྣམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས།

གཞན་ གྱི་ ལྷག་བསྐྱེད་ བློ་སྤྲོད་ ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

तनु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्व्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་ རྒྱུང་གིས་ བློ་མེད་ །
 འཇིག་རྟེན་ དགའ་བ་ རྒྱུད་པར་བྱེད་ །
 རྒྱུ་ལྷོ་རྒྱུ་ དང་ ཡང་དག་ལྷན་ །
 རྒྱུ་གྱི་ རྒྱུང་རྒྱུ་ མ་ཡིན་ནམ་ ॥ ༡༧༧

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
 अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥

མཚན་མོར་བྱེད་ འདི་ རི་མ་ དང་ །
 ལྷན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་རྒྱུད་ །
 བཞིས་རྒྱུས་དབང་པོ་ རྒྱུན་ལྷན་ ཡང་ །
 བཞན་དག་ རིས་སུ་འཇིག་པར་བྱས་ ॥ ༡༧༢

मधुपानकलात्कण्ठान्निर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।
 कटुर्भवति कर्णस्य कामिनां पापमीदृशम् ॥१७३॥

རྒྱུང་རྟེ་ འཕྱངས་པའི་ མགྲིན་ ལྷན་ ལས་ །
 རྒྱུང་བ་ རྒྱུང་པའི་ རྒྱུ་དག་ རྒྱུང་ །

ན་བར་ རྩལ་པ་ ཉིད་ འགྱུར་བ།
 འདྲི་ལྡན་ རྣམས་ཀྱི་ སྒྲིག་ འདི་འདྲ་ ॥ ༡༧༢

अयं मम दहत्यङ्गमग्मोज्ज्वलसंस्तरः ।
 हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཐུ་སྒྲིས་འདབ་མའི་མལ་སྒྲན་ འདིས།
 བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གདུང་བར་བྱེད།
 སྒྲིག་པའི་ བདག་ ཉིད་ བསྒྲིག་ཟེ་ དང་།
 འདྲ་བས་ རིགས་པ་ མ་ཡིན་ རྣམ་ ॥ ༡༧༣

क्षिणोत्तु कामं शीतांशुः किं वसन्तो दुनोति मां ।
 मलिनाचरितं कर्म सुरभेर्नन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསྐལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ རྣམས་བྱེད་ མོད།
 དབྱིང་ ཉི་ ཅི་ལ་ གདུང་།
 དྲི་མ་ བའི་ ལས།
 དག་ མེན་ནས་ ॥ ༡༧༤

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।

न हीन्दुगृहेषूप्रेषु सूर्यगृहो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गु'सुन'सुन' अ' स'स'सुन' ।

स'स'स'सुन'स'स' स'स'स'सुन' ।

स'स'स' स'स'स'स' स'स'स'स' ।

स'स'स' स'स'स' स'स'स'स' ॥ १७७ ॥

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।

तत्र यद्भेदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

स'स'स'स'स'स' स'स'स'स' ।

स'स'स' स'स'स' स'स'स'स' ।

स'स' स'स'स' स'स'स' ।

स'स' स'स'स'स' स'स' स'स' ॥ १७८ ॥

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।

गुणैस्तुल्योसि भेदस्तु वपुषैवेदशेन ते ॥१७८॥

བདན་ ནང་ ཆེ་བའི་ བདག་ཉིད་དང་ །
 ལུ་བ་ཏུ་ སྒྲིགས་ ཡོན་དན་གྱིས་ །
 ཁྱོད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ མཚམས་ བ་དད་ །
 ཁྱོད་ལས་ འདི་འདྲ་ ཉིད་ ཀྱིས་སོ ༥ ༡༧༤

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।
 प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्त्तिनः ॥१७६॥

གཅིག་ལ་ གནས་བའི་ཚེས་ ཀྱིས་ནི་ །
 གཉི་ག་ལ་ གནས་ བ་དད་ དག་ །
 ཉིགས་བའི་ ལུ་ལ་དུ་གྱུར་བའི་ སྤྱིར་ །
 འདི་ནི་ གཅིག་གི་ རྒྱུག་བ་ཅན་ ॥ ༡༧༥

अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।
 असावञ्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

རྒྱ་ཡི་ཕང་པོ་དག་ ནང་ ཁྱོད་ །
 མཚམས་ ལས་ མི་འདྲ་ ཟབ་བ་སྟེ་ །

འདི་ནི་ མིག་སྒྲན་ ནང་ མཚུངས་ལ །

ཁྱིད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ ༥ ༡༥༠

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।

काण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་སྤྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི །

འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ བག་པོ་ ནང་ །

སེར་པོ་དག་ནི་ བ་དད་ བསྐྱན །

འདི་ནི་ གཉི་གའི་ རྩོག་པ་ཅན ༥ ༡༥༡

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महासत्त्वसतेजसौ ।

इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

ཁྱིད་དང་ གྱ་མཚོ་ ཏུ་བླ་རོ །

མཏུ་སྐྱུ་ ཏི་ཇོ་ བཅས །

འདི་ཡིས་ ཁྱིད་ གཉིས་ བ་དད་དེ །

དེ་ནི་ རྩ་བདག་ ཁྱིད་མཁས་སོ ༥ ༡༥༢

स एष श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दृश्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

འདི་ནི་སྤྱད་བའི་ཚུལ་ལྟ་བུར་ །
སྤྱད་བ་ཅན་ ཞེས་ གཞུང་བར་མཛོད་ །
འགོག་བ་ཅན་ དང་ གཏན་ཆོག་ས་ཅན་ །
གཉིས་པོ་ དེ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ། ॥ १८३

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षां न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

ལུགས་དང་ལྟན་ ཞིང་ བདན་པ་ དང་ །
རིན་ཆེན་འགྲུང་གནས་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་ །
དྲི་མ་ལྟན་པ་ རྩ་སྟོན་གནས་ །
ཁྱོད་ཀྱི་འགྲན་རྒྱར་འགྲུང་མ་ཡིན་ ॥ १८४

वहन्नपि महीं कृत्स्नां सशैलद्वीपसागराम् ।
भर्तृभावाद्भुजंगानां शेषस्त्वत्तो निवृष्यते ॥१८५॥

རི་སྒྲིང་གྱུ་མཚོར་ བཅས་པ་ཡི།
 ས་གཞི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མོད་ཀྱང་།
 ལག་འགྲོ་ནམས་ ཀྱི་ རིར་ གྱུར་ ཕྱིར།
 ལྷག་མ་ཅན་ནི་ ཁྱོད་པས་དཔན། ॥ ༡༤༡

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोनुविधीयते ॥१८६॥

ལྷ་དག་ འཇུག་པར་ མཚུངས་པ་ཡི།
 ལྷག་པ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་ལྟེ།
 རྟོགས་པར་གྱུར་པ་ མཚུངས་པ་ ཡང་།
 ཡོད་པ་ དེ་ནི་ རིས་སུ་སྒྲུབ། ॥ ༡༤༢

त्वन्मुखङ्कमलं चेति द्वयोरप्यनयोर्भिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གཞོང་དང་ པདྨ་ལྟེ།
 འདི་ གཞིས་ཀྱི་ ནི་ ཁྱད་པར་ ཡང་།

བསྐྱོ་ཅུ་ལས་སྐྱེས་པ་ དང་ ।

ཁྱིེ་གཤོང་ཁྱིེ་ལ་བརྟེན་པ་ལོ ॥ ༡༥༧

अभ्रविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगोक्षणं ।

इदन्तु नयनद्वंद्वं तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་བྲགས་མིག་ལ་སྐྱེན་སྐྱེག་ དང་ ।

ཁྱིེས་པའི་དམར་བས་རིག་པ་མེད་ ।

ཁྱིེ་གྱི་མིག་ནི་གཉིས་པོ་འདི་ ।

ཡོན་ཏན་དེ་དག་ཉིད་གྱིས་བརྟེན་ ॥ ༡༥༨

पूर्वस्मिन्नेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।

सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྐྱེས་པ་དབྱེ་བ་ཙམ་ཞིག་བསྟན་ ।

འདིར་ནི་ལྷག་པ་ཉིད་བསྟན་ཏི་ ।

སྐྱེས་ཡང་མཚུངས་པའི་ལྷོག་པ་ཙན་ ।

གཞན་དག་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ་ ॥ ༡༥༩

त्वन्मुखम्पुण्डरीकञ्च कुल्ले सुरभिगन्धिनी ।

भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टि मुखन्तु ते ॥१६०॥

सुदेवः शिवः ५८ ५९ ५९८ ।

शुभः शिवः ५९ ५९८ ५९९ ५९९ ।

५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ।

सुदेवः शिवः ५९ ५९९ ५९९ ५९९ ॥ १७० ॥

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।

नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ।

५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ।

५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ।

५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ५९९ ॥ १७० ॥

प्रतीयमानशौक्यादिसाम्ययोर्वियदम्भसोः ।

कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिन्चन्द्रहंसयोः ॥१६२॥

འདྲིར་ བློ་བ་ རང་བ་ དག །
 དཀར་བ་ཉིད་ རོགས་ རྟོགས་བ་ དང་ །
 མཁའ་དང་ མུ་ བློ་དག་བར་ ཡང་ །
 རྟོགས་བར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ བྱས ༥ ༡༩༢

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृशव्यतिरेकता ॥१९३॥

སྤྲ་མ་ལ་ བློ་སྤྲ་མ་ མཚུངས །
 བཀྲི་བ་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
 བྱང་བ་ རོགས་ལ་ རོགས་བ་ མཚུངས །
 དེ་མུའི་ མཚུངས་པའི་ རྟོགས་བ་ཅན ༥ ༡༩༣

अरत्नालोकसंहार्यमवार्य सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१९४॥

རིན་ཆེན་ སྤང་བས་མི་འཕྲོག་ ཅིང་ །
 ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་སྤྲོག་བ །

ལང་ཚོ་ ལས་ གུང་ ན་ རུང་གི །
 མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་བྱེད ༥ ॥ १०८

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
 दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैरदर्शयत् ॥१६५॥

མུན་པའི་རིགས་ལས་ མུན་པ་ འདི །
 ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྲིས་ མཚུངས་ །
 གཞན་དག་གིས་ ཉི་ བ་དད་ བསྟན །
 འདི་ནི་ རིགས་མཐུན་ལྷོག་པ་ཅན ༥ ॥ १०९

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]रं ।
 यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्यं सा विभावना ॥१६६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ གྲུ་བ་ཆོག་ནས །
 གང་གིས་ གྲུ་ གཞན་ རུང་ཟད་དམ །
 གང་དུ་ རང་གི་ ངོ་བོ་ ཉིད །
 མུན་པ་ དེ་ནི་ མྱིད་པ་ཅན ༥ ॥ ११०

अपीतक्षीवकादम्बमसंमृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१६७॥

स'रसु'रस' सु'रस'प'रि' ॥१६८॥

स'सु'रस'र' स'सु'रस'प'रि' स'सु'रस' ।

सु'रस'प'र' स'सु'रस' सु'रस'प'रि' ।

र'सु'रस'प'रि' र'सु'रस'प'रि' ॥ १६९ ॥

अनञ्जितासिता दृष्टिर्भूरनावर्जिता नता ।

अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१६८॥

सु'रस'प'र' स'सु'रस'प'र' र'सु'रस'प'रि' ।

स'सु'रस'प'र' स'सु'रस'प'र' र'सु'रस'प'रि' ।

र'सु'रस'प'र' स'सु'रस'प'र' र'सु'रस'प'रि' ।

स'सु'रस'प'र' स'सु'रस'प'र' र'सु'रस'प'रि' ॥ १७० ॥

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१६९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འབྲུངས་ ལ་སོགས་ སྒྲིམ།

སྒྲིམ་པ་ཉིད་ སོགས་ སྒྲི་གཞན་ཅན།

སྒྲི་མེད་ དག་ཀྱང་ བཟོད་ འདོད་པ།

དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད། ॥ ༢༠༠

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।

अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ སྒྲིས་ནི་ ཁ་ ཇི་ཞིས།

ཆོལ་མེད་པར་ཡང་ ལུས་པོ་ མཛོས།

སྒྲི་མེད་ དག་ཏུ་ རྩ་བ་ དག།

སྒྲི་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ སྒྲིགས། ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षान्निवर्तितः ।

उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་སྒྲི་སོགས་ ཆོག་གིས་ འདིར།

སྒྲི་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བརྒྲོག་ ཅིང་།

རི་ཞིས་ ཉིད་ མོགས་ འབས་བྱ་ བཟློད།

དེ་ཕྱིར་ དེ་ནི་ སྒྲིད་པ་ཅན། ॥ ३०१

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिर्सांक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགའ་ལ་ བསམས་བྱས་ནས།

དེ་དང་ མཚུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན།

བསྒྲུས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ བཟློད་བྱེད་པ།

དེ་ནི་ བསྒྲུས་པ་ བཟློད་པར་ འདོད། ॥ ३०२

[24b]पिबन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

བྱང་པ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན།

བདུ་ བྱས་ལ་ སྒྲིང་རྩི་ འཕྱངས།

རི་ཞིས་ བྱས་པ་མ་ཡིན་ ཡང་།

མེ་དྲོག་ཁ་ས་བྱེ་ སྒྲིང་ ལྷོས། ॥ ३०३

इति प्रौढाङ्गनाबद्धरतिलोलस्य रागिणः ।

कस्याञ्चिदिह बालायामिच्छावृत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ཆགས་ལྷན་ བྱད་མེད་ དར་མ་ལ།

དགའ་བའི་ ཅེ་དགས་ བཅེངས་པ་ དག།

བྱ་མོ་ འགའ་ཞིག་ དག་ལ་ ཡང་།

འདོད་པ་ འཕེལ་བ་ ལྷན་པར་བྱེད་ ॥ २०४

विशेष्यमात्रमिन्नापि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्त्यसावपराप्यस्ति मिन्नामिन्नविशेषणा ॥२०५॥

བྱད་པར་ཅན་ ཅམ་ བྱ་དད་ ཅིང་།

བྱད་པར་ རྣམ་པ་ མཚུངས་པ་འདྲ་ ཡོད་།

བྱད་པར་ བྱ་དད་ བྱ་དད་ མིན་།

འདི་ནི་ གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ ཡོད་ ॥ २०५

रुढमूलः फलभरैः पुष्पान्ननिशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

ཅ་བདན་ འབྲས་བུ་ ཁྱེ་གྱིས་ བློ་
 སྒྲིང་ནས་ དྲུག་ཏུ་ རྒྱས་པར་བྱེད་ །
 གྲིབ་མ་ རྒྱུ་པའི་ རྒྱུན་པ་ཆེ་ །
 འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ་ ॥ ३०६

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छायः स्थैर्यवान्दैवादेव लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

ཡལ་གའི་ བྱོན་ནི་ མི་རུང་ཞིང་ །
 མེ་ཏོག་ འབྲས་བུ་ པལ་སྒྲུབ་ཆོག་སྟེ་ །
 དམ་པའི་ གྲིབ་བསྐལ་ བདན་ལྷན་པའི་ །
 ཤིང་འདི་ བདག་གིས་ སྐལ་བས་ རྒྱུད་ ॥ ३०७॥

उभयत्र पुमान्काश्चिद्वृक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ རྒྱུས་བུ་འགྲེལ་ །
 རྒྱུན་པ་ཉིད་ གྱིས་ ཉེ་བར་བསྐྱབས་ །

ཆོས་ནམས་ བསམ་ཅད་ ལྟ་བུ་ལ།

ཐུན་མོང་ གཞན་ལ་ རྣམ་པ་ གཉིས་ ॥ ༢༥

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।

अयमम्भोनिधिः कष्टङ्कालेन परिशोष्यते ॥२०६॥

སྤྱལ་ངན་ འགོགས་པ་ དང་ བྲལ་ཞིང་།

རང་བཞིན་གྱིས་ རི་ མངར་བའི་གཞི།

ཀྱེས་ རྩ་ ཡི་ གཏེར་ འདི་ རི།

དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐྱམ་པར་འགྱུར་ ॥ ༢༠༦

इत्यपूर्वसमाप्तोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।

समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

གྱུ་མཚོ་ ལ་ རི་ དེ་ མཚུངས་པ།

སྤྱིས་བྱའི་ ཁྲོག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་།

སྤྱ་མའི་ཆོས་ རི་ བསྐྱོག་པའི་ སྤྱིར།

འདི་རི་ སྤྱི་མོད་ བསྐྱམ་པར་ བཟོད་ ॥ ༢༡༠

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तिनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

ཁྱད་པར་གྱི་ནི་བཞེད་འདོད་གང་།

འཛིག་རྟེན་མཚམས་ལས་གྲལ་གྱུར་པ།

ཐུལ་དུ་བྱུང་བར་བཞེད་པ་འདི།

གྲུག་གི་དམ་པ་ཡིན་རྟེ་དགེར་ ॥ ३२२

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्ङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

མཁྲི་ཀླ་ཡི་སྤང་ཚོགས་ཅན།

ལུས་ཀྱན་བྱུང་བའི་ཅན་གཤེར།

དཀར་བའི་གོས་ཅན་མངོན་འགྲོ་མ།

ཁྲི་བའི་འདོད་ལ་མཚོན་མ་ཡིན། ॥ ३२३

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुक्तमुत्कर्षवत्तथा ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदर्शयते ॥२१३॥

རྒྱ་བའི་ འོད་ནི་ ལྷ་ག་པ་ ཉིད།
 བྱད་འཕགས་ལྷན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 བྲེ་ཚོམ་ སུལ་བྱང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ སྤྱིར་ རུང་ཟད་ བརྟན་པར་བུ ॥ ३२३

स्तनयोजर्जनस्यापि मध्ये मर्ध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ བྱོད་ཀྱི་ ལུ་མ་ དང་།
 དཔྱི་ཡི་ བར་ན་ སྐད་པ་ བློ།
 ཡོད་ དང་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ བློ།
 བྲེ་ཚོམ་ ད་དུང་ རྒྱ་ག་མ་གྱུར་ ॥ ३२४

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

བློ་དཔྱི་ལྷོ་ནི་ བྱོད་ ལ་ བློ།
 སྐད་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ཇེས་པར་བྱས།

འོ་མ་འཛིན་པའི་བྱུང་བ་གནས་པ།

ནས་པ་གཞན་དུ་སྤྲོད་མ་ཡིན། ॥ ३१४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोदरं ।

माति मातुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

བྱོད་ཀྱི་གྲགས་པའི་སྤང་པོ་ནི།

དཔག་ནས་མིན་ཡང་འདྲར་ཤོང་བ།

ས་སྤྱོད་སྤྲོད་པ་གསུམ་གྱི་ནི།

ཁོངས་དག་ཨོ་མ་ཤིན་དུ་ཡངས། ॥ ३१७

अलंकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।

वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

དག་གི་དབང་པོས་མཆོད་བྱུང་བ།

སྤང་བྱུང་ཞེས་བྱ་བཅོད་པ་འདྲི།

བྱོན་ནི་གཞན་པ་ནས་པ་གྱི་ཡང་།

གཅིག་སུ་དཔྱད་གཉིན་ཉིད་དུ་བཅོད། ॥ ३१८

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।
अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमसः ह्यक् रमा मसः उमा मेसः ग्रेस ।
कसः सः मल्लः दुः मल्लः सः ह्य ।
मलः दुः कसः मल्लः सः ह्य ।
देवः सः ह्यः दुः देवः सः ह्य ॥ ३२८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।
मन्ये मार्तण्डगृहाणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

देवः मलः देवः मलः मलः सः ह्य ।
मलः सः रमा देवः मल्लः सः ह्य ।
देवः सः ह्यः मलः सः ह्यः कसः ।
मल्लः सः ह्यः सः ह्यः सः ह्यः ॥ ३२९

स्नातुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।
तद्वैरनिष्क्रयायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्ण्यते ॥२२०॥

བླ་ས་དང་ བཏུང་དང་ བད་ཅ་ དག །
 བཟའ་ སྤྱིར་ ལག་ལྷན་ ལུང་འཇུག་པ།
 དེ་ནི་ ཁོན་ལན་ ལྷན་ སྤྱིར་ཞེས།
 ལྷན་ངག་སྐུམ་གྱིས་ རབ་བདག་ས་ བཟློད ॥ ३३°

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।
 इति कर्णोत्पलं प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥ .

འདྲི་ནི་ བདག་གི་རིང་བ་དག །
 འགོག་བྱེད་ རྒྱ་བའི་གྲུན་ ཞེས་ ཏེ།
 བྱེད་གྱི་ མིག་གིས་ རྒྱ་བ་ཡི།
 ལྷུང་ལ་ དག་ལ་ འགོངས་པ་ འདྲ ॥ ३३°

अपाङ्गभागवातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलं ।
 स्पृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

མིག་ལུང་ ཆར་ བྱི་ ལྷུང་གུར་པ།
 མིག་གི་འོད་གྱིས་ ལྷུང་ལ་ལ།

རེག་གས་ མིན་ ཡང་ ལྷན་ངག་སམན །

དེ་ལྟར་ རབ་དུ་བདགས་དེ་ བཟློང་ ॥ ३३३

लिम्पतीव तमोद्गानि वर्षतीवांजनं नभः ।

इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणान्वितं ॥२२३॥

སན་བ་ ལུས་ ལ་ འབྲུག་བ་ བཞིན་ །

སམའ་ནི་ མིག་སྒྲན་ ཆར་འབབས་ བཞིན་ །

ཞེས་འདི་ ཡང་ རོ་ རབ་རྟོག་གི་ །

སཚན་ཉིད་ལྷན་བ་ ཤེན་དུ་ མང་ ॥ ३३३

केवांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]स्विश्रुत्येह जन्यते ।

नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तभाषितं ॥२२४॥

འདིར་ནི་ བཞིན་གྱི་སྒྲ་ཡིས་ འགའ་ །

དེང་ ཡི་ མཐའ་ ཡིས་ དབེ་ མ་ ཡིན་ །

ཞེས་བ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས་ །

དབེ་ཉིད་དུ་ བི་ འབྲུལ་བ་ སྒྲེ ॥ ३३४

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दसिं ददं दसिं द्रुतिं ददं किं ।

सकुटसं ददिं कसं दं कुसं दसं न ।

द्रुगं दं दं किं सनं दं ।

कसं ददिं सदिं दं द्रुगं दसं किं ॥ २२५

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।

स एव धर्मो धर्मी चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

ददं दं द्रुगं दं ददिं दं ।

द्रुगं कसं द्रुगं ददं दं ।

दं दं कसं दं कसं दं ।

कुसं दं सकुसं दं दं स ॥ २२६

कर्त्ता यद्युपमानं स्यान्न्यग्भूतोसौ क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यग्रे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥

གལ་དེ་ བྱེད་པ་ དཔེ་ ཡིན་ བ །
 བྱ་ཚིག་ ལ་ འདི་ དབང་བུལ་ འགྱུར་ །
 རང་གི་ བྱ་ སྐྱུ་ མི་ལྟུང་པ་ །
 གཞན་གྱི་ ལྟུང་བྱར་ མི་འགྱུར་རོ ॥ ३३७

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
 अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

གང་གིས་ འགྱུག་པ་ འདི་ དང་ བློ །
 མུན་པ་ མཚུངས་ ཞེས་ སྐྱུ་ བ་ ཡང་ །
 ལུས་ལ་ ཞེས་པ་ མ་འབྲེལ་ དེ །
 དེ་ ཡང་ ཡོན་ཏན་ མཚུངས་པ་ བཟུ ॥ ३३८

यथेन्द्रुरिव ते वक्त्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
 न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

དཔེར་ན་ བྱིད་ གཤོང་ རྩ་པ་ བཞིན་ །
 ཅེས་པས་ མཛོས་པ་ རྟོགས་འགྱུར་ དེ །

དེ་བཞིན་ འབྲུག་པ་ འདི་ ལ་ ནི །

འབྲུག་པ་ ལས་ གཞན་ རྟོགས་ མ་ཡིན ། ༢༣༠

तदुपश्लेषणार्थोयं लिम्पतिर्द्धान्तिकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

དེ་ཕྱིར་ འབྲུག་པ་ འདི་ ནང་ ནི །

མཉན་པ་ བྱེད་པ་ ལུས་ ཀྱང་ ལས །

ཉི་བར་སྐྱར་དོན་ སྦྲེས་བྱ་ ཡིས །

དེ་ལྟར་ རབ་བརྟགས་ ཞེས་ འདོད་བྱ ། ༢༣༡

मन्ये श[26b]ङ्क्षे ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

སྐྱས་ ནང་ རྟོགས་ ནང་ ཇེས་ ནང་ འདྲ །

མིན་ནས་ ཞེས་པ་ ལ་སྟོགས་པའི །

སྦྱ་ ཡིས་ རབ་བརྟགས་ གསལ་བར་བྱེད །

བཞིན་ གྱི་ སྦྱ་ ཡང་ དེ་དང་འདྲ ། ༢༣༢

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।
कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

स्तुं दन् स्रं षं ठं द्वां के ।
कैवां क्खसं द्वां मीं स्तुं मीं षं क्खे ।
स्तुं के स्तेदं वे स्रं स्तेदं ।
देदं द्वां क्खं द्वां दुं द्वां द्वां ॥ २३२ ॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।
उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३३॥

सं द्वां द्वां द्वां द्वां मीं के ।
कैवां क्खं द्वां मीं द्वां द्वां ।
द्वं द्वां द्वां क्खं द्वां द्वां द्वां ।
स्तुं मीं द्वां द्वां क्खं द्वां द्वां ॥ २३३ ॥

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपवृंहणं ।
अलंकारतयोद्घष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

དགའ་བ་ སྒྲིབ་པར་ འོས་པ་ ཡི།
 རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྦྱར་བ་ འདི།
 གྲིན་ ཉིད་ ཀྱིས་ བྱི་ རབ་བསྐྱུན་དེ།
 རྒྱུག་པ་ དག་ ཀྱང་ དེ་དང་མཚུངས། ॥ ३३८

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्झरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

མ་ལ་ཡ་ ཡི་ རྒྱ་གྲུག་ ལ།
 རིག་ ཅིང་ ཅ་ནས་ བཞུགས་ བསྐྱོད་ནས།
 རྒྱང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ བྲམས་ དག་ བྱི།
 ཉམས་པར་བྱ་སྒྲིབ་ ཉེ་བར་གནས། ॥ ३३९

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मास्तुतः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोक्षारोचके जने ॥२३६॥

དེ་ལྟར་ བྱང་བའི་ རྒྱང་ བྱིས་ བྱི།
 འབྲལ་བའི་ རིམས་ ལས་ བྱང་བྱར་བ།

སྒྲིབ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྒྲིབ་ ལ།

ཉམས་པ་ སྒྲིབ་པ་བྱེད་པར་རྒྱས། ॥ ३३७

निर्वर्त्य च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ ཉམས་འགྲུར་ ལ།

དེ་ཉིད་ ལ་ ལྷོས་ སྒྲིབ་དེ།

འཕྲོ་བ་པའི་ ལས་ ལ་ སལ་ཆེར་ བློ།

བྱ་བ་ ལ་ ལྷོས་ སྒྲིབ་དོ། ॥ ३३८

हेतुनिर्वर्त्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

दत्त्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ སྒྲིབ་ དག་ བློ།

བསྐྱེད་དེ་ ལྷོས་ས་ བཞིས་པ་ ཡི།

དཔེར་ བཞིན་ བཞིས་ བློ་ བཞིན་བྱས་ནས།

ལྷོས་པར་བྱེད་པ་ བསྐྱེད་པར་བྱ། ॥ ३३९

उत्प्रवालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थद्वष्टिविषङ्कृतं ॥२३६॥

ལ་འདབ་ གསར་འབྱུངས་ བགས་ཚལ་ དང་ ।

འདབ་བརྒྱ་ རབ་ཏུ་བྱས་པའི་ རྩོང་ ।

རྩོང་བ་ བྱས་པ་ འདོད་པ་ ཡིས་ ।

འགྲོན་པོ་ ལྷ་བའི་ ཏུག་ཏུ་ བྱས་ ॥ २३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

बाला भूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

ཁངས་པ་ གོམས་པར་བྱའི་ ཞེས་ ।

གོམས་མོ་ མཇའ་བོའི་ གནས་བཀོད་ལ་ ।

བུ་མོ་ རྩོན་འབྱོལ་ མིག་ཡོན་ བྱས་ ।

མཆུ་ བེ་ གཡོ་ རྩོང་ ལྷ་བར་བྱེད་ ॥ २४०

गतोस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ་ རྒྱུ་གྱུར་ ལྷ་བ་ མཛོམས།
 འདྲེན་ཆགས་ རྒྱུ་མ་ ཉི་ བཀས་སྤུ་ མཛོམས།
 ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ རྒྱུ་ གྱི་ སྤེན་སྤེན།
 བོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་པ་ ཉིད། ॥ ༢༠༡

*अव्ययैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभिसाम् ।
 देहोष्मभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

བོ་གས་མོ་ འདྲོད་པས་ བཟུང་བའི་ ཡིད།
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ བྱིས་ མི་ལྷོག་ ཅིང་།
 ཅ་རྒྱན་ ལུ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ།
 ལུས་ གྱི་ རྫོད་ གྱིས་ ལེགས་པར་ རྫོགས། ॥ ༢༠༢

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतवः ।
 अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྤྱིར་བ་ རྒྱུ་མ་ ལ་ ཉི།
 ཡིད་འོང་ ལེགས་བྱེད་ ལུ་ དག་ མཛོམས།

དངོས་མེད་ རྒྱ་ རྒྱ་ ཡིད་ འཕྲོག་པ།
 འགའ་ཞིག་ རབ་དྲུ་བསྐྱུན་བར་བྱ། ॥ ३༠३

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।
 अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ རྒྱ་ མ་གྲོམས་ དང་།
 རྒྱ་ལྟ་ རྣམས་ དང་ མ་འགྲོགས་ དང་།
 དབང་པོ་ རྣམས་ རྒྱ་ མ་བསྐྱུམས་བས།
 མི་ རྣམས་ རབ་དྲུ་བ་དྲུང་བར་ བྱུང་ ॥ ३༠༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।
 क्षतो मोहश्च्युता नृणा कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་པའི་ གདམ་ གྲིས་ རྒྱུས་པ་ མོང་།
 ལང་ཚོ་ཡི་ རྒྱ་ རིམས་ དག་ རྣམས་།
 རྒྱུངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ རྒྱེད་པ་ འཕྲོམ་།
 བསྐྱེད་ལམས་གཞས་ ལ་ ཡིད་ དག་ བྱས་ ॥ ३༠༤

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན།

ཆུ་ཁྲུང་ འདི་དག་ བྱང་མེད་ མིན།

རི་དྲགས་ འདི་དག་ བྱ་ཆ་ མིན།

དེ་སྤྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ २८६

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टितं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ཤིན་དུ་ མ་བདགས་ སྤྱོད་པ་ བློ།

འཕགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡོད་ མ་ཡིན།

དེ་སྤྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ གྱི་ བློ།

སྤུང་ཚོགས་ བསམ་ཅད་ དྲག་དུ་ འཕྲེལ། ॥ २८७

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྒྲིང་ཚལ་ ས་ཏ་ཀླ་ར་ རྣམས་ །
 སྒྲིམ་ མ་འབྲུངས་པ་ མེན་ ན་ །
 འགྲོན་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ བྱད་མེད་ རི་ །
 ཉིལ་བཅས་ཁྱོར་ཚུ་ སྒྲིན་བྱར་འགྱུར་ ॥ ३༧

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनमप्रति ॥२४६॥

ཡོད་ དང་ མེད་པའི་ རང་བཞིན་ གྱི་ །
 འབྲས་བུ་ སྒྲིང་པ་ དག་ ལ་ འདིར་ །
 སྒྲོན་མེད་ ལ་སོགས་ རང་བཞིན་ གྱི་ །
 དངོས་པོ་ ཡི་ རི་ གྱུ་ ཉིད་པོ་ ॥ ३༧

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चित्रहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་ དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིམ་ །
 དེ་བཞིན་ འབྲས་ མ་ཐག་ སྒྲིམ་དང་ །

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ།

མཚར་བའི་ རྒྱ་ རྣམས་ གངས་མེད་དོ། ༣༧༠

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।

अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ རྒྱུར་བའི་ ལམ་ རྣམས་ ལ།

སལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།

ཤིན་ཏུ་ མཐོས་པ་ དག་ མཐོང་སྟེ།

དེ་ཡི་ དཔེར་བཞིན་ རི་ལྟར་ན། ༣༧༡

त्वदपाङ्गाह्वयं जैत्रमङ्गजाखं यदंगने ।

मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ ཁྱིད་ མིག་རྒྱར་ ཅེས་པ།

རྒྱལ་བྱེད་ ལུས་སྦྱེས་ དག་ གི་ མཚོན།

གང་ དེ་ གཞན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།

དེ་ ཡིས་ བདག་ གི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོམ། ༣༧༢

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशवं ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेसः सु लसः श्लेसः ग्लेसः सुसः पदि ।
कसः लसः कः कः कः कः कः कः कः ।
सुतः कः कः कः कः कः कः कः ।
यः कः कः कः कः कः कः कः ॥ ३५३

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डलं ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

सुतः कः कः कः कः कः कः कः ।
कसः कः कः कः कः कः कः कः ।
सुतः कः कः कः कः कः कः कः ।
सुतः कः कः कः कः कः कः कः ॥ ३५४

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुञ्जलीकुरुते कुतः ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ ཁྱིེ་གྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ་ ।
 དམར་བ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རེག་པས་ ।
 གྲུལ་པོ་ རྣམས་ གྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 པདྨ་ ལུས་པར་བྱེད་པ་ ཅི ॥ ॥ ३१४

पाणिपद्मानि भूपानां संकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामञ्चिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

ཁྱིེ་ གྱི་ ཞབས་ སེན་ལྷ་པ་ ཡི་ ।
 རེན་ཟེར་ ཀྲུན་ད་ རི་མེད་ རྣམས་ ।
 ས་ཁྱིེ་རྣམས་གྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 པདྨ་ ལུས་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ ॥ ॥ ३१५

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་ གྲུ་ ཡི་ རྣམ་ཉིག་ བོ་ ।
 ལུགས་ བོ་ འདི་འདྲ་ དག་ཏུ་ བསྟན་ ।

ཟུར་དང་ རྣམ་པས་ མཚན་པའི་ དོན།

སྤྱ་ སྤྱིར་ སྤྱ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད་ ॥ ३१७

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णं वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

རྣམ་ ཞིག་ འུ་ཅག་ འགྲོགས་འགྱུར་ ཞེས།

ཚོགས་སུ་ བརྗོད་པ་ མ་བཟོད་པའི།

མཛའ་བོ་ རིག་ནས་ བྱད་མེད་ ཀྱིས།

ཅེ་ དགའི་ པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས་ ॥ ३१८

पद्मसंमीलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྦྱེས་ དག་ གིས་ གཟེར་བ་ ཡི།

མཛའ་བོ་ དབྱགས་ དབྱང་ འདོད་པ་ ཡིས།

པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས་པ་ ལས།

འདིར་ ཞི་ མཚན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བསྟན་ ॥ ३१९

त्वदर्पितदृशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

སྤྱ་ ཡི་ མདུན་ སར་ ཁྱིད་ ལ་ མིག་ ।

གདང་བས་ གདོང་གི་ ཚུ་སྤྱེས་ དེར་ ।

ཆགས་པ་ འབར་ཞིང་ རྒྱས་པ་ཡི་ ।

མཛོས་པ་ ཅི་ཡང་ བྱང་བར་གྱུར་ ॥ २५०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वाद्रत्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

འདྲིར་ ཡང་ རང་བཞིན་ མ་ བཛོད་བར་ ।

དགའ་བའི་ དགའ་སྤྱོད་ འདོད་པ་ དག་ ।

ངེས་པར་གནས་པ་ཉིད་གྱུར་པ་ ।

སྤྱ་མོ་ ཉིད་ ལས་ སྤྱ་ལ་ མ་ཡིན་ ॥ २५१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥

ཚ་ནི་ཆ་ ཡིས་ དངོས་པོ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ དེས་པར་གསལ་བ་སྒྲིབ །
 དབང་བཟོད་ཉིད་ ཀྱིས་ འདི་ ཡི་ ནི །
 རང་བཞིན་ དེས་པར་གསལ་བར་བྱ ། ३७३

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

ཀྱུལ་པོའི་ བྱ་མོ་ ལ་ ཆགས་ བདག །
 སྐུ་ལོང་ ཀྱས་པ་ སྐུང་པ་པོས །
 རིག་པར་གྱུར་ལ་ ཀྱི་མ་ ཚལ །
 བསིལ་བའི་སྐུང་ལྷན་ ཡིན་པར་ ཤེས ། ३७३

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं दृष्ट्वैव कन्यकाम् ।
 अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६४॥

ཅི་ལྟར་ བྱ་མོ་ བཟོད་ ཉིད་ ན །
 བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་གྱུང་ །

རྒྱུང་གིས་གཙུབ་པའི་མེད་ཀྱི་གྲོ་ལོ།
 རྒྱུང་གིས་བདག་མིག་སྒྲུབ་ཕུང་ངོ་ ॥ ༢༩༠

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।
 लेशमेकेन्द्रिदुन्निन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ལ་སོགས་སྐབས་སུ་ནི།
 རྒྱུང་འདི་ཤིན་ཏུ་མཛོས་པ་ཡིན།
 ཁ་ཅིག་ཆ་ལས་སྒྲུབ་པ་འཇམ།
 བསྟོད་པ་བྱས་པ་ཆ་ཞེས་བཞེད་ ॥ ༢༩༡

युवैव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुज्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादिपि ॥ २६६ ॥

གང་ཡིད་གཡུལ་གྱི་དགའ་སྟོན་ལ།
 འདོད་པའི་དགའ་སྟོན་པས་ཀྱང་ཆགས།
 གཟི་ལྷན་ལང་ཆོ་ཡོན་ཏན་ཅན།
 རྒྱུང་འདི་ཁྱོད་ཀྱི་བདག་པོར་འོས་ ॥ ༢༩༢

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।

कथायाः कल्पते भोगान्निर्विविक्षोर्निर्न्नरान् ॥

བཙུན་འགྲུས་ བྱུང་འཕགས་ བསྐྱོད་པ་ འདྲིར།

སྒྲིབ་པ་ ཉིད་དེ་ ལོངས་སྤྱོད་ལ།

སྤྱོད་ཏུ་ སྤྱོད་འདྲོད་ བྱ་མོ་ཡི།

བསམ་པ་ དག་ནི་ བསྐྱོག་པར་བྱས། ॥ ३७७

चपलो निदंयश्चासौ जनः कित्तेन मे सखि ।

आगःप्रमार्जनयैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གཞོན་པ་ རབ་ གཞིལ་ ཉིད་ ཀྱི་ སྤྱིར།

གང་གིས་ སྒྲན་པར་ སྒྲ་བ་ བསྐྱབས།

སྤྱི་བོ་ འདྲི་ནི་ བཙུན་མེད་ གཞིལ།

གྲོགས་མོ་ དེ་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི། ॥ ३७८

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।

मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्त्या ॥ २६९ ॥

རྒྱ་པོ་ གྲོགས་མོས་ རབ་བསྟན་ བེངས། །
 ཆགས་ བྱིར་ བྱེད་པ་ མ་ནས་ནས། །
 རྒྱོན་ ལྷར་ རྒྱང་ཡང་ ཡོན་དན་ བང་། །
 རྒྱན་པར་ རྒྱ་བ་ ཉིད་ ཀྱང་ བསྟན། ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।
 यथासंख्यमिति प्रोक्तं संख्यानङ्कम इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་དུ་བསྟན་པ་ བསྟན། །
 རིས་པ་ བཞིན་དུ་ རྒྱུ་ལྷན་པ། །
 བྱངས་ དང་ རིས་པ་ བཞིན་ ཅས་པ། །
 བྱངས་ བཞིན་ ཅས་པར་ རབ་དུ་བཞེད། ॥ २७०

[29b] भ्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युतिः ।
 स्नातुमम्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

བྱས་ལ་ རྒྱར་ནི་ རབ་བྱགས་མ། །
 བྱིད་ཀྱི་ འཇུག་ མིག་གདོང་ མཛོས་ནི། །

ཀྱ་སྒྲུང་ ལྷ་སྒྲུང་ བསྐྱེད་ལས།

བཀྲུས་པར་ རེས་སོ་ གཞུགས་ཅན་མ། ॥ ३७१

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवत् रसपेशलं ।

ऊर्जस्वि रुढाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तत्रयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བཞིན།

ཉམས་ལྡན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྡན།

གཟི་བཞིན་ ང་ཀྱལ་ སྐྱེས་པ་ལྟེ།

དེ་གསུམ་ བྱུང་འཕགས་དག་དང་ལྡན། ॥ ३७३

अद्य या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।

कालेनैषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བོན་ བྱིད་ བྱིས་ འོངས་པ།

དེང་ བདག་ དགའ་བ་ སྐྱེས་པ་ གང་།

དགའ་བ་ འདི་ནི་ སྐར་ཡང་ བྱིད།

དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འགྲུང་བར་ འགྲུང། ॥ ३७३

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।

भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

दे००२०० ००००० ००००० ।

०००० ००० ००००० ००००००० ००००० ।

दे०० ००००० ००० ०००००० ।

००००००० ०००००००० ००००० ००००० ॥ ३०० ॥

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिव्योम होतानलो जलं ।

इति रुपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७५ ॥

०००० ०००० ०००० ००००० ।

००००००००० ००० ००००० ००००० ।

००००००० ००००००० ००००००० ००००००००००० ।

००००००० ००००००० ०००००००० ००००००००००० ॥ ३००० ॥

इति साक्षात्कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः ।

प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७६ ॥

མངོན་སུམ་ བྱས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི །
 གྱུ་ལ་བོ་ རྒྱལ་བའི་གོ་ཆ་ ཡིས །
 རྒྱལ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ བའ་ །
 དེ་ ཡང་ རྒྱལ་བར་ རྩེས་རྟོགས་བྱ ། ३१७

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यया मे मरणम्मतम् ।
 सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

ཤེ་བ་ ཞེས་བྱ་ བ་རེལ་དུ །
 བའ་ རང་ འབྲོགས་སྤྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད །
 ཨ་བཞི་དེ་ བདག་ གིས་ ནི །
 སྤྱི་ འདི་ཉིད་ལ་ རི་ལྟར་ ཐོབ ། ३१८

प्राक्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्वचः ॥१७८॥

རྒྱལ་བ་ ཉིད་དུ་ སྤྱིར་ བསྟན་ འདིར །
 རྒྱལ་བ་ སྤྱིག་པ་ ཉིད་ བྱུར་པའི །

རང་བཞིན་ གྱུས་དང་ཐུན་པས་ན །

འདི་ནི་ ཉམས་དང་ཐུན་པའི་ ཚིག་ ॥ ३१८

निगृह्य केशेष्वकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।

सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

གང་གིས་ ཉམ་མོ་ བདག་ བདུན་ནས་ །

སྐྱ་ནས་ བརྒྱུ་མེ་ དངས་གྱུར་པ་ །

བཏུན་དཀར་ སྤྲིག་ཅན་ ཐོབ་པ་ འདི་ །

སྐད་ཅིག་ འཚོ་བར་ གྱུར་རམ་ ཅི་ ॥ ३१९

इत्याह्वय परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः

भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२८०॥

ཅེས་པ་ འཛིགས་ མེ་ དགྲ་དག་ལ་ །

རྩ་བའི་ ཁྲོ་བ་ བཞོག་གི་ བཤར་ །

འཛིགས་པ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གྱུར་ །

འདི་ ཉི་ རོ་དང་ཐུན་པའི་ ཚིག་ ॥ ३२०

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ट्वा विविधैर्मखैः ।

अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

मर्केरं वत्सं स'ल' म'स्रुल' वैरं ।

क'म'म' मर्केरं व'स्रु' म'स्रु'ल' ।

स्रु'ल' ल' वैरं क'म'स' म'स्रु'व'र' ।

स'स्रु'ल'रु' व'र'ग' वै'रु'र'ल'गु'र' ॥ ३८०

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।

रसत्त्ववङ्गिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उ'स'ल' स्रु'ल' स्रु'ल'ल'ग'स' व'र'ग' ।

व'र'ल'स'र' क'म'स'गु' व'र'ग'क'र' म'क'स' ।

क'म'स'ल'ग' क'र'रु' क'स'ल' ल' ।

क'स' ल'र'र'ग'क' व'र'ल'ल' ल'ै' ॥ ३८१

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्गया रुजाकरी ।

साधिरोते कथं देवी हुताशनवतीं चिताम् ॥ २८३ ॥

ལུས་འཇམ་གང་ལ་བརྒྱའི།
 མལ་སྒྲན་དག་ཀྱང་ཅུབ་བྱེད་མ།
 ལྷ་མོ་དེ་ནི་རོ་ཁང་དག།
 སྒྲིག་ཟ་ལྷན་པར་ཇི་ལྟར་ཉིལ། ॥ ३८३

इति कारुण्यमुद्रिकमलं[30b]कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेषु भीमस्तहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅས་པ་སྒྲིང་ཇི་ལྷས་པ་ཡི།
 ལྷན་ཉིད་དུ་ནི་རབ་དུ་བཤད།
 དེ་བཞེན་གཞན་ཡང་མི་སྒྲིག་དང་།
 བཞད་གད་མེད་བྱུང་འཇིགས་ཅུང་ངོ་ ॥ ३८ॣ

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धैरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

ལྷ་མས་བལྷན་པའི་སྒྲིན་པོ་རྣམས།
 མགོ་མེད་རོ་དང་ལྷན་ཅིག་དུ།

ལག་པ་ སྐྱར་བས་ ཁྱོད་ དགའི་ ཁྱལ།
 འཕྱང་ཞིང་ འཕྱང་ཞིང་ གར་བྱེད་ནི། ॥ ३५४

इदमम्लानमालाया लग्नं स्तनतटे तव ।
 छाद्यन्मण्डपं नववस्त्रपदं सखि ॥ २८६ ॥

གྲོགས་མོ་ མེ་ཏོག་ མ་རྒྱུངས་མ།
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལུ་མའི་ ངོས་ལ་ནི།
 སེན་ཇེས་ སར་བ་ ཆགས་བ་ འདི།
 སྟོད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ཉི་ སྒྲིབ་བར་མཛོད། ॥ ३५५

अंशुकानि प्रवालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।
 शाखाश्च मन्दिराण्येषां चित्रं कल्पयामि ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ རྒྱུན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི།
 འདབ་མ་ གསར་བ་ གོས་ བཟང་ དང་།
 མེ་ཏོག་ དོ་གལ་ ལ་ སྒོགས་ཅན།
 ཡལ་འདབ་ ཁང་བར་གྱུར་བ་ མཚར། ॥ ३५६

इदं मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

छे'को' द'वा'ल' खे'वा'व'स' ।

व'सु'पु'व'सु' वी' द'द' व' ।

ल'दी'के' व'व'व' व'व'व' व' ।

व'व'व' व'व' व' व' व'व'व' ॥ ३८८

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दशितो रसः ।

इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरां ॥ २८९ ॥

व'व'व' व'व' व' व'व'व' व' ।

व'व'व' व'व' व' व'व'व' व' ।

ल'दी'के' व'व'व' व'व' व'व'व' व' ।

व'व'व' व'व' व'व'व' व'व' ॥ ३८९

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्भयम् ।

विमुखेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २९० ॥

- བདག་ནི་ གཞོན་པ་བྱེད་པོ་ ཞེས།
 བྱེད་ཀྱི་ སྒྲིང་ལ་ འཛིགས་ མ་བྱུང་།
 བདག་གི་ རལ་གྱི་ཕྱིར་ ཕྱོགས་ནམས།
 ནས་ཡང་ འཛོམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན། ॥ ३००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धे निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्ज्ञयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २६१ ॥

ཞེས་པ་ སྐྱེས་བུ་ སྒྲིགས་ལྡན་ འགས།
 གཡུལ་དུ་ གཞོན་ནི་ བཀག་བྱས་ནས།
 གཏོང་བ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས།
 གཟི་བཞིན་ལྡན་པར་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ ३०१

अर्थमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ २६२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བཞིན་པར།
 དེ་ཅིན་ འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར།

ནམ་པ་ གཞན་དག་ བཟོད་པ་ གང་ ।

དེ་ནི་ རྣམ་གྲངས་ བཟོད་པར་ འདོད་ ॥ ३०१

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।

तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां स्वैरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

ས་དྲ་ཀླ་རའི་ སྟེ་མ་ རྣམས་ ।

གཞན་གྱིས་གསོལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ བདག་གིས་ བཟོག་པར་བགྱི་ ।

ཁྱེད་ གཉིས་ དལ་གྱིས་ འདུག་པར་མཛོད་ ॥ ३०३

संगमय्य सखीं यूना संकेते तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

གོགས་མོ་ སྟེས་ཐུན་ ཐུད་བྱས་ནས་ ।

དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི་ ।

དགའ་སྟོན་ སྐབ་དུ་ གཞུག་ འདོད་པས་ ।

འགའ་ཞིག་ དེ་ནས་ སོང་བར་གྱུར་ ॥ ३०८

किञ्चिदारभमाणस्य कार्यं दैवबलात्पुनः ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २६५ ॥

བུ་བ་ འགའ་ཞིག་ རྩོམ་བ་ལ།

སྐལ་བ་ཡི་ རི་ རྟོགས་ལས་ ཀྱང་།

དེ་ཡི་ རྒྱབ་བྱེད་ སྟན་ཚེགས་ ལང་།

དེ་ རི་ ཀྱན་ཏུ་ཕན་བར་བཞིན་ ॥ ३०४

मानन्तस्या निराकर्तुं पादयोर्मे नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २६६ ॥

ཁངས་བ་ གཞོམ་སྤྱིར་ དེ་ཡི་ རི།

ཀང་བ་དག་ལ་ སྟག་འཆལ་བ།

བདག་ལ་ ཕན་སྤྱིར་ སྐལ་བ་ཡི།

འབྲུག་གི་ རྒྱ་ འདི་ བྲགས་བར་ བྱུང་ ॥ ३०७

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[31b]रं ।

उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकारं मनीषिणः ॥ २६७ ॥

བསམ་པ་ འཇམ་ རྟེ་ འབྱུང་པ་ ཡི།

ཆེན་པོ་ ཉིད་ནི་ གླ་མེད་ གང་།

དེ་ རྟེ་ གྱུ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི།

གྱུ་ཤིང་ མཁའ་པ་ནམས་ཀྱིས་ བཟོད་ ॥ ३०१

गुरोः शास्त्रनमस्येतुं न शशाक स राघवः ।

यो रावणश्चिरच्छेदकार्यभारेऽप्यविक्रवः ॥ २६८ ॥

རྒྱ་བ་ཏ་ཡི་ མགོ་གཙོད་པའི།

བྱ་བའི་ ཁར་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི།

ར་གྱུ་འི་བྱ་ དེས་ གླ་མ་ཡི།

བཀའ་ཁས་ འདྲ་བར་ རྟེས་མ་ གྱུར་ ॥ ३०२

रत्नभित्तिषु संक्रान्तैः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।

ज्ञातो लङ्केश्वरः कच्छादाब्जनेयेन तत्त्वतः ॥ २६९ ॥

རིན་ཆེན་ རྟེག་པ་ ལ་ འཕོས་པའི།

གཙུག་མ་བརྟན་ བརྟུ་ཡིས་ བསྐྱོར་གྱུར་པ།

ལྟོ་འདི་དབང་ཕྱུག་ རེ་ ཁོ་ན །

ཨ་ཁུ་ན་ བྱས་ དཀར་བས་ ཤེས་ ॥ ३००

पूर्वत्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

ཐུ་མར་ བསམ་པའི་ བདག་ཉིད་ཆེ །

འདིར་ནི་ མཛོན་པར་ འབྱོར་བས་ བརྗོང་ །

གྱུ་ཆེ་ གཉིས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་ །

རབ་དུ་ གསལ་བར་ མཛོན་པ་ ཡིན ॥ ३००

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བརྗོན་དོར་དག་ བྱི་ བརྗོན་བྱས་ནས །

དོན་གཞིན་ ཟུང་ཟད་ བརྗོན་པ་ ལྟེ །

འདོད་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྔ་པ་ །

མ་ཡིན་ ལྟོ་ལྟན་ ལྟོང་ལྟག་ ཡོད ॥ ३०१

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिशीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཅ་རྩན་ རྩ་འོད་ དལ་བྱ་ ཡི །
ལྷོ་ རྩུགས་ རི་ཡི་ བཞེན་པ་ འདི །
སེ་ཡི་ རང་བཞེན་ ལྷོ་བ་ སྟེ །
གཞན་གྱི་ རོར་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ བྲགས་ ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैवं परेष्व्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य सैषा विषयनिह्नुतिः ॥३०३॥

འདོད་ལྷན་གྱིས་ བྱི་ གཞན་ ལ་ རི །
བསིལ་བར་ ཁས་རྒྱངས་ བདག་ཉིད་ལ །
ཚ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བསྟན་ རྩིར །
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྟོན་རོར་རོ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

བདུན་ཅི་ ཟག་པའི་ འོད་ཟེར་ཅན།
 རྩ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
 རོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ བཞན།
 ཏུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྷན་པ་ ཉིད། ॥ ३༠༥

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

ཅེས་པ་ རྩ་བའི་ རྩ་ དངོས་ ཉིད།
 བརྩོག་ནས་ རོན་ བཞན་ བདག་ཉིད་ བེ།
 འདོད་པས་ བཟེར་བ་ བརྩོད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བརྩོན་དོར་ འདོད། ॥ ३०५

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

དབེ་ཡི་ བརྩོན་དོར་ སྤྱིར་ ཉིད་ཏུ།
 དབེ་ནས་ས་ ལ་ བེ་ རབ་བསྐྱན་ཏེ།

འདི་ཡིས་ བསྟོན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས།
མཚོན་བྱ་དག་ ལ་ གྱུ་ཆེར་ མཚོན་ ॥ ३०७

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྤྱར་བ་ གཟུགས་གཅིག་ལུན་བའི་ ཆོག་ ।
དུ་མའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་དུ་ འདོད་ ।
དེ་ཆོག་ བ་དད་ མིན་བ་ དང་ ।
བ་དད་ ཆོག་ འད་ རྣམ་བ་གཉིས་ ॥ ३०८

असावुदयमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुभिः करैः ॥३०८॥

ཡས་ད་ཡ་ གནས་ མཆོས་བ་ཅན་ ।
དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཆགས་ གྱལ་པོ་ འདི་ ।
མི་དུ་ཀ་རས་ འདིག་དེན་ གྱི་ ।
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་བར་བྱེད་ ॥ ३०९

विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमज्ञापि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བ་དད་མིན།
 གཞན་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད།
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན།
 སྤྱང་བ་ དེས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ३११

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविष्यति ॥३१२॥

དེས་པ་ འགྲོག་པ་ གཟུགས་ བཟོད་ དང་།
 འགའ་མེད་ འགའ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ།
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
 དཔེབར་མེད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ ३१३

वक्रस्वभावमधुराः शंसन्त्यो रागमुल्लवणम् ।
 दृशो द्रुत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१४॥

འབྲིག་ཅིང་ ཡིད་ལོང་ རང་བཞིན་ཅན།
 རྒྱགས་པ་ གསལ་བ་སྟོན་བྱེད་མ།

མཛེས་མས་ བསྐྱེལ་བའི་ མེག་ དང་ ཉི །

མོ་ཉ་མོས་ ཀྱང་ མཛོལ་བོ་ འགྲུགས ॥ ३१३

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलगिरः ।

आकर्ष्यन्ते मदकलाः श्लिष्यन्ते चासितेक्षणाः ॥३१४॥

ཡིད་འོང་ ཆགས་པ་འཕེལ་བར་བྱེད །

འཇམ་ཞེང་ མོས་པའི་ གདངས་སྒྲུན་ཅན །

ཁུ་བྱུག་སྒྲ་ ཉི་ མོས་གྱུར་ཏེ །

དཀར་མིན་མེག་ཅན་དག་ལ་ འབྱུད ॥ ३१४

रागमादर्शयन्नेष वारुणीयोगवर्धितः ।

पराभवति घर्मांशुरङ्गजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

རྒྱ་མ་ དང་ སྒྱར་ འཕེལ་བ་ཡི །

དམར་བ་ རབ་ཏུ་སྒྲུན་བྱེད་ ཅིང་ །

ཚ་ཟེར་ཅན་ འདི་ ལྷག་གྱུར་ཏེ །

ལུས་སྒྲིས་ དག་ ཉི་ རྣམ་པར་སྒྱུས ॥ ३१५

निस्त्रिंशत्त्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रल'स्रो'ड्रि'ल'के' स्त्री'पं ।
ग'लु'ड्रि'ल' के' अ'ल्लि'ग'सो'ड्रि' ।
सि'द'स' अ'दि'यि' लू'क'र ।
स'द'अ'क'स'ड्रि'ल' ग'क'स'स' यि'क ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

ल्लि'ग'स' स'ल्ल'स'ल'के'र'स' के' ।
स'ल्ल'दि' लू'स' ड्रि'ल'ले' ।
ले'क'ल्ल' क'ग'स'ड्रि' अ'ल्लि'ग'स'ल' ।
अ'ल्ल'स'स' लू'स'स'क'स'ल'ल' स'ल्ल' ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१९॥

ས་འཛོན་ ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ །
 གཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ རེས་པར་དར་ །
 ཟླ་དགའི་བདག་ བྱང་ བྱར་བ་ལྷེ །
 རྩེ་བོ་ ལྷས་པ་ འཛོན་ ཡང་དེ ॥ ༣༡༥

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जह्ने शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१६॥

ཉམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚེས་གཙོད་མིན་ །
 བྱལ་པོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱིད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ །
 ལྷ་ཡང་ བི་བྱ་རྒྱ་ མིན་ཤེས་ ॥ ༣༡༦

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

བྱད་པར་ རབ་དུ་ བསྐྱན་བའི་ཕྱིར་ །
 ཡོན་ཏན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ སོགས་ །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བཞུན་པ།
 དེ་ནི་ བྱད་པར་ བཞིན་པར་ འདོད་ ॥ ३३०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।
 तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ བཀྲུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།
 ཅུབ་པ་མ་ཡིན་ རྫོང་བའང་མིན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།
 ས་གསུམ་དག་ལས་ རྒྱལ་བར་གྱུར་ ॥ ३३१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।
 तथाप्येषा तपोभङ्गं विघातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བྱ་མོ་ མིན།
 ཇི་ཟེ་ རིགས་ལས་ བྱང་བའང་ མིན།
 དེ་ལྟ་ མེད་ཀྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།
 དཀའ་ཐུབ་ གཞིམ་པ་ རྒྱུབ་པར་ རུས་ ॥ ३३२

न बद्धा भुक्नु[33b]दिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।

न च रक्ताभवदृष्टिर्ध्वस्तश्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

त्रिंशत्तेरं दश'र्के' स'सङ्ग'स' शैरं ।

स'यि' श'यि'स'स' गुरं स'सङ्ग'द'य ।

सि'ग'गुरं द'स'र'स'रं स'गुर'स'र ।

द'स'यि' र'स'स' र्के' उ'स'स'स'र'गुर ॥ ३२३

न रथा न च मातङ्गा न हया न च पत्तयः ।

स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

शैर'रं' स'रं र'रं स'र'स'र'रं स'रं ।

र'स'रं स'र'स'र'स'र'स'र' स'रं ।

स'र'स'र'र'रं गुर'स' स'र'स'र'र'स'स' ।

र'स'र'स' श'स'स'स' द'स'स'स' गुर ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।

आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयं ॥३२५॥

འཇིང་དྲ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་།
 ཁ་ལོ་པ་ ཉམས་ དྲ་མི་མཉམ་།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན་།
 ཉི་མས་ འགྲོ་པ་ གསུམ་པོ་ མནན་ ॥ ३२४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव कमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ བྱད་པར་ལས་།
 འདི་ནི་ གྲུ་ཡི་ བྱད་པར་ བཟོད་།
 རིས་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ནི་།
 དེ་བྱེ་བ་ནམས་ ཀྱང་ བདུག་པར་བྱ་ ॥ ३२७

विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ འདི་དྲ་ ཡོན་དྲ་ བྱད་འཕགས་ དང་།
 མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི་།

བཞུད་སྒྲན་དོན་དུ་བསྒྲགས་པ་གང་།

དེ་ནི་མཚུངས་པར་སྦྱོར་བར་བཤད་॥ ३३७

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।

बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ལུས་ངན་ཚུ་རྩ་དང་།

མིག་སྦྱང་བ་དང་ཁྱོད་ཉིད་ཀྱང་།

འཇིག་རྟེན་སྦྱོར་བ་ཞེས་པའི་སྒྲ།

ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ནམ་པར་འཇོན་॥ ३३८

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।

क्षणद्वयन्न तिष्ठ[34a]ति घनरन्धान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་མིག་དང་འགྲོགས་པ་དང་།

སྒྲོག་གི་ཅེ་དགའ་དག་དང་ནི།

སྒྲིན་གྱི་ཚུམ་པའང་རང་བཞིན་གྱིས་།

སྒྲན་ཅིག་གཉིས་པར་མི་གནས་སོ་॥ ३३९

विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ལྷ་ ལྷུབ་བྱེད་ སྤྲུང་བྱེད་ །
གང་བྱ་ དངོས་པོ་ འགལ་བ་ རྣམས་ །
ཡང་དག་ འགྲོགས་པར་ རབ་བསྐྱེད་བ་ །
དེ་ནི་ འགལ་བ་ བཤད་ རི་ དཔེར་ ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་ ལྷུལ་པོ་ རྣམས་དག་ནི་ །
སྤྲོས་པའི་ གངངས་སྐྱེན་ ཅ་ཙོ་ འཕེལ་ །
ས་བྱ་རྣམས་ཀྱི་ ལྷ་དག་ནི་ །
ཡིད་ལོང་ ཉིད་དང་ བྲལ་བས་ཉམས་ ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྐྱེས་ རྩ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
 བས་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ རྩ་བྱར་ སྐྱོད་ །
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་དུ་ ཆགས་པར་གྱུར ། ३३३

तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनामि वपुः स्त्रीणां कं न हन्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

སྒྲིང་པ་ སྤ་ ཞིང་ རོ་སྒྲིང་ སྐྱོས་ །
 མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་པ་ མིན་ །
 རྩ་བ་ དམའ་ ཞིང་ ལྷ་ས་ མཐོ་ །
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྤ་ མ་ བཅོམ་ ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་ཅའི་ ལག་པ་ རྩ་ཤིང་ བརྒྱ །
 བརྒྱའི་གདོང་ དང་ ལྷ་ལྷུལ་ མིག་ །

ཁྱིེ་གྱི་གཟུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་ནམས།
གདུང་ནས་ མིན་ནས་ ལུས་ཅན་ས། ३३८

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३९॥

སྒྱེད་ཚལ་ ལྷུང་གིས་ རབ་བསྐྱེད་པ།
ལྷ་ཏེ་ཅས་ཀྱི་ཡི་རྒྱལ།
རིག་པ་མིན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི།
མིག་ལ་ མཆི་མ་ཟུག་པར་བྱེད། ३३९

कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
याति विश्वसनीयत्वं कस्य त कलभाषिणि ॥३४०॥

སྐྱ་པར་སྐྱོགས་མ་ ཁྱིེ་གྱི་མིག།
ནག་དཀར་རྩིས་སྲུ་དམར་པ་ ཡང་།
ན་བ་དག་ལ་ བདྱན་པ་ རྟེ།
སྲུ་ཡི་ ཡིད་བདྱན་ཉིད་ཏུ་འགྱུར། ३४०

इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।

अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

དེ་ལྟར་གྱུན་འདི་ནམ་པ་ བློ །

དུ་མ་ཉིད་དུ་ རབ་རྟོགས་བྱ །

སྐབས་ མེན་ འདོད་པས་ བསྟོད་པ་ བློ །

སྐབས་སྤུ་ མ་བབ་ བསྟོད་པ་ ཡིན ॥ ३३७

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।

अर्थैरयत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

གཞན་མི་བསྟོན་པ་ རི་དུགས་ནམས །

འབད་མེད་ ཉིད་པར་སྤུ་བའི་ཁོར །

ཅུ་དང་ཅུ་ཡི་གྲུག་སྟོགས་ཀྱིས །

ནགས་ནམས་སྤུ་ བློ་ བདེ་པར་ འཚོ ॥ ३३८

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।

राजानुवर्त्तनकृशेनिर्विषणेन मनस्विना ॥३३९॥

གྲུལ་པོའི་རྗེས་འབྲངས་ ཉམ་མོངས་པ།
 ཤེན་ཏུ་སྒྲུབ་པའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།
 སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་ཏུ་ འདིར།
 རི་དྲགས་ སྒྲོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱགས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
 दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གཤམ་ཏི་ སྐད་པ་ བཞིན་ བསྐྱོད་ནས།
 སྒྲོན་ ལྟར་ སྒང་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིད།
 གང་ཏུ་ ཉི་བར་ཐོབ་གྱུར་པ།
 འདི་ནི་ རྗེས་གྱིས་བསྐྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ०

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
 त्वया राज्ञापि सैवैयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རྒྱ་མ་དཀར་ཕུབ་པ་ཡིས་ ཀྱང་།
 འབྲུང་པོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་གྲུལ།

དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །

འདི་ལ་ ཁྱོད་ནི་ རྒྱགས་ མ་ མཛད་ ॥ ३༥༡

पुंसः पुराणादाच्छिद्य श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।

राजनिश्चिवाकुर्वंशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

སྒོན་གྱི་སྒྲིམ་བྱ་ ལས་ བཅད་ནས་ །

དཔལ་འདི་ཁྱོད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྦྱོད་ །

རྒྱལ་པོ་ རྒྱ་རམ་ཤིང་བའི་རྒྱད་ །

ཁྱོད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སམ་ཅི་ ॥ ३༥༢

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।

अहंकारः पराङ्मोदिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བཅད་མེས་ ལའི་ནི་ །

ལག་འགྲོའི་ ལྷོ་ག་དག་ལ་ཆགས་ །

ཅི་སྒྲོང་ ཁྱོད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི་ །

མཆོག་གི་མཐའ་རུ་ འཛགས་བར་གྱུར་ ॥ ३༥༣

इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

दे'ल्लर' छे'वर' खर्के'व'प'लस ।
ल्लर'व'त'र'द'म'ल'ल'र'द'म'ल' ।
खे'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।
ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ॥ ३४४ ॥

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयते यदि स्यात्तन्निर्दर्शनं ॥३४५॥

म'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।
दे'द'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।
ख'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।
दे'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ॥ ३४५ ॥

उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥

ཉི་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ ཉི །
 བུ་རྒྱལ་མ་ལ་ དཔལ་སྤེར་བྱེད །
 ལྷན་ཚེགས་རྒྱལ་ཀྱི་ འབྲས་བུ་དག །
 ལྷོགས་པོ་ཐེས་འཛིན་ བསྟན་པའི་སྤྱིར ༥ ༣༥

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराज्ञी पराभवम् ।
 सद्योराजविरुद्धानां सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

རྒྱ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །
 ལྷན་པའི་སྤེར་བ་ ལྷན་པར་འབྱུར །
 འབྲས་ལ་ཀྱལ་པོ་ དང་ འགལ་རྒྱལ །
 ངན་པའི་མཐར་འབྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ༥ ༣༥

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणां ।
 अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་དན་ལས་རྒྱལས་ ལྷན་ཅིག་གི །
 དངོས་པོ་ བརྟེན་པ་ ལྷན་ཅིག་བརྟེན །

དེ་ན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ་ ।
 ཡོངས་བཟུངས་ཡིན་ཏེ་ དེ་དག་ དཔེར ॥ ३༥༤

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।
 पाण्डराश्च ममैवाङ्गैः सह ताश्चन्द्रभूषणाः ॥३४६॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས་ ।
 བདག་གི་དབུགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ ।
 རྒྱ་བའི་རྒྱན་ལྷན་མ་རྣམས་ གྲུང་ ।
 བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལྷ ॥ ३༥༥

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया न्यूतमञ्जरी ।
 पतन्ति च समन्तेषामश्रुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མེངས་པ་ དང་ ।
 ལྷན་ཅིག་ ལྷ་དའི་དོག་པ་རྒྱས་ ।
 དེ་དག་ མཚི་མ་ དང་ མཉམ་དུ་ ।
 མ་ལ་ལ་ཡི་རྒྱུང་དག་ འབབ ॥ ३༥༠

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति सार्धं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरभिवासराः ॥३५१॥

ཁ་བྱུག་ རྫོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ ནང་ ।
ནགས་ཀྱི་རྒྱང་ བི་ རི་བཟང་ ནང་ ।
དབྱིད་ཉིན་ ཟླ་བའི་ ཀྱན་དགའ་ནས་ས།
ལྷན་ཅིག་དག་དུ་ འཕེལ་བར་འགྱུར་ ॥ ३५२

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेरत्र काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेश्च किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

དེ་ལྟར་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད་པ་ཡི།
དཔེར་བརྗོད་ འགའ་ཞིག་ འདིར་ བྱས་ཏེ།
ཡོངས་སུ་བརྗོད་པའི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
ངེས་པར་བསྟན་པ་ ཚུང་ཟད་བྱ། ॥ ३५३

शस्त्रप्रहारन्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हृतं तेषां यशः कुमुदपाण्डुरं ॥३५३॥

ས་སྒྲིད་ནས་ས་ལ་ བཞོན་ བསྟུན་པ།
སྤར་བྱེད་ བྱིད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས།

དེ་དག་ བྲགས་པ་ ཀྱ་མུད་ དཀར་ ।

ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་པ་ རྩོགས་ ॥ ३१३

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।

पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་ལ་ ।

སྒྲོན་པ་ ཤེས་བརྗེད་ ཅེས་བྱ་ དཔེར་ ।

ངག་ཡིད་ སྒྲིད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི་ ।

སྒྲུང་བ་ དམ་པས་ བྱིད་ལ་ སྒྲུངས་ ॥ ३१७

अनन्वयससंदेहावुपमास्वेव दर्शितौ ।

उपमा रूपकं[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्त्तितम् ॥३५५॥

ཇིས་འགྲོ་མེད་དང་ཐེ་ཚོས་ཅན་ ।

དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བསྟན་ ।

དཔེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདྲིར་ ।

གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ཇིས་པར་བསྐྱགས་ ॥ ३१८

उत्प्रेक्षामेद एवासावुत्प्रेक्षावयोपि च ।
नानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

རབ་རྟོག་ཆ་ཤས་ འདི་ ཡང་ བློ །
རབ་རྟོག་དག་གི་དབྱེ་བ་ཉིད །
ཐ་དད་གྲུན་ནམས་བསྐྱེས་བ་ནི །
སྤེལ་མ་དག་ཏུ་བཞེད་བ་སྟེ ॥ ३५७ ॥

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

ཡན་ལག་ཡན་ལག་ཅན་དངོས་ཀྱི །
སྐབས་ དང་ ཐམས་ཅད་ སྟོབས་མཚུངས་ཉིད །
ཅས་བའི་ལྷགས་ གཉིས་ སྤེལ་མ་ཡི །
གྲུན་དག་ལ་ བློ་ མཚོན་བར་བྱ ॥ ३५८ ॥

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्रियं ।
कोषदण्डसमप्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཛེས་ས་ ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ།
 བདྲ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད།
 མཛེད་དང་ ཡུ་བ་ སུན་ཚོགས་པ།
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད ॥ ༣༥

श्लेषः सर्वासु पुष्पाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति बाङ्मयं ॥३५॥

རང་བཞིན་ བཛེད་དང་ འཁྱོག་ བཛེད་ཅེས།
 ངག་གི་ རང་བཞིན་ བྲ་དད་ གཉིས།
 འཁྱོག་པོར་ བཛེད་པ་ བསམ་ཅད་ལ།
 སལ་ཆེར་ སྦྱར་བས་ དབལ་རྒྱས་བྱེད ॥ ༣༥

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः कान्येष्वसिद्धि यः स्थितः ॥३६॥

སྟན་ངག་མཐུན་ བསམ་དགོངས་པ་ སྟེ།
 སྟན་ངག་ སྤྱབ་པར་ གང་ གནས་པ།

རབ་སྒྲོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བཛོད ༥ ३७०

परस्परोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཆོགས་ནམས་ཀྱན །

ཕན་ཚུན་ ཕན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད །

དོན་དང་ བུལ་བའི་ ཁྱད་པར་ ནམས །

མ་བྱས་ བནས་སྡུ་ བསྐྱུགས་པ་ དང་ ॥ ३७१

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।

भावायत्तमिदं सर्वमिति तं भाविकं विदुः ॥ ३६२

བཛོད་རིམ་ སྒྲོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི །

ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ བསལ་བ་སྡེ །

དེ་ཀྱན་ དགོངས་པའི་དབང་གུར་ སྒྱིར །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག ॥ ३७२

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚམས་ སྒྲིང་ ཡན་ལག་ ནང་ ।
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ སོགས་ ।
ལུང་ གཞན་ ནག་ཏུ་ བཛོད་ འདི་ ཡང་ ।
རྒྱན་ཉིད་ཏུ་ བོ་ བདག་ཅག་ འདོད་ ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

རྒྱ་ཆེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྐྱས་ཚད་ཏུ་ བྱུར་བ་ཡི་ ।
རྒྱན་ནམས་ ནག་གི་ལས་ འདི་ཉིད་ བོ་ནམ་པར་སྤྱེ་ ।
བཛོད་པའི་ཡུལ་ལས་ འདས་པར་ ཡོངས་སུ་གནས་བ་ཡི་ ।
ཁྱད་པར་ནམས་ནི་ གོམས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ ནུབ་བར་བྱས་ ॥ ३६४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སྒྲོབ་དཔོན་ ནུབ་བར་བྱས་ཀྱིས་ མཛོད་པ་ ལྷན་ངག་ མེ་
ཡོང་ལས་ རོན་གྱི་རྒྱན་ ཅས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ གཉིས་པའོ་ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।

यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཚོད་དང་ བར་ཚོད་ བདག །

ཡི་གེ་ ཚོགས་པ་ བསྐྱོར་བ་ནི །

ཟུང་ལྷན་ དེ་ཡང་ ཀླང་བ་ཡི །

དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྟོད་ཡུལ་ཅན ༥ १

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।

आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ ཀླང་བ་ཡི །

ཟུང་ལྷན་རྒྱུ་ཀྱི་ རྒྱུ་རྟོག་ནི །

ཐོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ་ །

བར་དང་ ཐོག་མ་ ཐོག་མཐའ་ ཀྱན ༥ २

[37a] अत्यन्तब्रह्मस्तेषां भेदाः संभेदयोनयः ।

सुकरा दुष्कराश्चैव दृश्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणं नृं नृपे वं वसं श्लेषं व ।

देवतां नृपे वं नृपं नृं व ।

देवतां नृपं नृपं नृं व ।

नृपं नृपं नृपं नृपं व ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।

खण्डिता कण्ठमाश्लिष्य तमेव कुरु सत्रपम् ॥४॥

मोक्षं नृपं नृपं नृपं नृपं व ।

मोक्षं नृपं नृपं नृपं नृपं व ।

मोक्षं नृपं नृपं नृपं नृपं व ।

नृपं नृपं नृपं नृपं व ॥ ८

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिता ।

नुन्नमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

ངང་པ་ནམས་ཀྱི་ རྟེན་ས་ འཛོམས་པ།
 སྟོན་གྱི་སྒྲ་ ཡིས་ ཟུང་བྱེད་ནི།
 དགའ་མ་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་ཀྱི།
 ཁངས་བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད། ॥ ༥

राजन्वत्यः प्रजा जाता भवन्तं प्राप्य साम्प्रतं ।
 चतुरं चतुरंभोधिरसनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

རྒྱ་གཉིད་བཞི་ཡི་ སྒྲ་རགས་ཅན།
 ས་ཡི་ལག་ དབྱ་འཛོན་ལ་ མཁས།
 ཟྱོད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ནི།
 སྟེ་དགུ་ ཀྱལ་པོ་ བཟང་ལྡན་གྱུར། ॥ ༦

अरण्यं कैश्चिदाक्रान्तमन्यैः सद्य दिवौकसां ।
 पदातिरथनागाश्वरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀང་ཐང་ ཤིང་རྩ་ སྒྲང་པོ་དང་།
 ཉི་དང་ བྲལ་བ་ ཟྱོད་ཀྱི་ དགུ།

འགའ་ ཞིག་ རྒྱལ་སྤང་ གཞན་དག་ནི།

ལྷ་ རྒྱལ་སྤང་གི་ གཞན་སྤྱི་ མེད་ ॥ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।

विभ्रमम्भ्रमरभ्रान्त्या विडम्बयति किञ्चिदं ॥८॥

ཐུ་སྤྱེས་གཞོང་ལྷན་ མིག་དག་གི།

རྒྱལ་འཕྲུལ་ ཡིད་མེད་ འདི་ལ་ ནི།

དཔྱིད་ཀྱི་ བྱང་བའ་རྒྱལ་འཕྲུལ་གྱིས།

ཅོ་འདི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ སྤྱིས་ ॥ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धरः ।

न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི།

སྤང་པོའས་ གཟུང་དཀའ་ ན་མེད་ཀྱིས།

གང་ཕྱིར་ བདག་ཅག་ མཐར་བུས་པ།

དེ་ཕྱིར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྒྱལ་གཞོན་ མཚར་ ॥ ༩

राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

གཤམ་ཏུ་ རྟོག་པ་ མཛོམ་པ་ཡི།
 མི་བདག་ བྱིད་འདས་ རྟོག་འཛིན་ རྟོ།
 གཤམ་པར་གྱུར་ཏེ་ རྟོག་གྱུན་གྱིས།
 རྟོག་པ་དག་ གྲུང་ ཐོབ་པར་གྱུར། ॥ ༡༠

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिखनः ॥११॥

ས་ཏ་ཀཱ་པའི་མེ་ཏོག་གསལ།
 བདག་ཡིན་མཆོག་ཏུ་སྒྲིང་ལྷན་བྱེད།
 ཁུ་བྱག་ཕྱོས་བ་དག་གི་སྒྲ།
 ཡིན་ཏུ་འོང་བ་འདིས་ཀྱང་ངོ་ ॥ ༢༢

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशी ।
अवस्था नालमारोढुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

བྱིད་ལ་ དམིགས་ པའི་རི་བ་ དང་ ।
 མ་བྲལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི།
 གནས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཛིག་བྱིད་པས།
 བྱད་མེད་ འཛོགས་ ལྷས་ ཅི་ལྟར་མིན། ॥ 22

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདྲབ་ གསར་པས་ མཛོས་བ་ཡི།
 རྩོན་པས་ དངས་པའི་ གཞོན་ནུ་ནསས།
 པརྒྱར་ མཛོན་ རྩོགས་ བྱང་བ་ཡིས།
 མིག་ནས་ པརྒྱང་སྟེ་ འགྲགས་པར་བྱེད། ॥ 23

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामिषं ॥१४॥

རྩོས་པའི་ བཞད་ནི་ རབ་འཇུག་པ།
 རྩང་གི་རྩལ་ དཀར་བ་ཡི།

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅོ་ ཡིས།

བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟས་སྤྱུ་བྱེད། ॥ १८

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनन्दनः ।

सहेन्दुकलयपोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དི་བྲལ་ རྩ་བའི་ཆ་དག་ ནང་།

སྟན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་དུག་གི་ ཇེས་སྤྱུ་འགྲོ། ॥ १९

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।

हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ སྟན་མི་འདོད་ བེངས་པ་ཅན།

དོ་ཤལ་དང་ཐུན་ འཕྲོག་བྱེད་མ།

ལུས་མེད་ བྱིད་ཀྱི་ ནང་པ་ ཉིད།

ཕ་གུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་གྱུས་ མཛོད། ॥ २०

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।
कमलं कमलंकुर्वदलिमद्वलिमत्प्रिये ॥१७॥

पुनःपुनः गच्छेत्तु नः नः नः नः नः ।
तु नः नः नः नः नः नः नः नः ।
नः नः नः नः नः नः नः नः ।
तु नः नः नः नः नः नः नः नः ॥ १७ ॥

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।
वारुणीवारुणीभूतसौरभा सौरभास्पदं ॥१८॥

श्रीःश्रीःश्रीःश्रीःश्रीःश्रीःश्रीःश्रीः ।
तु नः नः नः नः नः नः नः नः ।
नः नः नः नः नः नः नः नः ।
नः नः नः नः नः नः नः नः ॥ १८ ॥

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।
व्यपेतस्यापि वण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པའི་ ཐོག་མ་ཡི།
 རྩེ་ལྟན་ བར་ཚོད་མེད་ བླ་རྟོག།
 ད་ནི་ བར་དུ་ཚོད་པ་ ཡི།
 བླ་རྟོག་ འགའ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ། ॥ ༢༠

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

མ་ཉ་ཀྱ་ར་ ལས་ འབྲུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ སྒྲི་བཟངས་ལྟན་པ་ ཡིས།
 དཔྱིད་གྱི་ ཨེ་ཆའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁེངས་པ་ སྒྲ་ཡི་ ལྟག་མར་བྱེད། ॥ ༢༠

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेर्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ་ ཤིན་དུ་ དམར།
 ལྱུང་མངས་ལ་ བསྟན་ བླ་འཕྲུལ་ལ།

ཕྱག་དོག་ ལྷན་ནས་ མཛེན་བོ་ལའང་ ।

ན་བའི་ཡུལ་གྱིས་ བསྐྱོན་བྱེད ॥ ३०

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।

मेघाली नर्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

རྒྱུ་གྱིས་ གར་ བསྐྱོར་ སྒྲིན་གྱི་སྤེང་ ।

མཐའ་དག་ ཚུ་ནི་ འཕྲོར་བར་བྱེད་ ।

དེ་རྗེས་ མཆུག་ མ་རབ་བསྐྱེད་བའི་ ।

མཆུག་སྒྲོ་ལྷན་པ་ གར་དག་བྱེད ॥ ३३

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।

कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेशां ॥२३॥

འདོད་ལྷན་མ་ དག་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡིད་ ।

ཁེངས་ཚོད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་དེ་ ।

ནི་བའི་ཀ་ལི་ཀྱ་ མཐོང་ན་ ।

སྐྱམས་སྐབས་ ཅི་ལ་ རིག་འགྱུར་རམ ॥ ३३

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तस्थलीमिमां ।

नृत्यत्येष लसच्चारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

ऊँ नमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां ।

सप्तमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ।

सप्तमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ।

नृणां नृणां नृणां नृणां ॥ २८

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेद्य भुजेन ते ।

वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

नमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ।

नमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ।

नमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ।

नमसि रीत्यै चन्द्रैर्नृणां नृणां ॥ ३०

करेण ते रणेष्वन्तकरेण द्विषतां हताः ।

करेणवः क्षरद्रक्ता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

གཡུལ་དུ་ དག་ཡི་ གླང་བོ་ནམས།
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ མཐར་བྱེད་ཀྱིས།
 བསྐྱེད་པའི་བྲག་ ཉི་ རབ་ཟག་པ།
 ཐུན་མཚམས་དག་གི་ སྤྱིན་ བཞིན་ མཛོམས། ॥ ३५

परागतहराजीव वातैर्ध्वस्ता भटैश्चमूः ।
 परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

གླང་གིས་ རི་ཡི་ཤིང་ཕྱེང་ བཞིན།
 གཞན་གྱི་ སྤེ་ནི་ དབར་བོས་ བཅོམ།
 མཐར་ནི་ ག་ཤེད་ སང་བ་ བཞིན།
 དུལ་གྱིས་ ཉམ་མཁའ་ བྱབ་པར་གྱུར། ॥ ३७

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।
 स दानवकुलध्वंसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ཡེགས་ལྷན་ ལུ་འཛིན་ གསར་པའི་འོད།
 ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད།

ཆད་ལྷན་ གླང་པོ་ མཚོག་ བཅོམ་པ།

ཁྱབ་འཇུག་དེས་ ཁྱིད་ ཉག་ཏུ་ སྤངས། ॥ ३८

कमलेस्समकेशन्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।

कमलेष्यं करोषि त्वं कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

ཁྱིད་ཀྱི་མགོ་སྤང་བ་འདྲ།

གཞིང་ནི་ བསྐྱར་ སྤག་དོག་ཁྱིད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་ཏུ་ རབ་སྤོས་པ།

ཁྱིད་ཀྱིས་ སྤ་ཞིག་ ཅི་མི་ཁྱིད། ॥ ३९

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྱུ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ གྱུན་དང་ལྷན།

གྱུགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་རྒྱ་ན།

ཆུང་བ་ མིན་པས་ མཇོམ་པོ་ ཉི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ བྱ་བར་བཞེད། ॥ ३०

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।
अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

དེ་ལྟར་ བར་ཚོད་རྒྱང་ལྟན་གྱི།
 རབ་དྲུག་གྱེ་བ་ འདི་ཡང་ བཟུམ།
 བར་ཚོད་ མ་ཚོད་ བདག་ཉིད་གྱི།
 ཉམ་ཉིག་ གྲང་ ཡོད་ འདི་ལྟ་སྟེ། ॥ ༣༣

सालं सालंबकलिकासालं सालं न वीक्षितुं ।
 नालीनालीनवकुलानालो नालीकिनीरपि ॥३४॥

ཀ་མི་ཀྱུ་ འཕྱང་ ཡལ་ག་ཅན །
སྒྲ་ལ་ བཟུ་བར་ རེ་ མི་ནུས །
བ་ཀྱ་ལར་ ཆགས་ བྱང་བ་ རང་ །
གྲོགས་མེས་ བརྒྱ་ཅན་ ཡང་ མིན ༥ ༣༥

कालं कालमनालक्ष्यतारतारकमीक्षितुं ।
तारतारम्यरसितं कालं कालमहाधनं ॥३५॥

ཕྱིན་ནག་ ཆེན་པོ་ཐུན་པའི་དུས། ་
མང་དང་ བྱུ་སྐར་ ཀྱན་ མི་མཆོཅ།

གསང་ འཁོར་ དགའ་བ་ རྒྱུགས་བྱེད་པ།

དུས་འདྲ་ སྤྲ་ཡིས་ བལྟ་བར་ནུས ॥ ༣༥

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।

यामयाम धि[39b]याऽस्वर्त्याया मया मथितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གུར་ རིང་བ་ཡི།

མཚན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་ཤི་ཅིག།

གང་ལ་ བདག་ སང་ སྲོག་ གཟེར་ འགྲོ།

དེ་ནི་ རྒྱུ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ ॥ ༣༦

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।

एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅེས་ཀྱང་ དང་པོ་ རུང་ཐུན་གྱི།

ནས་རྟོག་ ལུགས་ནི་ འདི་འདྲ་ ཟླ།

འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ རུང་ཐུན་གྱི།

ནས་རྟོག་ གཞན་པ་ རྒྱས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ༣༧

न प्रपञ्चभयाद्भेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

སྒྲུ་མ་པ་ས་ འཛིག་ས་ ལྷིར་ རྟེན་བ་ནི །
མཐའ་དག་ བཟློན་པར་ མི་འདོད་དེ །
དེ་ལ་ བྱ་དགར་ མངོན་འདོད་ གང་ །
འགའ་ཞིག་དག་ནི་ བསྟན་པར་བྱ ། ३८

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

བདེན་ལྷན་ དབང་པོ་ རབ་བསྐྱམས་པ །
བྱིད་ནི་སྒྲོམ་བཟློན་ལས་མི་ཉམས །
སྒྲུ་མེད་ བྱིད་ཀྱི་ བདེ་ འཛིག་ས་པར །
མི་འགྱུར་ འདི་སྟེན་ ཆེད་དུ་འང་ འགྱུར ། ३९

सभासु राजन्नसुराहतमुर्ध्वैर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।

न भासुरा यान्ति सुरान्न तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཞལ །
 ཆང་གིས་ས་བཅོས་ནོར་གྱིས་ མཛེས་བས་རབ་བསྟོན་བའི །
 ཁྱིད་གྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྐྱེ་དགུ་ལ །
 སྤང་བོ་ཉིད་གྱུར་ ལྷ་རྣམས་སྤུ་ བི་མི་འགྲོ་མིན ༥ ལ།

तव प्रियासञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དམ་བའི་སྐྱོད་ལ་བག་མེད་ཁྱིད་གྱི་དགའ་ས་ གང་ །
 དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་དགའ་བས་ ཁྱད་བར་དུ་སྐྱོས་ས །
 དེ་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྡན་ གྲུན་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྡན་ཉིད་གྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་མེད ༥ ལ།

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव दीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་ཁྱིད་ལྷས་དུད་བའི་རོ་ནི་མི་མཁྱེན་དེ །
 དམན་བ་ཉིད་ དང་ མཆོག་ཉིད་ དག་ནི་ དེས་བར་འགལ །

གང་ཞིག་ རྟེན་པ་རྣམས་ ཉི་ ཁྱིལ་མགོས་ འདྲ་ཅིང་ །

དེ་དག་ ཁོ་ན་རྟེན་པའི་རོ་ དེས་ མཆོག་ཏུ་ གྱུ་ ॥ ༧༢

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।

व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཇུ་མ་ དཀར་ དང་ ཉི་ འཇམ་པོར་སྒྲུ་བ་ དང་ །

ཆུང་ཆུན་ལྟ་བ་ དང་ཉི་ ལྷི་པའི་འགྲོ་བ་ དང་ །

ཀྱན་ཏུ་སྒྲུལ་ དང་ རོ་ ལྟ་ན་དག་ སྟོན་པ་ དེས་ །

བསྒྲུན་པ་ དེས་ ཉ་ བདག་ཉི་ འཇོ་བས་ དམན་པར་གྱུར་ ॥ ༧༣

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।

भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དཔལ་ལྡན་ མི་ཤོང་ བདུན་ལྡན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་ཉི་ །

འཆི་མེད་ལས་དང་ མཉམ་པའི་ཆད་ལྡན་ རབ་དྲུག་པའི་ །

འགྲོ་བ་རྒྱས་བྱེད་ མཆོད་ལྡན་ ཆད་མེད་ མིང་ཅན་ཉི་ །

འཇལ་བྱེད་ ཆད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ རྒྱག་དག་མཛོད་ ། ༧༤

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुरुसारधरा तं ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

सतुङ्ग'ल' लुग'स'ते' सु'द'मी'स' द'ग'ल'मु'द'ते' ।
स्त्री'द'प'र'गु'द'प'री' सतुङ्ग'स'द' स'व'दु'ल'ई'क' ।
ग'ल'क'पु'ई'स'स'कु'द'स' क'ल'क' द'ल'कु'द'क' ।
दे'स' र' सतुङ्ग'ल'क' स्त्री'द'प'क'द'प'र'द'ी'ग' ॥ ८४

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाश्रितान् ॥४६॥

सद'क'कु'स'कु'ल'द'द' कु'ल'स'क' स'द'ग'प' र'दी'ली'स'र' ।
कु'ल'स'क' द'ग'प'री'स'व'स'ल' ल'द'क'स'स' क'स'प'र'सु'ल' ।
ग'ल'क'प'स'स'स'र'द'गु' कु'ल'प'री'स'ग'ल'द'ग'प'री'स' ग'द' ।
कु'ल'स'स'व'स'क'स'स' स'व'प' द'ग'ल' सद'क'प'सु'ल' ॥ ८५

[40b]खेण भौमो ध्वजवर्त्तिवोरखेखेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
खेखिवोग्रस्य पुणे हरेखेखेत तुल्यं रिपुमस्य भैरवे ॥४७॥

མཚུངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྷན་ གཡུལ་དུས་སྤྱིས་ནི།
 གྲུལ་མཚན་ལ་ གནས་ དཔའ་བོ་ བྱ་ཡི་ སྒྲ་ཡིས་ གྲོས།
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བཞིན་པའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཛིགས་ཅང་ གཡུལ་ ལ་ དག་ནི་ལྷག་དང་མཚུངས་པར་རིག། ༧༧

मयामयालम्ब्यकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयात्तिं निशयाऽमयामयामयामयामूं कल्पामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ བྱན་ལྷན་ དཔའ་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ནི་ བསྐྱོད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བདེན་པ།
 ཚ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉན་ཅན་ འབྲལ་བའི་ ཉན་གྱིས་ གཟེར།
 སྒལ་ལྷན་མ་ འདི་ ལྷིང་ཇེའི་རང་བཞིན་ འབྲལ་མེད་ མཛོད། ༧༨

मताधुनानारमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयल्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ ཁྱོད་གྱི་ སྒོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བསྐྱོག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ སྒྲ་མེད་ ཇེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།

གདུང་མེད་ཀྱིས་ ཐོབ་ བཞོག་གི་ རྩེས་སུ་ བསྐྱུན་པ་ ཉིད།

དགའ་མེད་ འདོད་མེད་ནས་སྐྱེ་ བཞིད་པ་དག་ལས་ གྱུལ། ॥ ༥༧

कालकालगलकालकालमुखकालकाल

कालकालपनकालकालघनकालकाल ।

कालकालसितकालका ललनिकालकाल

कालकालगतु कालकाल कलिकालकाल ॥५०॥

དུས་ཀྱི་ དུས་ཅན་ བསྐྱིན་ནལ་སྤྱོད་ནལ་ བལ་པོ་ ཉིད་ དལ་ འཛིན།

སྒྲིབ་སྒྲོགས་དག་གི་ སྒྲོགས་ དུས་ བྱང་ཚོགས་ སྒྲིབ་ནལ་ ལྷ་བྱུར་ བལ།

དུས་ཀྱིས་མི་གཞུང་ དུས་ཆའི་ བཞེ་པོ་ བཞོས་པའི་ སྒྲིབ་གྱི་བཞོ།

དགའ་པས་འཛོ་པའི་གཡོ་ལྷན་ལན་སྤེང་ རོལ་ཅན་འགྲོགས་པར་ བཞོད། ॥ ༥༠

संदृश्यमकस्थानमन्तादि पा[41a]दयोर्द्वयोः ।

उक्तान्तर्गतमप्येतत् स्वातन्त्र्येणात्र कीर्त्यते ॥५१॥

ཀྱང་པ་ བཞིས་ཀྱི་ བསྐྱུང་ཐོག་ ཉི།

རབ་སྐྱུར་ རྒྱང་ལྷན་ བཞས་སྐབས་ འདི།

བཞོད་པའི་ བཞོས་སུ་ འདུས་ བཞོད་ཀྱང་།

རང་དབང་ཉིད་ཀྱིས་ འདིར་ བཞད་དོ། ॥ ༥༡

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

ཨོམ་པའི་ ཆགས་པ་ ཉེ་བར་གནས་ཀྱང་ བྱད་མེད་དེས།
བདག་ཉིད་ མ་སྦྱར་ བདག་གི་ སྒྲིག་པས་ ཁྲོ་བ་ཡི།
རོ་དང་ སྦྱར་ཏེ་ བྱས་མེད་ དག་གིས་ གཏུང་ བྱར་ ཀྱང་།
བདག་ ཅི་ འདི་སྟེན་ གཏུང་བཞི་སྦྱད་ཏུ་ མ་བསྐྱད་དོ། ॥ ༥༢

अर्थाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य भेदास्त्रयो मताः ।
पादाभ्यासोऽप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

ཕྱིད་རྒྱས་ ཡང་དག་སྦྱར་བ་ཡིན།
འདི་ལ་ དབྱེ་བ་ གསུམ་ཏུ་ འདོད།
ཀྱང་པ་ བརྒྱས་པ་ དང་ ཏུ་མ་ ཡི།
བདག་ ཉིད་ དེ་དག་ དཔེས་གསལ་བྱ། ॥ ༥༣

नास्थेयः स त्वया वज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वज्यः परमायतमानया ॥५४॥

སྒྲིམ་བྱ་ བརྟན་ གང་ ལྷིང་སྒྲོམ་ཅན།

ཁངས་པ་ རབ་སྦངས་ སྦང་བྱ་ རེ།

ཁྱོད་ཀྱིས་ མཆོག་ཏུ་ འབད་པ་ ཡིས།

ཡིད་བརྟན་བྱའོ་ མི་བརྟན་ས། ॥ ༥༥

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।

विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བགྲོད་པ་ ཁུབ་བདག་ གཞི་བྱིན་གྱིས།

ཡང་ཡང་ རབ་སྦྱར་ མཆོས་པ་ མེད་པ་ཡི།

མི་རྣམས་ ཚུལ་དང་ ང་གྲུལ་ ཉམས་བྱས་ནས།

གདུང་ ཞིང་ ཀྱི་ས་ བྱས་ཆོས་ རྣམ་པར་བཅོས། ॥ ༥༥

कलापिनां चारुतयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।

वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिनां चारुतयोऽप[41b]यान्ति ॥५६॥

སྒྲིན་བགྲོད་ དབྱར་སྒྲིམ་ མི་བྱའི་ཆོག་ས་རྣམས་ བློ།

དགའ་བའི་སྒྲ་ཡིས་ མཆོས་པ་ ཐོབ་པར་གྱུར།

ལྷུང་གི་ཚོགས་ ལྷག་ བལ་བས་ ལུང་སྒྲོགས་ཀྱི །
 ཚོགས་ནས་ས་ སྒྲ་དང་བལ་བ་ ཉིད་ཏུ་ བྱུར ༥ ༥

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
 उरस्युपास्तीण्णेपयोघरद्वयं मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ॥ ५७ ॥

འཚོ་བའི་དབང་ལྷག་ འདུད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ ཁོ་མོ་ནི །
 འཕྲུག་ཞིང་ ཁེངས་པ་ འཕྲུག་པ་བསྐྱབས་པའི་དབང་བྱུར་མ །
 བཅེ་བ་ སྒྲངས་པས་ བདག་ཉིད་ བལ་གི་འོ་མ་འཛིན་ །
 བཞིས་པོ་ ཉི་བར་བཀྲོད་ནས་ ལྷན་ཏུ་མ་འཁྱུད་ནོ ॥ ༥༧

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
 स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥ ५८ ॥

སྒྲ་ནས་ས་ འདུན་ས་ ལྷོགས་མེད་བྱུང་བདག་བཀས་པ་ན །
 ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ བད་ཅེ་ སྒྲི་མ་མེད་པས་ འཛིགས །
 དེ་ནི་ འོད་འབར་ བྱོང་བཟང་ནས་ཀྱི་ ལྷན་སྐྱུམ་ཚོགས །
 བསྐྱེན་པའི་ བྱུང་མེད་ནས་ དང་ ནས་པར་ཅེ་ཞིང་སྒྲོད ༥ ༥༨

कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तद्वते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणेन भवन्मुखे कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

झुव'वर'झु'दर' लुस'झेर'रु'दर' वु'म'डिस'मस' ।
सुि'द'लस' म'ल'व' स'ल'ल'म' म'म'ल'स' र'य'ल'र' ।
र'र'द'र' लुस'ल'व' लु'व'ल'स'म'ल'व' सुि'द'ल'ल'स' ।
म'म'द'व' ल' र' म'द'ल'र' ड'व'र'ल'म'ल'ल' ॥ ५७

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

लु'व'ल'ल'म' ल' ल' सुि'द'ल'र'ल'म'ल'ल' म'म'ल'स' ।
म'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' र'v'v'v'v'v'v' सुि'v'v'v'v'v'v' ।
म'ल'ल'l'v' r'v'v'v'v'v'v' सुi'v'v'v'v'v'v' ।
r'v'v'v'v'v'v' लु'v'v'v'v'v'v' m'v'v'v'v'v'v' ॥ ७०

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्चितं ।
शृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चितं ॥६१॥

ཨན་ལྷན་ བདག་ལ་ སན་བའི་ཚོག་ གཅིག་ གསན་བར་མཛོད་ ।
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས་ ।
 ས་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛོན་ དེ་ཕྱིར་ ས་གཞི་འཛོན་ ।
 དང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་པ་ རྒྱས་པར་ ཡོངས་ས་བྱེད་ ॥ ༩༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་པའི་ མེ་གང་ ཁེངས་བས་ དབ་བསྐྱབས་པ་ ।
 ལྷན་ཅིག་དང་མཉམ་རྒྱས་དེས་ བསྐྱའི་མིག་ ।
 རོ་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ བེ་ ।
 རྒྱན་ནས་ རྣམས་པ་ རྟིད་ཏུ་ ཅིས་སྤྱི་བྱེད་ ॥ ༩༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासीत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

ས་ཏུད་ ཁྱོད་ནི་ འཛིག་དེན་ བདག་གྱུར་ ཚོ་ ।
 མཐུ་ཡིས་ མཐུ་ལྷན་ རོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་པ་ ।

དེ་སྤྱིར་ གསར་པའི་ བརྒྱུ་ལྷན་ མཆོད་སྦྱིན་ནི།
 དེས་པ་ཉིད་དུ་ ཆད་པར་ས་གྲུང་རོ། ॥ ༤༢

परम्पराया बलवा रणानां धूलीस्थिलीव्योऽस्त्रि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དཔྱུང་གི་ གླང་པོ་ནམས་ནི་ གཞན་ དང་ གཞན།
 ལྷོབས་ལྷན་ ལྷོ་ལྷོགས་ རབ་དུ་ བརྒྱུད་པ་ཡིས།
 བང་ལ་ རྒྱལ་ བསྐྱབས་ རྣམ་མཁའ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་ལྷོབས་ བརྒྱུ་ མཆོག་དུ་ གཞན་ལ་ གྲུག། ॥ ༤༣

न श्रद्धये वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

ཁྱོད་ལྷ་ མཉམ་པར་ས་བཞག་ སྤྱིད་པར་ ནི།
 རྣམ་གཉིས་ མི་མཉམ་ སན་པ་མེད་ རྣམས་ ཆོག།
 ལོག་པར་གྲུང་པ་ ལྷུང་བྱེད་ མི་མཉམ་པ།
 ལྷུང་ བགོད་ མཆོངས་ལ་ མི་དད་ རོ་ཆ་མེད། ॥ ༤༤

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དག་ཡི་ མཛེས་ འཛེས་ས་ གྲུལ་པོ་འི་སྡེ་ཡིས་བདུད །
ཨ་མས་ ཕན་པ་ དཔལ་ལྡན་ མེད་མིན་སྡེ །
མི་འདུད་ ལོ་བལོས་ མཚོད་ཐོབ་ རུལ་མེད་པ །
སྤྲེས་མཚོག་ རེ་བོ་དམ་པ་ མི་མཛེས་མིན ॥ ७७

सकृद्विस्त्रिंश्र योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་པ་ བཟུན །
ཆོག་ས་བཅད་ གཉིས་དང་ལྷན་པའི་དོན །
ཆོག་ས་བཅད་ བརྒྱས་པ་ ཡིན་དེ་ དཔེར ॥ ७८

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥६८॥

རྒྱུ་ཞིང་ གྲུ་བའི་ ལག་བ་ཅན།
 གྲོགས་མིན་ རབ་ད་འཛེམས་བྱེད་བ།
 རྣམ་འཕྲོན་ ཁྱིད་ཀྱི་ བསྟེན་བ་ཡི།
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་བ་མེད ॥ ༦༤

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

འཕྲོན་བ་ དག་ དང་ བལ་གྱར་ཅིང་།
 ལག་བ་ སྟེགས་ཁང་ ཉི་གྱར་བ།
 རང་གྲོགས་ཀྱིས་ བདང་ དག་ཡིས་ནི།
 མི་མཉམ་ ས་ འདི་ མངོན་བར་བསྟེན ॥ ༦༥

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वयं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀླང་བཞི་ རྣམ་བ་ གཅིག་བ་ གང་།
 རྒྱང་ལྷན་ རྒྱུ་ཤོར་ བཞེད་བ་ ཡིན།

དེ་ལ་འང་ བརྒྱས་པ་ མཐོང་སྟེ་ དེ།

ཆུང་ལྷན་ བྱ་བ་ གཞན་ ཡིན་ནོ། ༥༠

समानयास मानया समानयासमानया ।

समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དབལ་ལྷན་ མཆོངས་མེད་མ།

ཁིངས་ལྷན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི།

ཁིངས་པ་མཉམ་ལྷན་ ཆུལ་མེད་དག།

དོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སྤྱུ་རྒྱལ། ༥༡

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा महीं पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।

क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानधुरावलम्बिनः ॥७२॥

འདྲིན་མ་ འདྲིན་བའི་རྣམ་འདྲིན་ འདྲིན་མ་སྟོན་རྣམས་ཀྱི།

ལག་པ་རྣམ་གཞོན་ མི་དམན་ འཕྲལ་ལ་ དག་འདྲིམས་པ།

ཁྱུར་བ་དང་ལྷན་ མཚོད་བའི་ ཁར་ནི་ བསྟེན་པ་ ཡིས།

ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་པས་ བསྐྱང་བར་ བཟོད་ པ་ཡིན། ༥༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

गदः प्रुदं कौमसः वउदं सुदं प्रुदः उदं ।
लुमसः लसः वल्लेगः वः वल्लेगः वः ३ ।
लुदः लुदं लुमसः लसः वल्लेगः वः प्रुदः ।
लुमसः लसः वल्लेगः वः लेसः वः वः ॥ ७३ ॥

या मताश कृतायासा सायाता कृशता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

गदः लः लवदः प्रुसः सुः सुः ३ ।
देः ३ः वदगः गौसः सुवः लः लः वः ।
देः लः लः लः लः सुदः लः लः ।
वल्लेगः वः सुवः सुदः लः लः लः ॥ ७४ ॥

नादिनोऽमदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

རྒྱ་དྲ་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ རྩོམ་
 རྩོས་མིན་ འདོད་པ་ འགའ་ ཡང་མེད།
 དུལ་བ་ འཛེམས་པའི་ འདོད་པ་ ཡིས།
 རང་དབང་ གཏུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད ॥ ༧༥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགྲོ་ བདུད་རྩོད་ ལྷག་མི་དམན།
 གང་ཞིག་ དབང་གུར་ རྩེ་བོ་ འཛེམས།
 གང་ལ་ བདག་སྤང་ རྩེ་བོ་ བརྒྱའི།
 དབང་གུར་ དེ་ལ་ རྩོན་ ཞེས་ རྩམས ॥ ༧༦

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

རྩོན་ འདི་ ཡིས་ནི་ གཟེར་གུར་ཅིང་།
 རྩོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ བློ།

ཉིན་མོའི་ ཉང་དག་ མ་ཐོབ་ མིན།

མུ་ངན་ འབྲེལ་ སྤྲད་ ཁེངས་མ་བྱེད། ॥ ༧༧

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་ ཀྱི་ཡི་གེ་ བློས།

གཅིག་གིས་ བར་ཚད་ གཞུགས་གཅིག་ཉིད།

དེ་ནི་ བྱ་དགའ་ དེ་ཉིད་ རིག།

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སྤྲ་ སྟེ་ དཔེར། ॥ ༧༩

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गास्त्रोजये दयं ।

मदेनो यदि तत् क्षीणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲའི་ མིག་ལྡན་ ཟུར་མིག་གི།

མཚོན་ གྱིས་ འདོད་པ་ འདི་གུལ་ ཏེ།

གལ་ཏེ་ བདག་ཀྱང་ སྤིག་ཟད་ ན།

འདོད་པ་ ལ་ནི་ ཐལ་མོ་ སྦྱར། ॥ ༨༠

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

གལ་ཏེ་ ཚེགས་བཅད་ ཟུད་ འཁོར་ན།
ཟུད་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བརྗོད།
གལ་ཏེ་ ཀུན་ཏེ་ འཁོར་བ་ན།
ཀུན་དུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད། ॥ ८०

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

མ་དུང་ ཡིད་བྱུང་ ཁྱིད་ དར་ ཟྱིར།
མྱེ་ནི་ ཁེངས་ལྡན་ མ་ཡིན་ མིན།
ཡང་ན་ ཚད་ དཔག་མེད་ ཅད་ཀྱི།
འཛིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ སྒྲིག་པའི་དངོས། ॥ ८१

सामायामामायामासामारानायथानारामा ।
यानावारारावानायामायारामामारायामा ॥८२॥

ལྟ་མེད་ མིན་པའི་ དགའ་མ་ གང་ །
 བདུད་ བརྒྱུད་ མ་ལྟུང་ བཟོད་བཞོག་མ་ །
 ལྷ་མེད་ ལྷ་པོས་ལྷ་ན་ ལྷ་གནས་ཏེ་ །
 ལྷ་དང་ལྷ་ན་ ཅིག་ འཆི་ ལྷ་དུ་འོ་ ॥ ༤༢

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टश्चतुःप्रभृत्येष दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་ གནས་དང་ ཡི་གེ་རྣམས་ །
 དེས་པ་ གང་ འདི་ བྱ་དགའ་ལ་ །
 བཞི་ལ་ མོགས་པ་ རབ་བསྐྱན་ འདི་ །
 གཞན་ནི་ བྱ་སྤྱོད་ དག་ཏུ་ འདོད་ ॥ ༤༣

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरोतीर्भीतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་ མཐར་ ལྷས་པའི་ཆོག་ །
 ལྷ་དང་ ཡམས་ནད་ འཛིགས་ དགའ་ ཡིས་ །

མེངས་སྒྲིབ་ ཉན་དང་ དགའ་དང་ མེངས་ །

དག་བའི་ ཡུལ་དུ་ སེམས་ འདོད་རྒྱུང་ ॥ ༤༥

क्षितिर्विजितिस्थितिर्विहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।

उरु रुधुर्गुरु दुधुबुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་གྲུལ་ བདུན་པ་ སྒྲུབ་བྱེད་བའི་ །

བདུལ་བྱས་ལ་དགའ་ མཆོག་ ཉོགས་ ཀྱ་ཅུ་བས་ །

གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི་ །

ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ༤༦

श्रीदीप्ति ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।

पथेते ह्रे ह्रे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དཔལ་གཞི་ རོ་ཚ་ བྲགས་ དང་ །

སྒོ་ལྷགས་ ཆོག་ དང་ དགའ་དག་ །

ཁྱོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ །

འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ༤༧

सामायामामाया मासा मारानायानारामा ।

यानावारारावानाया माया रामा मारयामा ॥८७॥

ནད་རིང་ མིན་པའི་ དགའ་ མ་གང་ ।

བདུད་རྒྱུར་ མ་ལྷུང་ བཤོད་ བརྗོལ་མ། ।

སྤྲོ་མེད་ སྤོབས་ལྷན་ སྤྱུ་གནས་དེ། ।

ལྷ་དང་ ལྷན་ཅིག་ འཛི་སྤྲད་དུའོ ॥ ༨༧

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।

अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

འདྲིན་བྱིད་ ཀྱུན་དགའ་ སྤྱིད་བྱིད་མ། ।

སྤྱུ་སྤྲར་ཚོགས་ནམས་དག་གི་གནས། ।

སྤྲོ་མེད་ མཁའ་ལ་ ལུས་ཅན་མ། ।

ལན་ཅིག་ མིག་ནི་ སྤྲོན་པར་མཛོད་ ॥ ༨༨

अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि ।

आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

རྒྱ་སྤྲུག་ ཁྱིའི་ གདོང་ལན་བྱ་ཡི།
 འཁྲི་ཤིང་ བྱང་བ་ ལྷ་ར་ སྤྱོ་ཞིང་།
 འཕྲིན་བྱེད་ བསྐྱའི་གཞུགས་ བརྟན་ཅན།
 ཁྲི་ལྷ་ར་ མཛོས་བས་ སྤྱ་ མ་བཅོམ། ॥ ༤༠

अनङ्गलङ्घनालङ्घनानातङ्का सदङ्गना ।
 सदानघ सदानन्दनताङ्कासङ्गसङ्गतः ॥६०॥

ཏྲ་ཏྲ་ སྤྱི་ག་མེད་ ཀྱན་དགའ་ མཚོག།
 ལུས་ ཏུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས།
 བཅོན་མོ་ ལུས་མེད་ཀྱིས་ འགོངས་ཏི།
 འཛིགས་བ་ ཏུ་མས་ རིག་བར་གྱུར། ॥ ༤༠

अगा गांगाङ्काकाकगाहकाऽधककाकहा ।
 अहा[44b]हांग स्वगाङ्कागकंकागखगकाक ॥६१॥

ཏུ་ཏུ་མི་ སྤྱི་གས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཚན།
 རི་འགྲོ་ དབང་ འཁྲིག་ལྷན་ མ་ཆགས།

सूरिः सुरसुरासारिसारः सारससारसाः ।

ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

མཁས་པ་ ལྷ་ དང་ ལྷ་མེན་ལ།

འགྲོ་ ལྷོབས་ལྷན་པའི་ གྲིན་ལེགས་ཅན།

ཆང་གི་རོ་ལྷན་ གཤོལ་འཛིན་ དེ།

བཞད་ཀྱི་སྒྲི་ལྷན་ མཚོ་རུ་ སོང་ ॥ ༧༥

नूनं नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।

नानेना ननु नानूनेनैनैनानानिनो निनीः ॥६५॥

འདི་ཡིས་ བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་ བཞིན།

བཞིན་གྱིས་ དེས་པར་ མ་ བཅོམ་ མིན།

བདག་སྟོག་ མི་དཔན་ འདི་དང་ སྟོར།

ཇི་པོ་ སྐྱེས་མིན་ ཇིག་ཅན་ དེས་ ॥ ༧༦

इति दुष्करमार्गेऽपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।

प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

རེ་ལྷར་ བྱ་ དཀའི་ལས་ལ་ ཡང་ །
 རིས་པ་ རུང་ཟད་ ཀྱན་དུ་ བསྟན་ །
 གཤམ་ཆོག་དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །
 ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་དུ་བསྟན་པར་བྱ་ ॥ ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्णमन्त्रणे ।
 परव्यामोहने चापि सोपयोगाः प्रहेलिकाः ॥६७॥

རྟེན་མེདི་ འདུན་ སར་ བཞད་གདྱ་དང་ །
 དེ་ཤེས་ ཆོགས་སུ་ གསང་ སྤྱོད་ དང་ །
 བ་རེལ་ ཀྱན་དུ་ མེདས་བྱེད་ལ་ །
 གཤམ་ཆོག་དག་ བློ་ རྟེན་མཁོ་ལྷན་ ॥ ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।
 वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रूढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཆོག་མཆོགས་ སྤྱོད་པས་ དོན་སྤྱོད་པ་ །
 ཀྱན་དུ་ ཆོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཞེད་ །

གཞན་ལ་ བྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས།

གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྒྲ་བྱེད་ཉིད། ॥ ༩༩

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।

सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्वोधार्था पदावली ॥६६॥

སྒྲོར་བ་ ཤིན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས།

སྒྲོས་བྱེད་ རིས་པ་ བྲལ་བ་ ལྟེ།

གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀར་བ་ ཡི།

ཆོག་སྤང་ དེ་ནི་ རབ་བཅོས་ཡིན། ॥ ༡༠༠

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।

परुषा लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བདགས་པའི་རོན་ བཞོད་ ཆོག་དག་གིས།

བསྐྱེབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཞུགས།

མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཅས་ རིས་ཆོག་ དང་།

ཐུན་པའི་ཆོག་ ནི་ ཅུབ་སྟོང་། ॥ ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

मदःतु मदसःगुणः गुणःसैदसःपद ।
मुदःपः मदसःगुणः उदःपुःश्वे ।
मदःतु मदःदेवः कसःपः मल्ल ।
मदःपः देवः मदःपदःगुणःगुणः ॥ १०१

सा नामान्तरिता यस्यां नाम्नि नानार्थकल्पना ।
निवृता निवृतान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

मदःतु सैदःपः कःकैमः देव ।
मदःगुणः देवः सैदःतु मदःपःगुणः ।
कैमःदेवः कः सैदःपःपः मदःपः ।
देवः मल्लः मल्लःपःपः मल्लःपःपः ॥ १०२

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

* བས་གངས་ སྒྲ་ནི་ བཀོད་པ་ ཡིས། །
 བསྐྱབས་པ་དག་ནི་ བསྐྱབ་པའི་སྒྲ། །
 བཀ་ཞིག་ བའོན་སྐྱེས་ དོན་ བསྐྱབ་ ཡང་། །
 མོངས་ སྤྱིར་ དེ་ནི་ མོངས་ ཞིས་བྱ། ॥ १०३

योगमालात्मकनाम यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रितं व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

བཀ་ལ་ སྒྲོར་སྤྱིར་ བདག་ཉིད་ཅན། །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སྐྱེས་འསྐྱོག་ ཅས་ བྱ། །
 བཀ་དྲུ་ དེན་ནི་ སྐྱེས་བྱས་དེ། །
 བདེན་པ་ བསལ་པ་ བཅིག་ བསྐྱབས་པའོ། ॥ १०४

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 संकीर्णं नाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

བཀ་དྲུ་ བཅིག་ག་ སྐྱེས་གྱུར་པ། །
 དེ་ནི་ བཅིག་ག་ བསྐྱབས་པ་འོ། །

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ སྒྲ་ཚོགས་ འདྲིས་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདྲིས་ ཞེས་བུ ༥ ༡༠༧

एताः षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
 दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གང་ཚོག་ བཅུ་དྲུག་མེ །
 སྒྲ་གྱི་སྒྲོབ་དཔོན་ནམས་ཀྱིས་ བསྟན་ །
 གང་ཚོག་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
 བཅུ་བཞི་ དེ་དག་ནམས་ཀྱིས་ བཟློན་ ༥ ༡༠༨

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।
 साध्वीरेवामिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །
 སྒྲ་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བུ་མིན་པར་ །
 དེག་ནས་སྒྲར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས་ །
 ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བཟློན་པར་བུ ༥ ༡༠༩

न मयागोरसाभिन्नं चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

नमः शीतं वामं रसोत्तमं शीतं ।
शेषं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ।
नमः शीतं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ।
उच्छ्रितं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ॥ १०८ ॥

कुञ्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
नैवं निर्विशतो नारीममरस्त्रीविडम्बिनीः ॥१०९॥

गुप्तं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ।
नमः शीतं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ।
नमः शीतं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ।
नमः शीतं च मेदं च उच्छ्रितं शीतं ॥ १०९ ॥

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्ठके ।
मुखं वल्गुरवं कुर्वन्मुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ཡུ་བར་ འོ་བྱེད་ བད་ཅན་ གྱི །
 ངང་བ་ ཆོར་མ་ ཅུ་བ་པོ་ཅན །
 བཞིན་ལ་ སྒྲ་ཉྩན་ སྒྲོགས་བྱེད་ཅིང་ །
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ མཆུས ། ११०

ख्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फातवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

བྱ་མོ་ མཛོམ་མ་ བྱིད་ ཀང་བར །
 ཀང་གཏུབ་ བྱས་པ་ སྒྲ་ཉྩན་ སྒྲོགས །
 མཛོན་སུམ་ཉིད་ཏུ་གྱུར་བ་ འདིར །
 བདག་གི་སྒྲོག་ནི་ བདྲན་ མ་ཡིན ། १११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।-
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

གང་གི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ །
 མེ་ཏོག་ སུམ་བའི་ དོག་བ་ཅན །

འཁྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལུ་བ་ ཉི །

སྒྲིད་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ 223

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिषा ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि संप्रति ॥११३॥

ཆང་མ་ནམས་ ཉི་ ཆང་ཁང་དུ །

ས་ཡི་འོད་ཀྱིས་ ཅི་ དགར་ འབྱམས་ །

ད་ནི་ མྱོས་པར་བྱས་ དེ་ནམས་ །

ཆང་གི་རྫོང་བྱར་ བྱིང་བ་ བཞིན ། 223

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णाविभूषिता ।

अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྒྲ་ལྷན་དབྱས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས་ །

ཡོངས་སུ་ནམ་པར་བརྒྱན་བ་ཡི །

གྲོང་བྱིར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན །

མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད ॥ 224

गिरा स्खलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्यं वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

कमःकमसः सवःसुःसुःसुःसुः ॥ ११५ ॥
समःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११५ ॥
सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११५ ॥
सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११५ ॥

आदौ राजेत्यधीराक्षि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११६ ॥
सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११६ ॥
सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११६ ॥
सुःसुःसुःसुःसुःसुः ॥ ११६ ॥

हृत्तद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं व्रजन्ति काः ।
[46b]नानाभङ्गिशताकृष्टलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

རྩམ་བྲལ་ མི་ནི་ བདང་བྱས་ནས །
 རོར་ཐུན་ནས་སྐྱེ་ བཟོད་པ་ བཤང་ །
 སྐྱེ་ཆོག་སྐྱེ་ཆོག་བཟུས་འཛིག་དེན་འགྲུགས་ །
 བཟུང་དགའ་ སྐྱད་འཛོང་མ་ ཡིན་ནོ ॥ ༡༡༠

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वयः ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

བྱོད་ཀྱི་ ས་མིན་ མིང་ འཕུན་བཤང་ །
 རབ་གྱུར་ སྐྱེ་ མིང་ཅན་ལས་སྐྱེལ་ །
 དེ་ཡིས་ དིང་ བདག་ མཆོག་དུ་ནི །
 མེད་ཐུན་བྱེད་དོ་ སྐྱད་སྐྱོགས་མ་ ། ༡༡༡

शयनीये परावृत्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་ཐུན་དག་ནི་ མལ་སྐྱན་ལ་ །
 ཁྱོ་བས་ སྤྱིར་ བཟློག་ ཉལ་བར་གྱུར་ །

ཆགས་པ་ས་ དེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ །
དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ སྦྱར ༥ ॥ २१७

विजितान्नमवद्वेषिगुरुपादहतो जनः ।
हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་རྒྱལ་ ཟས་སྦྱེས་ དག་ཡི་ནི །
སྦྱ་མའི་འདྲ་གྱིས་ བཅོས་ སྦྱེ་བོ །
ཁ་འཛོམས་ ལོགས་མེན་ འཛོན་པ་ཡིས །
བྱ་བའི་མཁའ་ལ་ མངོན་པར་དགའ ༥ ॥ २१७

न स्पृशत्यायुधं जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।
अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནས་ཡང་ མཚོན་ དང་ བྱད་མེད་གྱི །
ན་མའི་ དྲླེལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག །
མི་ས་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི །
ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ ལོ༥ ॥ २१७

केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।

लब्ध्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

सु'र्वे'ण' व'द' द'द' अ'वो'व'स'व' य'स ।

सु'व' व'स'स'उ'द' उ'व'र'व' ।

वो'व' उ'द' उ'स'गु' द'स'द'ग'दु ।

व'व'द' स'वो'द'व' अ'द'द'व'र'सु'द ॥१२३॥

सहया सगजा सेना सभटेयन्न चेज्जिता ।

अमात्रिको[47a]यं मूढः स्यादक्षरज्ञश्च नः सुतः ॥१२३॥

द'व' व'व' सु'त'उ'व' ।

सु' अ'द' व'व'द' स'सु'व'व' ।

स'द'ग'स'द' द'द'गु'सु ।

अ'द'व' य'व' व'स' गु'द' सु'द ॥१२४॥

सा नामान्तरितामिश्रा वञ्चितारूपयोगिनी ।

एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरक्रमः ॥१२४॥

དེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ གཞུགས་དང་ལྷན།
 དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གཞན་ གྱི་ ཡང་།
 འདྲིས་པའི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ १२८

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥१२९॥

རོན་ཉམས་ རོན་འགལ་ རོན་གཅིག་པ།
 བྲེ་ཚོས་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས།
 སྒྲ་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 སྒྲེབ་སྒྲོར་ཉམས་ དང་ བཅོམས་སྒྲོར་བྲལ། ॥ १३०

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु स्वरिभिः ॥१३१॥

ཡུལ་དུས་སྐུ་ཅལ་ འཛིག་དེན་ དང་།
 ལྷང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྡེ།

སྒྲིལ་བཅུ་དེ་དག་སྒྲིལ་བ་ལ།

སྒྲིལ་བ་མཁན་གྱིས་སྤང་བར་བྱ། ॥ १३७

प्रतिज्ञाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न *चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन किं फलं ॥१२७॥

དམ་བཅའ་གཏན་ཚིག་དཔེ་ཉམས་པ།

ཞེས་པ་འདི་ཡང་སྒྲིལ་མིན་ནས།

པལ་ཆེར་དབྱེད་པ་དཀའ་བ་ཉིད།

སྤང་བ་དེ་ཡིས་འབྲས་བྱ་ཅི། ॥ १३८

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मतोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཚིགས་པའི་དོན་གྱིས་སྤང་བ་གང་།

དེ་ནི་དོན་ཉམས་ཞེས་པར་འདོད།

སྒྲིལ་བ་སྒྲིལ་བ་གྱིས་པ་ཡིས།

བརྗོད་པས་གཞན་ལ་དེ་སྒྲིལ་ནོ། ॥ १३९

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।
अमी गर्जति जी[47b]मूता हरैरावतः प्रियः ॥१२६॥

ॠ॒रै॒रै॒ः सु॒ख॒कै॒ ॠ॒सु॒र॒सु॒रै॒ ।
ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒ ॠ॒रै॒र॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ।
ॠ॒र॒ ॠ॒रै॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ।
ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॥ १२७

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनिन्दितं ।
इतरत्र कविः को वा प्रयुञ्जीतैवमादिकं ॥१२८॥

ॠ॒रै॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ।
ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ।
ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ।
ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॠ॒र॒ग॒ ॥ १२९

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहतं ।
विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३०॥

འག་གཅིག་གས་ནི་གྲུན་ལ་ཡང་།
 སྒ་མ་གྲི་མ་གཞན་འཛེམས་པ་།
 འགལ་བའི་དོན་ཅན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིན་།
 དོན་འགལ་ཞེས་པར་རབ་དུ་བཞིན་॥ १३१

जहि शत्रुकुलं कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དག་དེགས་མཐའ་དག་འཛེམས་པ་དང་།
 སྒ་ཚོགས་ཁར་འདི་གྲུལ་གྲུར་ཅིག་།
 འགྲུང་བོ་གྲུན་ལ་བཅི་བ་ཅན་།
 ཁྱོད་ལ་དག་ནི་སྒུ་ཡང་མེད་॥ १३२

अस्ति काचिद्वस्था सा सामिषंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदमिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་སེམས་ལ་ནི་།
 སྐབས་དེ་འགའ་ཞིག་ཡོད་པས་ན་།

གང་ལ་ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཆོག་ ཀྱང་ མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༥ ॥ १३३

परदाराभिलाषो मे कथमार्थस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བྱད་མེད་ལ་ མེད་པ་ །

འཕགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས་ །

དེ་ཡི་ མོ་སྒྲིབ་ གཡོ་བ་ དག་ །

བདག་ནི་ བས་ཞིག་ འགྱུར་འགྱུར་རམ ༥ ॥ १३ॣ

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཉིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་ །

བྱད་པར་ མེད་པ་ སྒར་ བཞིད་པ་ །

གལ་དེ་ སྒར་ཡང་ རབ་བསྒྲགས་པ་ །

དེ་ ནི་ རོན་ གཞིག་པར་ འདོད་ དཔེར ༥ ॥ १३॥

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्विषः ।

अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिल्लवः ॥१३६॥

शेद'प' शेद'पुद' सु'खे'कमस ।

दे'यी' लक'सुदे' दे'वे'उक ।

कु'दे'क' श्लो'ग'द'ल'क'प'के ।

वे'खे' ल'ल्ले'ग'स' दे'द'ग'गे ॥ १३६

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।

न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

हे'स'सु'प'के' खे'ग'स' पु'द'प' ल'स ।

ग'ल'दे' ल'ग'ल'के'ग' वे'दे' दे'दे' क' ।

ल'द' वे'दे' ल'खे'ग'स' ल्ले'क'ले'दे' ।

दे'के' सु'क'दु' दे'ग'स'प'यी' ॥ १३७

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।

हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས།
 བྱད་མེད་ མཆོག་ རེ་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་ཀུན་མཛེས་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྐྱོགས་ས་ བཅོམ་པར་གྱུར། ॥ 232

निष्कर्णयार्थम्प्रयुक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवासौ ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

ཇེས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱར་བའི།
 ཆོག་ནམས་ཉིད་ཀྱིས་ གཤམ་དེ་ན།
 བྲེ་ཆོས་ སྐྱེད་པར་བྱེད་ ཅ་ འདི།
 བྲེ་ཆོས་ཙན་ ཞེས་ རབ་དུ་བཤད། ॥ 236

मनोरथप्रियालोकरसलोलक्षणे सखि ।
 आराद्रृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ རྒྱལ་འ་བ་ ལྷ་བ་ ཡི།
 རེ་ལ་ མིག་གཡོ་ སྐྱོགས་ས་མོ་དང་།

ཀྱང་ན་ འདྲག་པའི་ མ་མ་ འདིས།

འདི་འདྲ་ བཟླ་བར་ བཟོད་མ་ཡིན། ॥ ༡༠༠

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।

स्यादलंकार एवासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१॥

འདི་འདྲ་ བེ་ཚོས་ སྤྲད་ ཉིད་དུ།

གཤམ་ཏི་ འགའ་ཞིག་ རབ་སྤྲད་ན།

འདི་ནི་ ཀྱན་ ཉིད་དུ་ འགྱུར་གྱི།

དེ་ལ་ རྩོན་མེད་ འདི་ལྟ་སྟེ། ॥ ༡༠༡

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।

कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལྷས་སྦྱིས་ མིན་པའི་ གཏུང་བ་ཡི།

ཟིལ་གྱིས་ མཁན་ཅིང་ ཏུས་ རུབ་མེས།

ཟོས་པའི་ མ་སྤྲད་མ་ དེ་མཐོང་།

ཁྱོད་ལ་ བདག་གི་ དེ་བས་ ཅི། ॥ ༡༠༢

स्थितिनिर्माणसंहारहेतवो जगतामजाः ।
शम्भुनारायणाभोजयोनयः पालयन्तु वः ॥१४५॥

འགོ་བ་ནམས་ཀྱི་གནས་པ་ ནང་ ।

སྤྱལ་དང་ འཛིག་གྱུ་ མ་སྦྱིས་པ་ ।

བདེ་འབྱུང་ སྤོང་མེད་ རྒྱ་སྦྱིས་ཀྱི་ ।

སྦྱི་གནས་ཅན་ གྱིས་ ཁྱིའི་ནམས་ སྤངས་ ॥ ༡༧༥

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।

क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ཇིས་པར་ཤེས་པའི་ གྱུར་ ।

གང་ཡང་ གལ་ཏེ་ འབད་ བྱས་ན་ ।

རིམ་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྦྱོན་མེན་པར་ ।

མཁས་པ་ནམས་ ཞི་ སྦྱ་སྦྱེ་ དཔེར་ ॥ ༡༧༦

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।

आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

གཉེན་གཏོང་པ་ ནང་ བྱས་གཏོང་དང་ ।

ཕུལ་གཏོང་ ཞིས་པ་ གསུམ་པོ་ ལ་ ।

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉེན་མོངས་ རིང་ ।
བར་མ་ སྐད་ཅིག་ གཏུང་བ་འོ ॥ ༡༠༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཚོན་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལམ་ མ་མཚོན་ ।
ཆོག་སྒྲོང་ མཚོག་གིས་ མི་འདོད་པ་ ।
སྒྲ་ཉམས་ ཡིན་དེ་ མཚོག་ནམས་ དག་ ।
འདོད་པ་ ཉིད་ནི་ སྒྲོན་ མ་ཡིན་ ॥ ༡༠༨

[49a] अवते भवते बाहुर्महीमण्णवशक्करी ।
महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ གྱ་མཚོའི་ སྒྲ་རགས་ཅན་ ।
གྱལ་ཆེན་ ཁྱོད་ལ་ དབྱང་པ་ སྒྲ་ ।
ཞེས་པ་ ཤེས་འདོད་ མེད་པས་ན་ ।
ཆོག་ འདི་ལ་ བློ་ ཉམས་ ཡོད་མིན་ ॥ ༡༠༩

दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
कुरुते ललिताधूतप्रवालांकुरुशोभिन् ॥१५०॥

ह्रीं यीं दै'दासा' छे'र' व'रु'र' दा'दे ।
ह्रीं'गी'सा' ह्रीं'र'दे'का'र' व'रु'र' दे ।
दै'दा'सा' ह्रीं'र' दा' छे'र' यी ।
ह्रीं'दा' स'दे'सा' र'दा' ह्रीं'र' दा' छे'र' ॥ १५० ॥

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालसचेतसां ।
अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

छे'सा' सै'गी'सा' स'दे'सा' र'दा' ह्रीं'र' दे ।
ह्रीं'दा' स'दे'सा' र'दा' ह्रीं'र' दे ।
ह्रीं'दा' स'दे'सा' र'दा' ह्रीं'र' दे ।
ह्रीं'दा' स'दे'सा' र'दा' ह्रीं'र' दे ॥ १५१ ॥

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

ཚོགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་བའི་གནས།
 ཚོག་གི་གཅོད་མཛམས་ ངལ་བསོ་རིག།
 དེ་ཉམས་ གཅོད་མཛམས་ ཉམས་བ་ ཟྱེ།
 ཉན་བ་ དགའ་མེན་ རྒྱུད་དེ་ དཔེར ༥ ༡༥༩

स्त्रीणां संगीतविधिमयमादित्यवशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यक्लिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वक्ष्यामुर्वी वहति नृप इत्यस्ति चौष प्रयोगः ॥१५३॥

བུད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བཟོད་བའི་ཚོག་ རོ་ཉམས་
 མེད་བ་འདིར།
 མཚོག་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་དབང་ ཉི་མའི་རིགས་
 འདིས་ ལྷ་བྱེད་ ལ་སོགས་ རྒྱུན།
 བུ་དང་ བུ་མེན་ མ་ཚང་མེད་ལ་ བྱང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
 ལྷ་བྱེད་ཅིང་།
 མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གྱུར་ ས་འཛིན་
 ཅེས་བ་ དེ་ལྷར་ རྒྱུར་བ་ཡིད ༥ ༡༥༩

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

दे०ङ्ग० कौ०अ०३० श्रु०स०३० ।
श्रु०अ० कौ०३०३० दे०स० ।
दे०स०३० अ०अ०अ०अ० अ०अ०अ० अ०अ० ।
कौ०३० अ०अ० अ०अ० अ०अ० ॥ १५० =

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुज्यते ।
ध्वजिनी तस्य राज्ञः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५५॥

दे०ङ्ग० अ० अ० अ० अ० ।
श्रु०अ०अ०अ० अ०अ० अ०अ०अ० ।
श्रु०अ० दे०अ० श्रु०अ०अ०अ० ।
दे०अ०अ० अ०अ० अ०अ० अ०अ० ॥ १५५ =

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्विघ्नवृत्तं स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५६॥

བང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང་ ।
 ལྷི་ཡང་ ཇི་ལྷ་བཞིན་ མི་གནས་ ।
 དེ་ནི་ སྒྲེབ་སྒྲོར་ ཉམས་པ་ ལྷེ་ ।
 སྒྲོན་ འདི་ ཡིན་དུ་ སྒྲན་པའོ ॥ १४६

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।
 सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ལྷི་བའི་འོད་ཟེར་ བསྐལ་བས་ ।
 རིག་ཅེས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ ।
 ས་ཏ་ཀུ་རའི་ལོ་འདབ་ བསར་བ་རྣམས་ ।
 ལྷམ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་པའོ ॥ १४७

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगेक्षणास्वित्ययथागुरुत्वं ।
 मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगेक्षणास्वित्ययथालघुत्वं ॥१५८॥

འདོད་པས་ མཐའ་རྫོན་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ་ ।
 རྣམ་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན་ ।

མཛེས་བའི་མིག་ཅན་ རྟག་ལ་ ཟློས་བྱེད་ཀྱི །

མདའ་ལྷན་ ལྷང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན ། 242

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।

तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྐྱས་བ་ བཛྲོད་བར་ མི་འདོད་ཅེས །

ཆོག་ལ་ མཆོམས་སྟོར་མེད་བ་ གང་ །

ཡ་ཟློས་ ལ་སོགས་ སྐྱ་མེད་བ །

དེ་ནི་ མཆོམས་སྟོར་བྲལ་ ཞེས་ བསྟན ། 243

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।

लुप्तमुद्ग्रेदि [50a]धर्माम्भो नमस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ རང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ །

ལྷང་ནི་ དལ་བྱ་ སྐྱ་བ་ ཡིས །

བྱད་མེད་ འགམ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ །

རྒྱལ་གྱི་ཆུ་རྒྱས་ མེལ་བར་བྱེད ། 250

[मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिममृतौ प्रिये ।]
आसु रात्रिष्विति प्राज्ञैरज्ञातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

. ।

. ।

सककसं १६५ उत १६५ ।

सप्तसप्त १६५ उत १६५ ॥ १६२

देशोऽद्विवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।
नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

सप्तसप्त १६५ उत १६५ ।

सप्त सप्त १६५ उत १६५ ।

१६५ उत १६५ ।

१६५ उत १६५ ॥ १६३

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिर्लोकसंज्ञिता ।
हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འབྱུང་པོ་ ལྷ་ དང་ མི་ལྷ་བའི །
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནོ །
 རིགས་པ་ གཏན་ཆོགས་ རིག་ བཏག་ཉིད །
 ཐོས་ བཅས་ གསུངས་པ་ ལུང་ ཉིད་དེ ༥ ༡༩༩

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ གྲགས་པ་ བཞིན །
 མིན་པར་ གཤམ་ཏི་ རབ་ཞུགས་ན །
 ལྷན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས །
 འདི་ནི་ ལུང་ མོགས་ འགལ་ཞེས་ བཞིན ༥ ༡༩༩

कर्पूरपादपास्पशीं सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्राथमतंगजा ॥१६५॥

ག་ལུར་ ཀླང་འབྱུང་ལ་ རིག་བའི །
 མ་ལ་ལ་ ལྷང་ ཇི་བཟང་ཅན །

ཀ་ལི་གྲོ་ ཡི་ རྒྱལ་སྤྱོད་པའི།

སྤྱང་པོ་ རྒྱལ་ནི་ རི་རྒྱལ་ས་ མང་ ॥ १२१

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।

इति देशविरोधिन्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཙོ་ལ་ཀུ་པོ་རི་ རི་རྒྱལ་སའི།

ཨ་ཀ་རུ་ རི་རྒྱལ་པོ་ལྟོ།

ཞེས་པ་ ཡུལ་ རང་ རྒྱལ་པ་ཡི།

ཆོག་གི་ རྒྱལ་པ་ རི་རྒྱལ་ ལྟོ། ॥ १२२

पद्मिनी नक्तमुन्निद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।

मधुघट्फुल्लनिष्ठुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥१६७॥

པདྨ་ཅན་ནི་ མཚན་མོ་ ལྷུས།

ཉིན་པར་ ཀུ་སྤྱད་ལྷན་པ་ ལས་ལ།

དཔྱིད་ནི་ རི་ཙུ་ལ་ རབ་ལྷུས།

སྤྱོད་ཀ་ རྒྱལ་ནི་ སྤྱིན་ ལྷིས་ ལཱི་བས། ॥ १२३

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

८८'प०' ॥ १६८' ॥ १६८' ॥

१६८' १६८' १६८' १६८' ॥

१६८' १६८' १६८' १६८' ॥

१६८' १६८' १६८' १६८' ॥ १६८' ॥

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

१६९' १६९' १६९' १६९' ॥

१६९' १६९' १६९' १६९' ॥

१६९' १६९' १६९' १६९' ॥

१६९' १६९' १६९' १६९' ॥ १६९' ॥

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूर्णसप्तस्वरः सोऽयं भिन्नमार्गः प्रवर्त्तते ॥१७०॥

དབའ་ དང་ གླིང་པའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི།
 གནས་ཅན་ ཁྱི་ དང་ ཡ་མཚན་ནོ།
 དབྱངས་ བདུན་ རྫོགས་པ་ འདི་དག་ནི།
 བ་དང་ ལམ་དུ་ རབ་དུ་འཇུག ॥ ༡༧༠

इत्थं कलाचतुःपद्यौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྐྱུ་རྩལ་དུག་ཅུ་བཞིར།
 འགལ་བ་ ལམས་པར་ རྫོགས་པར་བྱ།
 སྐྱུ་རྩལ་ ཡིངས་སུ་བཅད་པ་ལས།
 དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྱུར ॥ ༡༧༡

आधूनकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोयमेरण्डो निःसारः खदिद्रुमः ॥१७२॥

སྤང་བོ་དུག་ནི་ རལ་བ་ གཡོ།
 དེ་ཡི་རྩ་ནི་ རོ་བ་ ཡིན།

ཨོ་རྩ་འདི་ ལྷིང་པོ་ ལྷི་ །

སོང་ལྷིང་ ལྷིན་པ་ ལྷིང་པོ་མེད ། ༡༧༤

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्शयते ॥१७३॥

ཅེས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ་ །

ཉིད་ དང་ འགལ་པ་ ཀྱན་གྱིས་སྦྱང་ །

རིགས་པ་ ཞིས་བྱ་ གཏན་ཆོགས་ཀྱི་ །

རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་བར་བྱ་ ། ༡༧༥

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपि चित् ।

तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་བར་ནི་ །

གསུངས་པ་ བདེན་མེད་ དེ་ལྟ་ནའང་ །

ཅ་ཀོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ་ །

བདག་གི་ ལྷིང་ལ་ ད་དུང་ གནས་ ། ༡༧༦

कापिलैरसदुद्धतिः [51a] स्थान एवोपवर्ण्यते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिर्दृष्टवाः ॥१७५॥

सोऽऽ'व' कस' स' क' क' क' ।
सु' व' क' क' क' क' क' क' ।
सो' स' क' क' क' क' क' क' ।
सो' क' क' क' क' क' क' क' ॥ १७५ ॥

गतिर्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

सो' क' क' क' क' क' क' क' ।
सु' क' क' क' क' क' क' क' ।
सो' क' क' क' क' क' क' क' ।
सु' क' क' क' क' क' क' क' ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नेयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमहिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥

མི་ནི་ བཞག་པ་ མ་ཡིན་ ཡང་།
 སྤྱུ་སྤྱུས་ སྤམ་ཟེ་ མ་ཉམས་པའི་།
 སྤྱོད་པས་ བརྒྱན་པ་ འདི་དག་ནི་།
 བོ་ཤུ་ན་རི་ མཆོད་ སྤྱིན་བྱེད་ ॥ ११११

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ ཆོག་ མ་སྤམ་ ཀྱང་།
 སྤམ་དག་ལས་ རིག་བྱེད་ བཟུགས་།
 རང་བཞིན་ དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི་།
 འདྲ་བྱེད་ བཞག་པ་ ལྷོས་པ་མེད་ ॥ १११२

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवीथिं विग्राहते ॥१७९॥

སྤྱོན་ནི་ མཐའ་དག་འདི་ལ་ ཡང་།
 དེས་ འགའ་ སྤྱོན་པ་མཁན་མཁས་པས་།

སྒྲིན་གྱི་ གྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས
ཡོན་དན་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛོན་ ॥ ༡༧༩

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जज्ञिरे ।
आर्द्रांशुकप्रवालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

རྒྱལ་པོ་ དེ་ཡི་ མཐུ་ཡིས་ རྟི་ ।
དེ་ཡི་ སྒྲིན་ཚལ་ ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ ।
སྒྲིན་པ་ ཡལ་འདབ་ གོས་སྐྱུམ་ དང་ ।
ལྷན་པ་དག་གི་ གནས་སུ་གྱུར་ ॥ ༡༨༠

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

རྒྱལ་པོ་ འཛིག་པ་ གསལ་བྱེད་པ་ ।
དག་པོ་ཡི་ རི་ རྒྱང་དག་གྱི་ ।
འདབ་ བརྟན་ལས་ འཁྲུངས་ སྒྲིན་བྱེད་ཅིང་ ।
ཀ་དཔྱལ་ཡི་ རྒྱལ་དང་ འགྲོགས་ ॥ ༡༨༡

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]बधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्भेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

सिंहास'गुण' र'व'सु'ल' सु'ग'स'यै ।
सु'व' सु'द'सि'द' ल'स' स'द'द' सु' ।
सु'व'स' स'स'स'स'स' स'द'द'स'स' ।
स'ग'स'स'स'स' स' स' स'स'स'स' ॥ १८३ ॥

ऐन्दवादचिर्बषः कामी शिशिरं हृष्यवाहनं ।
अबलाविरहद्वेष्टविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

स'स'स' स'द'स'स' ल'स' स'स'स' ।
स'स'स'स' स'द'स'स' स'द'द'स'स' ।
सु'द'सि'द'स'स'स' स'स'स'स'गुण' ।
स'स'स'स'स' स'द'स'स' स'स'स'स' ॥ १८४ ॥

प्रमेथोप्यप्रमेथोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूत्तये ॥१८४॥

गवयःश्वः अरः अरः गवयःश्वः ।

मःश्वःअरः अरः मःश्वः श्वः ।

गतेनःश्वःअरः अरः गतेनःश्वः श्वः ।

श्वःश्वःश्वः श्वःश्वः श्वःश्वः श्वःश्वः ॥ १८५ ॥

पञ्चानां पाण्डुपुत्रानां पत्नी पाञ्चालकन्यकाः ।

स्वर्गनामप्रणोक्त्यास्मीदृशो हि विधिरीदृशः ॥ १८६ ॥

श्वःश्वःश्वःश्वः श्वः श्वः ।

मःश्वःश्वःश्वः श्वःश्वः ।

श्वःश्वःश्वःश्वः श्वःश्वःश्वः ।

श्वःश्वःश्वःश्वः श्वःश्वःश्वः ॥ १८७ ॥

गङ्गाधामलक्रियाञ्जना मार्गाः सुकरकुण्डराः ।

गुणा दोगाञ्च काव्यानामिति संक्षिप्य वर्णिताः ॥ १८८ ॥

श्वःश्वःश्वःश्वः श्वःश्वःश्वः ।

श्वःश्वःश्वःश्वः श्वःश्वःश्वः ।

སྒྲིན་ངག་རྣམས་ཀྱི་ ཡོན་པར་ སྒྲིན་ ।

དེ་ལྟར་ མདོར་བརྒྱས་ རབ་དུ་བསྒྲིན་ ॥ १८३

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरक्षणाभि

ध्न्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

སྒྲུབ་བྱེད་ བསྒྲིན་བའི་ལས་འདིས་ སྒྲིན་ དང་ ཡོན་པར་ངག་ ।

རབ་དུ་རྒྱལ་ས་བའི་རྫོང་ན་ སྒྲུབ་བཟང་དབང་གྲུང་བའི་ ।

ཆོག་ དང་ མདོར་བར་འགྲོགས་བྱས་ རབ་སྒྲིག་ས་ དག་དང་ ।

ལང་ཆོ་ཅན་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་པར་འགྲུང་ ॥ १८४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞེས་པ་སྒྲོབ་དཔོན་དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྒྲིན་ངག་གི་རྒྱན་ལས་

བྱ་དགའི་རྣམ་པར་བཅད་པ་སྟེ་ ལེའུ་ གསུམ་པ་ རྫོགས་ས་ ॥

CORRIGENDA

Chap. I. 17^b *वरुनैः for व*रुनैः ; 27° ལ་ཤྲུ་ས་ཁི for ལ་ཤྲུ་ས་ཁ ; 39^a साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85^a विद्यते for *ལྷོར ; 86^b भवाद्दश for भवादश ; 98^b स्तनन्यो for स्तनन्यो.

Chap. II. 14° རྩེ for རྩེ ; 37^b ར་ཁོང for ར་ཁོང ; 40° स्पर्श for स्पर्श ; 45^a मौस for मौस ; 66^b नखाचिषः for नखाचिषः ; 77^a इदमार्द्र for इद-
माद्र ; 9^a नतिते for नतिते ; 86^a राजहंसो for राजहंसा ; 86^b वक्त्रा for वक्त्रा ; 86^b ལྷོར for ལྷོར ; 91^a निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ; 125^a རྩེ་རྩེ for རྩེ་རྩེ ; 142^b ར་ལ་ཏི for ར་ལ་ཏ ; 182^b ར་ལ་སྤྱོད for ར་ལ་སྤྱོད ; 206^a सोयं for सायं ; 207^a རྩེ for རྩེ ; 233^b རྩེ་རྩེ for རྩེ་རྩེ ; 234^a *दृष्टं for दृष्टं ; 237^a विकार्ये for विकार्य ; 279^b རྩེ་ལ for རྩེ་ལ ; 282^a रमवत्त्व for रसत्त्व ; 287^a རྩེ་ལ for རྩེ་ལ ; 306^b दक्षिता for दक्षिता ; 312^a རྩེ་རྩེ་ལ for རྩེ་རྩེ་ལ ; 313^b ར་ལ་སྤྱོད་ལ་སྤྱོད for ར་ལ་སྤྱོད་ལ་སྤྱོད.

Chap. III. 17^a རྩེ for རྩེ ; 19° वरुण्यन्ते for वरुण्यन्ते ; 13^a स्पृशेदशां for स्पृशेदशां ; 31^a རྩེ for རྩེ ; 39° རྩེ for རྩེ ; 54^a वर्ज्यः for वर्ज्यः ; 63^b ར་ལ་ཏ for ར་ལ་ཏ ; 69^a རྩེ for རྩེ ; 80° རྩེ་རྩེ for རྩེ་རྩེ ; 83^a ར་ལ་ཏ for ར་ལ་ཏ ; 158° वाणा for वाणा ; 184^a विश्वमूर्त्तये for विश्वमूर्त्तये ; 185^a पारङ्गुपुत्राणां for पारङ्गुपुत्राणां.